

भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संशोधित।

श्री-मुहम्मदबोध और काफिरबोध।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

सत्य नाम ।



श्री कवीर साहिव ।



अथ श्रीबोधसागरे

नवमस्तरंगः ।

मुहम्मद बोध ।

धर्मदास वचन ।

साखी-धर्मदास विन्ती करे, कृपा करहु गुरुदेव ॥
नबी मुहुम्मद जस भये, सोसब कहिये भेव ॥

सत्यकबीर वचन-चौपाई ।

धर्मदास पूछ्यो भल बानी । सो सब कथा कहूँ सहिदानी ॥
जेहि औसर मुहम्मद औतारा । धरम आपनो जगत पसारा ॥
मारि काटि निज धर्म चलायो । जाते जीव बहुत दुख पायो ॥
परम पुरुष दिल दाया आयी । मुक्तामणि कहँ कह्यो बुझायी ॥
मुक्तामणितुम संसार सिधाओ । काल कष्टते जीव बचाओ ॥
विगसी कमल उठि असबानी । मुक्तामनि सुनिओ तुम ज्ञानी ॥
भवमें जाओ जीवके काजा । जीवन कष्ट देत यमराजा ॥
मुक्तामणि चले शीस नवायी । तेहीक्षण भव प्रकटे आयी ॥
साखी-दोसौयुग कालि युग गयो, तब आयो संसार ॥
बहुतक जीव चितायऊ, कोइ कोइ हंस हमार ॥

चौपाई ।

ऐसे बहुत दिन गयो सिरायी । सिंघल द्वीपमें पहुंच्यो जायी ॥
तब हम मिले मुहम्मद पीरा । जिन सब हुकुम कीन नगीरा ॥

तहाँ जाय हम कीन सलामा । मात रहे अलमस्त इलामा ॥
नजर दिदार जो कीन हमारी । मत्त गयन्द केर असवारी ॥
कहु भाई तुम कहँ भरमाये । कहां ते आय कहा को जाये ॥
नाहक को नाहिं साहब राजी । पढ़ो कुरान पूछौ तुम काजी ॥
हुए हैरान नजर नाहिं आये । किया नसीहत अल्ला फरमाये ॥

मुहम्मद वचन ।

साखी—कहाँ ते आये पीर तुम , क्यों कर किया पयान ॥
कौन शक्सका हुक्म है , किसका है फरमान ॥

रमैनी ।

पीर मुहम्मद सखुनजो खोला । अल्लाःहमसे परदे बोला ॥
हम अहदी अल्लाः फरमाना । वतन लाहूत[१] मोर अस्थाना ॥
उन भेजे रूह बारह हजारा । उम्मतके हम हैं सरदारा ॥
तिस कारणजो हम चलि आये । सोवत थे सब जीव जगाये ॥
जीव ख्वाबमें परा भुलाये । तिस कारन फरमान ले आये ॥
तुम बूझो सो कौन हो भाई । अपनो ईस्म कहो समुझाई ॥
साखी—दूर की बातें जो करौ , करते रोजः नमाज ॥
सो पहुँचे लाहूतको, खोवे कुल की लाज ॥

कवीर वचन ।

कहैं कवीर सुनो हो पीरा । तुम लाहूत करो तागीरा ॥
तुम भूले सो मरम न पाया । दे फरमान तुम्हें भरमाया ॥
फिर फिर आवे फिर फिर जाई । बद अमली किसने फरमाई ॥
लाहूत मुकाम[३] बीचको भाई । बिन तहकीक असल ठहराई ॥
तुम ऐसे उनके बहुतेरे । लै फरमान जाव तुम डेरे ॥

---

१ नाम । २ इसका वर्णन ग्रन्थ सारमें देखो । ३ स्थान । ४ जाच ।

साखी–खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गूना गूँन ॥
खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचून ॥
बेचूँने जग राँचिया, साईं नूर निनार ॥
आखिर केरे वक्त में, किसकी करो दीदार ॥

रमैनी।

तुम लाहूत रचे हो भाई। अगम गम्य तुम कैसे पाई ॥
यह तो एक आदि विसरामा। आगे पाँच आदि निज धामा॥
तहँ ते हम फरमाँ ले आये। सब बदफेलको अमल मिटाये ॥
उन फरमान जो हम को दीना। तिनका नाम बेचून तुम लीना॥
साखी–साहब का घर दूर है, जासु असल फरमान ॥
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान ॥

मुहम्मद वचन–रमैनी।

कहैं मुहम्मद सुनो कबीरा। तुम कैसे पायो अस्थीरा ॥
लाहूत मेटि जो अगम बतायो। खुद खुदाय हमहूँ नहिं पायो ॥
हम जानैं खुद आपै आही। तुम कुदरत कर थापो ताही॥
हम तो अर्श हाजिरी आये। तुम तो कुदरतसे ठहराये ॥
तुम्हरे कहे भरम मोहि आयो। खुद खुदाय तुम दूर बतायो ॥
आप सुनाओ खुदकी बानी। आलम दुनियाँ कहो बखानी ॥
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना।सो तो तुम कुदरत कर ठाना ॥
हलकी मुलकी बासरी भाई। तीन हुक्म अल्ला फरमाई ॥
साखी–साईं मुरशिद पीर है, साँचा जिस फरमान ॥
हलकी मुलकी बासरी, तीन हुकुम कर मान ॥

कबीर वचन–रमैनी।

सुनो मुहम्मद कहूं खुदवाणी। खुद खोदायकी कहूँ निशानी ॥
कादिर थे तब कुदरत नाहीं। कुदरत थी कादिरके माहीं ॥

ख्वार सभीको चीन्हो भाई । असल रूहको देउँ बताई ॥
असल रूहकी दीदार जो पावे । पावे निज मुसलमान कहावे ॥
हो आवाज जहां परदः पोशी । है वह मर्द कि है वह जोशी ॥
जब लग तख्त नजर नाहिं आवे। दिल विश्वास कौन विधि पावे॥
जब खुद की खबर न पावे । तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे ॥
हाल माशूक नजर जो आवै । एक निगाह दीदार जो पावै ॥
चार वेद अक्षर निरमाई । चार अंश ताके सुत भाई ॥
एकअंश चौभाग जो कीन्हा । ताते एक गुप्त कर लीना ॥
एक अंशते गुप्त छिपाई । तीन अंश संसार पठाई ॥
अंशहि अंश भेद नहिं दीना । यह अचरज अक्षरने कीना ॥
जो तुम कहा हमारा मानो । तो हम तुमते निर्णय ठानो ॥
साखी–यह प्रपञ्च बेचूनका, तुमते कहा न भेव ॥
आप सो रत होइ बैठा, तुम चार करत हो सेव ॥

मुहम्मद वचन ।

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी । इल्म लदुन्नी कहु बुनियादी ॥
जबनहिं पिण्ड ब्रह्माण्ड अस्थूला । तब ना हतो सृष्टिको मूला ॥
तादनकी कहिय उतपानी । आदि अन्त और मध्य निशानी
साखी–बुजरुग हकीकत सब कहो, किस विधि भया प्रकाश ॥
जब हम जाने आदिको, तो हमहूँ बांधे आश ॥

कबीर वचन ।

सुनो मुहम्मद सांचे पीरा । समरथ हुकुम खुद आदि कबीरा
अब हम कहें सुनो चितलायी । आदि अन्तक सब कहों बुझायी॥
प्रथमै समरथ आदि अकेला । उनके संग हता नहिं चेला ॥
साखी–वाहिद थे तब आपमें, सकल हतो तेहि माहँ ॥
ज्यौंतरुवर के बीजमें, पुष्प पातफल छाहँ ॥

चौपाई।

आठों अंस त्रिदेव समेता। उतपति जगतकीन प्रभु एता॥
तीनो दीन त्रैलोकको राजू। तिन बसपरि जिव भये अकाजू॥
तिन पुनि एक जुक्ति चितदीना। प्रथम ज्ञान चार जो कीना॥
प्रथम क्षुद्रजो ज्ञान उपजाई। ध्यान अंशको तौन पठाई॥
दूसर ज्ञान वाचा है भाई। राज अंशको तौन पठाई॥
तीसर ज्ञान जो अनुभव कीना। धर्म राय को लेखा दीना॥
चौथे ब्रह्मज्ञान उपजाई। माया अंश सो ध्यान लगाई॥
पंचवा ज्ञान सहजकी डोरी। सब जीवनकी बंदीछोरी॥
जहाँसे चार ज्ञानजो आवा। सोई कला निरंजन पावा॥
निरंजन भये राज अधिकारी। तिनके चार अंश सेवकारी॥
चार ज्ञान ते चारो बेदा। तिनते चारो भये कतेबा॥
मूल कुरान वेद की बानी। सोकुरान तुम जगमें आनी॥
हक्क कुरान जो तुमको दीना। हद हुक्म तुम आपन कीना॥
चार कतेब के चारो अंशा। तिनके कहो भिन्न भिन बंशा॥
वेद पढावत ब्रह्मा आये। ऋग वेद को नाम लखाये॥
दूसर यजुरवेदकी बानी। राजनीति सो कीन बखानी॥
तीसर सामवेदकी बानी। यज्ञ होम तिन कीन बखानी॥
चौथ अथर्वन गुप्त छपाये। तौन हुक्म तुम जगमें आये॥
ऐकै मूल कुरानमें चारी। चार बीर तुम हो सरदारी॥
जब्बूर किताब दाऊदने पाई। नासूत मोकाम रहै ठहराई॥
तौरेत किताब मूसाने पाई। मलकूत मोकाम रहै ठहराई॥
इंजील किताब ईसाने पाई। जबरूत मोकाममें रहे ठहराई॥
फुरकानकिताब नबी तुम पाई। लाँहूतमोकाम रहे लौलाई॥
कुरान वेहदको मरम न पावै। बिनदेखे विश्वास क्या आवै॥

चार मोकाम किताब है चारी। पंचये नाम अचिंत सँवारी ॥
तहँते आइ रूह बारहहजारी। तहाँअचिंत गुप्त व्योहारी ॥
साखी–पीर औलिया थाकिया, यह सब उरले तीर ॥
समरथका घर दूरहै, तिनको खोजो पीर ॥

❀ मारफत।

चौपाई।

औवलमोकाम नासूत ठेकाना।दुजा मोकाम मलकूतजो जाना॥
सेउम मोकाम जबरूत ठेकाना। चहारुममोकामलाहूतजोजाना॥
पंचयें मोकाम हाहूत अस्थाना। छठे मोकाम सोहं जो माना ॥
हफतुम मोकाम बानी अस्थाना। अठयें मोकाम अंकूरठेकाना ॥
नवयें मुकाम आहूत निशानी । दशयें मोकाम पुरुषरजधानी ॥

बेतुक।

औवल शरीअत् १। तरीकत २। हकीकत् ३ । मारफत् ४।
मरौवत् ५। ध्यान दोरहिअत् ६। जुलफकार चंद्र गेटा ७।
हुकुमसुरतद् ८। देय ना कासो यही अंत् ९। सचपावेसमरथकाय
१०। अंकार ओंकार कलिमा नबी सचुपावै देखा हद्द वैहद्द

मुहम्मद वचन।

तम कब्बीर भेद अधिकाये। खुदसमरथकी खवरि जोल्याये ॥
अब तुम को हम बूझैं अंतू। सो कहिये खुद अहदी संतू ॥
को तुम आहु कहाँते आये। क्यों तुम अपनो वर्ण छिपाये ॥
सात सुरति समरथ निरमाई। यह अस्थान रहो की जाई ॥
येती मारफत कहु दुरवेशा। हम मानैं तुमरो उपदेशा ॥
सात सुरति केहि माहि समाई। जिव बोधे सो कह चलिजाई ॥
समरथ गम तुम साँच कबीरा। समरथ भेद कहो मति धीरा ॥

* इस विषय में लिखे हुये दश मुकामों का वर्णन पुस्तकके अन्तमें देखो।

साखी-मेरे शंका बाढिया, थाके बेद कुरान् ॥
वाहिद कैसे पाइये, समरथको मक्कान् ॥

सत्यकवीर वचन ।

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई । जो खुद आदि अस्थान है भाई॥
जो जो हुकुम समरथ फरमाई । सो सो हुक्म हम आनि चलाई॥
सुर नर मुनिको टेरि सुनाये । तुमको बहुत बार समुझाये ॥
तुमपर मोह अक्षरने डारा । तेहि कारण आये संसारा ॥
सोलह असंख जुग जबै सिराई ।सोलह असंख उतपति मिटिजाई
सात सुरति तब लोकहि जाई । जिव बोधो तेहि माह समाई ॥
सात सुन्य तजि ते अस्थाना । ते सब मिटे होय घमसाना ॥
बेद कते बकि छोडो आशा । वेदकतेव अक्षर प्रकाशा ॥
तीन बार तुम जग में आये । फिर फिर अक्षरने भरमाये ॥
अक्षर चीन्हिके छोडो भाई । तीन अंश अक्षर निरमाई ॥
ब्रह्म कि सृष्टि आपको कीना । जीव सृष्टि तीरथ व्रत दीना ॥
माया सृष्टि ईश्वरी जानो । सबमें आतम एक समानो ॥
साखी-खोजो खुद समरत्थको, जिन किया सब फरमान् ॥
पीर महम्मद तहँ चलो, सोई अमर अस्थान् ॥

मुहम्मदबचन ।

पीर मुहम्मद मुख तब मोरा । कछु नहिं चलै तुमारो जोरा ॥
अक्षर हुक्मको मेटनहारा । चार वेद जिन कीन पसारा ॥

कबीर वचन ।

सुनिये सखुन मुहम्मद पीरा । हम खुद अहदी आदि कबीरा ॥
मेटो अक्षरको बिस्तारा । मेटो निरंजन सकल पसारा ॥
मेटो अंचित्तकी रजधानी । मेटो ब्रह्मा बेद निशानी ॥
चौदह जमको बांधि नचावों । मृत अंधा मगहर लेआवों ॥

धर्मराय ते झगर पसारा । निरंजन बांधि रसातल डारा ॥
बेदकतेबको अमल मिटावों । घर घर सार शब्द फैलावों ॥
समरथ हुक्म चलै सब माही । ब्यापै सत्य असत्य उठिजाही ॥

मुहम्मद वचन ।

पीर मुहम्मद बोले बानी । अगम भेद काहू नहिं जानी ॥
सुना कान नहिं आखिन देखा । बिन देखे को करे बिबेखा ॥
जो नाहिं देखो अपने नैना । कैसे मानो गुरुको बैना ॥
जो तुम खुद अहदी है आये । हुक्म हजूर फरमान लेआये ॥
जौन राहसे तुम चलि आवो । सोई राह मोकहँ बतलावो ॥
हँसनको अस्थान चिन्हावो । समरथको मोहि लोक देखावो॥

साखी–हंसनको अस्थान लखि, तब मानो परमान् ॥
जो समरथको हुक्म है, सो मेरे परवान् ॥

कबीर वचन ।

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई । साहेब तुमको देउँ बताई ॥
चलै सैल को दोनो पीरा । एक मुहम्मद एक कबीरा॥

मोकाम् १ ।

भूमिते छत्तिस सहस ऊँचाई । मानसरोवर तहाँ कहाई ॥
तह नासूत आहि मोकामा । नबी कबीर पहुँच तेहि धामा ॥
तहँ दाऊद पयंबर होई । जब्बूर किताब पढै तहँ सोई ॥
तहाँ सलामालेक सोइ कीना । दस्तावोस उनहु उठि लीना ॥

मोकाम् । २

तहवाँते पुनि कीन पयाना । चौबिस सहस बैकुंठ प्रमाना ॥
तहवाँ पहुंच बैठे ऋषि बासा । देव सबै बैठे तेहि पासा ॥
वह बैकुंठ बिष्णु अस्थाना । मलकूत मोकाम मूसाको जाना
मूसा पैगम्बर पढै किताबा । उसका नाम तौरेत किताबा ॥
सलामालेक तहाँ हम कीना । दस्ताबोस उनहु उठि लीना ॥

मोकाम । ३

बैकुंठ ते आगे लायो डोरी । सुमेरते सुन्य अठारह कोरी ॥
येतो अधर सुन्य अस्थाना । जबरूत मोकाम ईसाको जाना ॥
ईसा पैगम्बर पढै किताबा । उसका नाम इंजील किताबा ॥
सलामालेक तहाँ हम कीना । दस्ता बोस उनहु उठिलीना ॥
तहँवा बैठि विस्वंभर राई । वही पीर तो वही खुदाई
उहँते अधर मून्य है भाई । ताकी शोभा कही न जाई ॥

मोकाम । ४

महाशून्यको लागी डोरी । ग्यारह पालँग तहाँ ते सोरी ॥
लाहूत मोकाम कहावै सोई । जो देखे बहुतै सुख होई ॥
मुस्तफा पैगंबर बैठे तहाँ । फुरकान किताब पढतथे जहाँ ॥
सलामालेक तहाँ हम कीना । दस्ताबोस उनहु उठिलीना ॥
देखतहौ मुहम्मद अस्थाना । तुम बेचून कहो यही ठेकाना ॥
चारो फिरिश्ते सलामालेक कीना । तब हम आगेका पग दीना ॥

मोकाम । ५

तहँते चले अचिंत ठेकाना । एक असंख सुन्य परमाना ॥
हाहूत मोकामको वही ठेकाना । आगे है सोहं बंधाना ॥

मोकाम । ६

तीन असंख शून्य परमानी । बाहुत मोकाम सो कहो बखानी
नवी कवीर चले तेहि आगे । मूल सुरति बैठे अनुरागे ॥

मोकाम । ७

पांच असंख सुन्न विच आही । सात मोकाम कहतहै ताही ॥

मोकाम । ८

इच्छा सुरतिके पहुँचे द्वीपा । चार असंख है लोक समीपा ॥
ताको नाम राहूत मोकामा । नबी कबीर पँहुचे तेहि ठामा ॥

मोकाम । ९

तहँते सहज द्वीप परमाना । दोय असंख तहाँते जाना ॥
ताहि मोकाम नाम आहूता । सोभा ताकी देख बहूता ॥

मोकाम । ०

साखी-पहुँचे जायके लोक जहँ, सन्त असंखदस लाख ॥
सो मोकाम जाहूतका दसम मोकाम यह भाख ॥

चौपाई ।

सलामा लेक तहाँ हमकीना । दस्ताबोस उनहु उठिलीना ॥
तहँते अमरलोकको छोरा । नबी कबीर पहुंच तेहि ठौरा ॥
अमरलोकके हंस सब आये । तिनकी सोभा कही न जाये ॥
भरि भरि अंक मिले तहँ आये । देखि मुहम्मद रहे भुलाये ॥
सब मिलि हंस गये पुनि तहँवा । साहेब तखत पै बैठे जहँवा ॥
जगर मगर छतर उजियारा । आप धनी का कहो बिहारा ॥
असंख भानु पुरुष उजियारा । अमरलोक को कहो विस्तारा ॥
सकल हंस तहँ दरशन पाई । तिनकी सोभा बरनि न जाई ॥
तहँवा जाय बंदगी कीना । नबी भये जो बहुत अधीना ॥

मुहम्दमवचन ।

चूक हमार बकस कर दीजै । जो तुम कहो सोई हम कीजै ॥

पुरुषवचन ।

कहु मुक्तामनि बेगि तुम आये । दूसर कौन सँग ले आये ॥

मुक्तामनिवचन ।

तब हम बचन पुरुषसे कीना । दोउ कर जोर बंदगी कीना ॥
तुम जो राज निरञ्जन दीना । तापर हुकुम अक्षरको कीना ॥
दोऊ अंश दोउ दीन चलाये । तामें सृष्टि पकाडि भुलाये ॥
तामे एक सो हम लै आये । सोतो तुम्हरे कदम दिखाये ॥

नबी मुहम्मद बन्दगी कीना। दर्शन पाय भये लौलीना ॥
तहँते फिरि मृत्यु लोकचलि आये। निजमान कहे पानहु पाये ॥
तुम आपन कौल भरि देहो। पीछे पान जीवको पैहो ॥
साखी–शब्द भरोसे नामके, दिया नबीको पान ॥
तब हम सांचे मानि हैं, जब फिर मिलोगे आन ॥

कबीर वचन–चौपाई।

तुम अपनो फरमान चलाई। खुद को भेद तुम धरो छिपाई ॥
जो यह भेद तुम प्रकट करिहौ। तौ तुम कौल के बाहर परिहौ ॥
चारो कलमा प्रकट भाखो। पचवाँ कलमा गुप्त जो राखो ॥
पचवाँ कलमा इल्म फकीरी। जाके पढे कुफ्र हो दूरी ॥
हम काशी जात हैं भाई। तबलो तुम अपनो कौल बजाई ॥
तुम पर दाया समरथ केरी। पांचों कलमा दिलमें फेरी ॥
साखी–हम काशी को जात हैं, तुम मक्के अस्थान ॥
हम रामानन्द गुरु करें, तुम देओ जगत फरमान ॥
फरमान जगत को दीजिये, उलटी अदल चलाय ॥
तुम कलमा का हुक्मले, निर्भय निशान बजाय ॥

इति श्रीबोधसागरे कबीरधर्मदास सम्वादे मुहम्मद
बोध वर्णनोनाम नवमस्तरंगः।

अथ ग्रन्थसार।

यद्यपि साधारणतः देखनेमें यह ग्रंथ भी मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक मुहम्मदको कबीर साहिबके बोधदेनेका देख पडता है तथापि इसका भी अर्थ आध्यात्मिकहीहै क्यों कि, मुहम्मद साहब के जीवन चारित्र में लिखाहै कि,इनके माता पिता

दोनोही ईश्वर बिमुखमुर्तिपूजकथे उन्ही से उनकी उत्पत्ति हुई थी। इसका आशय यह है कि, प्रकृतिपुरुषजब संसारमुखहोते हैं। तबही अन्तः करण बिशिष्ट होकर चैतन्य जीव॥ नाम धारी होताहै। अर्थात मुहम्मद से आशय है अन्तः करण विशिष्ट चैतन्य अर्थात् जीवसे।

फिर मुहम्मदसाहबके उत्पन्नहोतेहीउनकी माताकी मृत्यु होगयीथी और पिता तो प्रथमही मरचुकाथा इसकारण उनके जन्म लेनेके पश्चात् उनकी फूफूने उनका पोषण पालनकियाथा उसीने अपने गोद में उन्हे लियाथा इसका आशय यह है कि, जब जीव अन्तःकरण विशिष्ट होताहै तब पुरुष प्रकृत्तिका तो अभाव हो जाता है अर्थात् स्वरूप विस्मृति होती है और देहकी प्राप्ति होती है और देहही द्वारा अन्तःकरण वडा होता है ।

आगे चल कर मुहम्मद साहब ने चौदह विवाह कियेहैं, सो जीवका चौदह इन्द्रियों के साथ अहंभाव करना है।

आगे चलकर चालीस वर्षकी अवस्थामें मुहम्मद साहबको पैगम्बरी मिलीहै सो जब यहजीव पाँच ज्ञानेन्द्री, पांच कर्मेन्द्री, पच्चीस प्रकृति और पंचप्राणका विचार करके उससे आपको अलग जानने लगता है तब यह मोक्ष अधिकारी होताहै यही पैगम्बरी मिलनाहै।

पैगम्बरी मिलने पर मुहम्मद साहेबने जिहाद करके काफिरों को मारना आरम्भ कियाथा। और काफिरोंके उत्पात करने पर मक्का छोडकर मदीना को गयेथे। सो जबयह जीवअधिकारी होकर विषयमुख इन्द्रियों को साहिव मुख होनेके लिये उनका निरोध करता है तव इन्द्रियाँ बहुत उत्पात मचाती हैं तब जीव प्रवृत्तिरूप मक्कानगरको छोडकर निवृत्ति रूप मदीनामें जाताहै।

अर्थात् प्रवृत्तिसे उदासीन होकर निवृत्ति को धारण करता है। और आसुरी सम्पत्ति रूप काफिरों को दैवी सम्पत्ति रूप फौज की सहायतासे मारता है।

इससे भी आगे वढकर मुहम्मद साहब मेआराज को जाते हैं। इस मेआराजके विषयमें अनेक मत भेदहैं। जिसका वर्णन स्वामी प्रमानन्दजीने कबीरमन्शूरमें बहुत उत्तर रीतिसे कियाहै पाठकोंके जाननेके लिये उर्दू कबीर मन्शूरसे अनुवाद करके यहां लिखताहूँ। स्वामी प्रमानन्दजीने प्रमाणकेलिये मुसलमानीकिताबोंके अरबी प्रमाण दियेहैं किन्तु उन प्रमाणोंका हिन्दी पाठकों को कुछ उपयोग न होनेसे केवल उनका आशय दिखा दियाहै।

मुहम्मद साहबके हमेआराजका वर्णन।

मुहम्मद साहबके मेआराजके विषयमें मुसलमानोंका भिन्न २ मतहै। जो उनके हदीस और किताबोंसे प्रकटहै।

तारीख मुहम्मदी में लिखाहै कि, जब मुहम्मद साहबको पैगम्बरी करते बारह वर्ष वीत गये अर्थात् उनकी बावनवर्षकी अवस्था हुई तब एक रातको–जिबराईल और मेकाईल जो फिरिस्तों के मुखियों मे सेहैं मुहम्हमद साहब के पास आये और उनका सीना (कलेजा) चीर कर उसमें से सब पाप और बुरे संकल्पों को धोकर शुद्ध कर दिया और जव उनका हृदय (अतःकरण) शुद्ध होगया तब उन्हे एक ऐसे जानवर पर जिसका शिर तो मनुष्योंकाथा और नीचेका धड विच्छी के समान था सवार कराकर खुदाके पास लेगये जबरईल ने तो रिकाब और मेकाईलने उसका बाग पकडा। इस प्रकारसे वह रवाना हुए। चलते २ वे सबसे पहले बैतअकसा अर्थात वडे हैकल अर्थात एक वडे भारी वृतके निकट पहुँचे। वहाँ बहुतसे फिरिश्ते

मुहम्मद साहबको प्रणाम करनेको आये जहाँ वह बुराक बाँधकर जब भीतर गये तब वहाँ सब पैगम्बरोंकी आत्मा को देखा। फिर एक सीढी आकाशसे उतरी अरबी भाषामें जिसे मेआराज कहतेहैं फिर मुहम्मद साहब बुर्राकपर सवार होकर उस सीढी के मार्ग से ऊपर को चढे। जब प्रथम आकाश पर पहुँचे तब वहांका द्वार जिबराईल ने खुलवाया और सब भीतर गये। भीतर पहुंचने पर देखा कि, हजरत आदम बैठे हुए हैं और उनके वाई ओर नरक का द्वार खुला हुआहै और दहिनी ओर स्वर्गका। नरक की ओर देख कर हजरत आदम रोते हैं और स्वर्ग की ओर देखकर हँसते हैं। इस प्रकार से प्रत्येक आकाश पर होते हुए जिबराईल मुहम्मद साहब को जब सदरेह के द्वार पर ले गये तब वहाँसे जिबराईल पीछे हो लिये। आगे चल कर एक सुनहले पर्दे के निकट पहुंच कर जिबराईल ने कहा कि इससे आगे हम नहीं जा सकते आप स्वयम् जाइये। फिर वहां से मुहम्मद साहब ने अकेले सत्तर मंजिल पार किया। सत्तर पर्दे पार होकर बुर्राक भी ठहर गया और वहां से एक पक्षी जिसे ज़फ़ज़फ़ कहते हैं आया और उस पर चढ कर मुहम्मद साहब खुदा के पास गये और वहां उन्हों ने खुदा से बहुत कुछ वार्तालाप किया और अपने धर्मके सब नियम उनको वहांहीसे मिले जिसको लेकर वह लौट कर अपने स्थान पर चले आये। इस स्थान पर लिखा है कि यह सब बातें इतनी जलदी हुई थीं कि, मुहम्मद साहेब के बुर्राक पर सवार होकर जाते समय एक कटोराको धक्का लगा था जो पानी से भरा हुआथा। सो धक्का लगतेही वह टेढा होगयाथा। मुहम्मद साहेब इतनी जल्दी लौटकर आये कि, उस कटोरे का पानी अभीतक गिरने नहीं पायाथा और

उसको उन्होंने आकर सीधा करके शेष पानी को गिरने से बचाया। किन्तु ऊपरोक्तसत्तर पर्दे जिनको मुहम्मद साहबने अकेलेही पार कियाथा उनमें से एक २ की दूरी इतनीथी कि, पाँचसौ वर्ष तक वेग पूर्वक चलने से पूरा होता था। ऐसे सत्तर पर्दोंको मुहम्मद साहब ने पार किया। और इधर लौट कर आने पर क्षण मात्र से अधिक समय नहीं लगा। मुसलमानी धर्मते इसी वृतान्तको मुहम्मद साहबका मेआराज होना कहते हैं।इस विषयमें मुसलमानी धर्मके बडे२पण्डितोंमें बहुत मतभेद हैं। कोई तो कहता है कि, मुहम्मद साहबने स्वप्न देखाथा, कोई कहताहै केवल संकल्प से वहाँ पहुँचे थे, कोई कहता है केवल प्रथम भूमिका (बैतुलअकसा) तक गये थे, कोई कहता है कि, अन्तरदृष्टिमें मुहम्मद साहेब वहाँ पहुँचे,कोई कहताहै केवल जिबराईलको देखा खुदाको नहीं देखा, कोई कहताहै पांच भौतिक शरीर सहितही मुहम्मद साहेब आसमानपर गये और इसी प्रत्यक्षकी दृष्टिसे खुदाको देखा।विस्तार भयसे अधिक मत भेदका लिखना छोडकर यथार्थ आशयकी ओर झुकता हूँ।

पैगम्बरी मिलनेकेबारहवें वर्षके पश्चातमुहम्मद साहबको मेआराजहुआ था उसका आशय है कि, जब मुमुक्षु श्रवण मनन निदिध्यासन द्वार बारह महावाक्यका विचार कर लेताहै तब यह मोक्ष का अधिकारी होता है। और ५२ वर्षसे आशय है ५२ अक्षरसे सो जब यह ५२ अक्षर के वृत से बाहर होता है अर्थात् शब्द जालसे निकलता है तब इस को सच्चे सद्गुरु की शरणकी प्राप्ति होतीहै। जहाँ शुद्ध बुद्धि रूप जिबराईल जो शुद्ध सतोगुण से प्राप्त होती है और शुद्ध संतोष रूप मेंकाईल जो रजोगुण की शुद्धता से मिलताहै इसके साथ

होता है । और तमोगुण की शुद्धता से उत्पन्न हुए शौर्य्य (धीरता) रूप बुराकपर सवार होकर गुरुकी शिक्षा द्वारा यह ज्ञान की भूमिकाओंको पूर्ण करता हुआ यथार्थ पद को प्राप्त होता है । और यथार्थ पदको प्राप्त होकर जीवन मुक्त अवस्था से अन्य जीवों को उपदेश देकर काल जालसे छुडाता है ।

इस मुहम्मद बोध ग्रन्थ के यथार्थ आशय को पारखी आत्मविद् गुरु अधिकार प्रति अनेक रूपकों में समझातेहैं । और इसको आध्यात्मिकही अर्थ से ग्रहण करने के लिये दश मुकामी रेखता काभी प्रमाण है । सो यहां दश मुकामी रेखता लिख देता हूँ ।

दशमुकामी रेखता ।

चला जब लोकको शोक सब त्यागिया हंसको रूप सतगुरु वनायी।भृंग ज्यों कीटको पलटि भृङ्गै किया आप समरङ्ग दै लै उड़ायी।छोड़ि नामूत मलकूतको पहुंचिया विष्णुकी ठाकुरी दीख जायी । इंद्र कुबेर जहाँ रंभको नृत्यहै देव तेंतीस कोटि रहायी ॥ १ ॥ छोंड़ि बैकुंठको हंस आगे चला शुंन्यमें ज्योति जगमग गायी । ज्योति परकाशमें निरखि निस्तत्त्वको आप निर्भय हुआ भय मिटायी । अलख निर्गुण जेहि वेद स्तुतिकरै तीनहूं देव को है पिताई । भगवान तिनके परे श्वेत मूरति धरे भागको आन तिनको रहायी ॥ २ ॥ चार मुक़ाम पर खंड सोरह कहैं अंडको छोर ह्यां ते रहायी । अंडके परे स्थान अचिंत को निरखिया हंस जब उहां जायी । सहस औ द्वादशै रूह हैं सङ्गमें करत कल्लोल अनहद बजायी । तासुके बदनकी कौन महिमा कहौं भासती देह अति नूर छायी ॥ ३ ॥ महल कंचन बने मणिक तामें जड़े बैठ तहँ कलश अखंड छाजै । आचिंतके

परे स्थान सोहंका हंस छत्तीस तहँवां बिराजै। नूरका महल औ नूरकी भूमि है तहां आनंद सो द्वन्द्व भाजै। करत कल्लोल बहु भांतिसे संग यक हंस सोहंगके समाजै॥ ४॥ हंस जब जात षट चक्रको वेधिकै सातमुक्काममें नजर फेरा। सोहंगके परे सुरति इच्छा कही सहसवामन जहँ हंस डेरा। रूपकी राशिते रूप उनको बना नहीं ऊपमा इन्दु जौनिवेरा। सुरतिसे भेटिकै शब्दको टेकि चढ़ि देखि मुक्काम अंकूर केरा॥ ५॥ शून्यके बीचमें बिमल बैकुंठ जहाँ सहज अस्थान है गैब केरा। नवो मुक्काम यह हंस जब पहुंचिया पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा। तहाँसे डोरि मकरतार ज्यों लागिया ताहि चढि हंस गो दै दरेरा॥ भये आनन्दसे फंद सब छोडिया पहुंचिया जहाँ सत्यलोक मेरा॥ ६॥ हंसिनी हंस सब गाय बजायकै साजिकै कलश वहि लेन आये। युगन युग बीछुरे मिले तुम आइकै प्रेम करि अङ्गसो अँग लाये। पुरुषने दर्श जब दीन्हिया हंसको तपनि बहु जनमकी तब नशाये। पलटिकै रूप जब एकसे कीन्हिया मनहुं तब भानु षोडश उगाये॥ ७॥ पुहुपके द्वीप पीयूष भोजन करै शब्दकी देह जब हंस पायी पुहुपके सेहरा हंस औ हंसिनी सच्चिदानन्द शिर छत्रछायी। दिपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्दको घमंड लायी। लगे जहाँ बरषने गरज घनघोरिकै उठत तहँ शब्द धुनि अति सोहायी॥८॥ सुनै सोइ हंस तहँ यूत्थके यूत्थ ह्वै एकही नूर यक रङ्ग रागै। करत बिहार मन भामिनी मुक्तिमेंकर्म औभर्म सब दूरि भागै। रङ्क औ भूप कोइ परखि आवै नहीं करत कल्लोल बहु भाँति पागे काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब छाँड़ि पाखंड सत शब्द लागे॥ ९॥ पुरुषके वदनकी कौन महिमा कहौं जगतमें ऊपमांय कछु नाहिं पायी। चन्द्र औ सूर गण ज्योति लागै

नहीं एकही नक्ख परकाश भाई । पान परवान जिन बंशका पाइया पहुंचिया पुरुषके लोक जायी । कहैं कब्बीर यहि भांति सो पाइहौ सत्यकी राह सो प्रकट गायी ॥ १० ॥

देह नासूत स्वरे मलकूत और जीव जबरूत को रूह बखानै ॥
अरबी में लाहूत कहै जेहि निराकार मानि के मंजिल्ल ठानै ॥
आगे हाहूत लाहूत है बाहूत खुद बाविन्द जाहूत जानै ॥
सोई श्री राम पन्नाह सबै जग नाहि पन्नाह यह अता गानै ॥

इसप्रकारसे सत्यके खोजियोंको तो ऐसे ग्रन्थोंका अध्यात्मिक अर्थही ग्रहण करनेयोग्य है । और स्थूल अर्थतो स्थूल बुद्धिवाले पक्षपातियोंके लियेही छोड देना उचित है ।

इति ।



पृष्ट (६८२)की टिप्पणीमें सूचित किये एहु दश मुकामों का वर्णन।

प्रथम नासूत का वर्णन।

नासूत मुकाम सुमेरु पर्वतके उत्तर ओर पृथ्वी से छत्तीस सहस्र योजन ऊँचाहै और यहांपर दयाअंश रहताहै और यह मायाका स्थानहै—महामाया इस जगह अपने तेज सहित निवास करती है। और जब कवीरसाहब और मुहम्मदसाहब उस स्थानपर पहुँचे तब वहां हजरत दाऊद को बैठे तथा जबूर नामक पुस्तकको पढ़ते पाया। वहां पहुँचकर कवीर साहबने अस्सलामअलैक कहा—तब हजरत दाऊद अलैकमस्सलाम कहकर उठ खड़े हुए—और उनके हाथों को चूमकर बड़ी आवभगत किया—तब कवीर साहब मुहम्मद साहबको उस स्थानकी विशेषता और गुणोंको बतलाकर आगे चले।

दूसरे मलकूत का वृत्तान्त।

दूसरा स्थान मलकूत है—और यह स्थान नासूत से चौबीस सहस्र योजन उँचाईपर हैं—और पृथ्वीसे साठ सहस्र योजन की उँचाई पर है। और इस स्थानको दूसरे शब्दों में वैकुण्ठ कहते हैं, और यह वैकुण्ठ विष्णुका स्थान है—और इसी स्थानपर पाप पुण्यका लेखा लगताहै—और इस विष्णुकी सभामें ब्रह्मा विष्णु शिव इन्द्रादिक समस्त देवतागण उपस्थित रहतेहैं— इस विष्णुही का नाम धर्म्मरायहै—और आपकी आज्ञासे नरक तथा बैकुण्ठ और योनिका फिरना आदि सब कुछ होता है—और इसी स्थान से विष्णु महाराजका परिभ्रमण समस्त पृथ्वी और आकाशादिमें हुआकरताहै। चित्रगुप्त जी विष्णु के मन्त्री सबके पाप पुण्यका लेखा तथा हिसाब रखतेहैं। जब कवीर साहब मुहम्मद साहबको अपने साथ लेकर इस मलकूत पर पहुँचे—तो वहां मूसा को बैठे तौरेत पढता पाया—कवीर साहब नें वहां पहुँचकरभी सलामअलैक किया—मूसा सलामका उत्तर देकर उठे, और उनका हाथ चूमकर बडी आवभगत की तब कवीर साहबने मुहम्मद साहबको इस स्थान के समस्त गुण बतला तथा वहांके वृत्तान्त से विज्ञ कराकरआगे चले।

तीसरे जबरूत का वृत्तान्त।

तीसरा जबरूतहै—इस जबरूत स्थान को कवीर साहबने झाँझरी द्वीप कहा है—और यह निर्गुण ब्रह्म अलख निरञ्जनका स्थान है जो तीनों लोकका कर्ता धर्ता है और यह स्थान, वैकुण्ठसे अठारह करोड योजन ऊपरको ऊँचा है—यह बडा सुन्दर स्थान है—यहांपर चार करोड ज्योतिका प्रकाश है—और इस सभामें चारों फरिश्ते उपस्थित रहतेहैं—आर्थात् जिबराईल—इसराफ़ील—इजराईल—और मेकाईल। इन्हीं

चारोंको ब्रह्मा विष्णु शिव और यम इत्यादिके नामसे पुकारते हैं, । समस्त आज्ञाएँ इसी स्थनसे प्रचलित हुवा करती हैं-और चारों फिरिश्ते इन्हींके आज्ञाकारी हैं । वेद तथा पुस्तकें सबके प्रचार कर्ता यही हैं और आपहीके आज्ञाकारी तथा अधीन सब हैं। आद्या तथा निरञ्जन इसी राजधानीमें बैठकर तीनोंलोकका राज्य करते हैं। जब कबीर साहब रसूल अल्लाहको साथ लेकर पहुँचे तो देखा कि हज़रत ईसा वहाँ बैठे हुए इञ्जील पढ़रहेहैं । वहाँ पहुँचकर कबीर साहबने अस्सलामअलैक कहा और हज़रत ईसा सलामका उत्तर देकर उठ खडे हुए और उनके हाथको चूम लिया-तब कबीर साहब मुहम्मद साहबको उन स्थानों के गुणका विवरण बताकर आगे चले ।

चौथे लाहूतका वृत्तान्त ।

चौथा लाहूत है जबरूत और लाहूतके बीचम ग्यारह पालंगका अन्तर हैं, और एक पालंग आठ करोड़ योजनकाहै, । यह लाहूत स्थान अक्षरका है । यहाँ अक्षर और योगमाया रहते हैं यह बड़ा सुन्दर स्थान है । जब कबीर साहब और मोहम्मद साहब इस स्थानपर पहुँचे तब कबीर साहबने मोहम्मद साहबसे कहा कि हे मुहम्मद ! देखो यह तुम्हारा स्थान है-और यहाँही वह अक्षर पुरुष जिस को तुम बेचून बेचेरा खुदा कहतेहो रहता है और उस स्थानके गुण दिखलाकर आगेको चले ।

पाँचवें हाहूतका वृत्तान्त ।

पाँचवाँ हाहूत हैं-यह हाहूत स्थान एक असख्य योजन शून्यके ऊपर है-अर्थात लाहूत और हाहूतके बीचमें एक असंख्य योजन शून्य और अंधकार है-यह हाहूत स्थान अचिन्त पुरुषका है-यहाँ अचिन्त पुरुष सपत्नीक रहता है-और यह स्थान बडाही मनोहर है-अचिन्तके सामने तीन सौ अप्सराएँ नृत्य करती रहती हैं-और यह निःशंक तथा निर्द्वंद्व रहता है कबीर साहब इस स्थान और अचिन्त पुरुषका सब बिवरण मुहम्मदसे कह करके आगे को चले।

छठवाँ बाहूत का वृत्तान्त ।

यह बाहूत छठा स्थान है। और बाहूत और हाहूतके बीचमें तीन असंख्य योजन सून्य और अँधेरा है और हाहूतसे बाहूत तीन असंख्य योजन की उँचाईपर है- यह अत्यंत मनोहर स्थानहै । इस स्थान में सोहं पुरुष रहता है-और सोहं पुरुषकी अर्धाङ्गिनीका नाम ओहं है -यह सोहं पुरुष अपनी शक्ति ओहं सहित सिंहासनपर अधिकृत है-और उस स्थान में सदैव सोहंका शब्द सुनाई दिया करताहै। जब कबीर साहब मुहम्मद को लेकर इस स्थानपर पहुँचे तो वहांके समस्त गुणोंका विवरण उन्होंने उनसे किया और फिर आगे चले ।

सातवें साहूत का वृत्तान्त ।

यह साहूत बाहूतसे पाँच असंख्य योजन ऊंचा हैं, और बाहूत और साहूतके बीचमें पाँच असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकारहै । यह इच्छाका स्थानहै । इस स्थान की सुन्दरता तथा यहां की सुखसामग्रीकाभी विशेष विवरण है कबीर साहब मुम्मद साहबको दिखलाकर आगे चले ।

आठवें राहूत का वृत्तान्त ।

राहूत साहूतके ऊपर चार असंख्य योजन ऊंचा है । साहूत तथा राहूत के बीच में चार असंख्य योजन शून्य और अत्यंत अंधकार है और इस राहूत स्थानमें अंकुर पुरुष अपनी शक्ति सहित रहता है—यह अत्यंत सुन्दर तथा मनोहर स्थान है। जब कबीर साहब मुहम्मद साहब को लेकर इस स्थान में पहुँचे तो उसके सब गुण दिखलाकर आगे चले ।

नववें आहूत का वृत्तान्त ।

यह राहूत के ऊपर दो असंख्य योजन ऊँचा है । और बीचमें शून्य तथा अंधकार है—इस स्थान में सहजपुरुष रहता है—और सत्यपुरुषका सबसे बड़ा पुत्र यही कहलाता है—यह नवाँ स्थान सबसेसुन्दर और आनन्द पूर्ण कहलाता है । कबीर साहबने मुहम्मद साहब को यह स्थान दिखालाय और इसका विवरण करके फिर आग को चले ।

दशवें जाहूत का वृत्तान्त ।

आहूत और जाहूत के बीचमें दश असंख्य लाख योजनका अन्तर हैं अर्थात स्थान जाहूत आहूत के ऊपर दश असंख्य लाख योजन ऊँचा है—और यही स्थान सत्यरुपुष का है इसकी सुन्दरताका विवरण किया नहिं जासकता है—इसी स्थानसे कबीर साहब सत्यपुरुषकी आज्ञा लेकर पृथ्वीपर आया करते हैं । और इसी स्थानके रसूल पाक हैं और इसी सत्य पुरुषके सत्यलोकमें जब हंस पहुचते हैं—तब कालपुरुष उनको नस्मकार करता है—और उन हंसों का आवागमन फिर कभी नहीं होता । वे हंस सत्यपुरुषकी स्तुति किया करते हैं और वें सत्यपुरुषके स्वरूपको प्राप्त होजाते हैं । सत्यलोकके आधीन अठासी सहस्त्र द्वीप हैं और सब द्वीपो में सत्यगुरुके हंस आनन्द करतें हैं उनके भोजन तथा वस्त्रादिका विवरण नाहीं हो सकता है ।

सत्यकबीराय नमः ।

अथ श्रीबोधसागरे

दशमस्तरंगः ।

श्री ग्रन्थ काफिर बोध ।

मंगलाचरण-सोरठा ।

बन्दै श्री सत्य कबीर, कुफर नशावन जगत गुरु ॥
नवों सत मति धीर, टूटे कुफर जँजाल सब ॥

ग्रन्थारम्भः ।

कौन सो काफिर कौन मुर्दार । दोऊ शब्दका करो विचार ॥
गुस्सा[1] काफिर मैनी[2] मुर्दार । दोऊ शब्दका यही विचार ॥
हम नाहिं काफिर हम हैं फकीर । जाइ बैठे सरवरके तीर ॥
चोरी नारी[3] दरोग सो डरें । राह सो लेखा सबका करें ॥
नंगे पायन पृथ्वी फिरै । हाट न लूटै बाट न पारै ॥
हमतो (बाबा) किसीका कछुनबिगारैं। दर्दमन्ददिल दया सबाँरैं ॥
दुनिया लोक सो उल्टी करै । सत्यनाम सदा उच्चरै ॥
सिक्का देखि न कहिये फकीर । फकीर न कूटे पुरानी लकीर ॥
काफिर सो कुफराना करे । अलह खुदाय सो नाहीं डरे ॥
करै न बन्दगी फिरे दिवाना । गरभ बाँधि फिरै गैबाना ॥
बोल कुबोल सबै बिसरावै । खून खराफातको दूरि बहावै ॥
दिल में चोर कमर में कत्ती । लोगन के घर भाजे रत्ती ॥
अलह के नामे बाँटे खाना । सो कहिये सांचे मुसलमाना ॥
मुसलमान मुसावे आप । सिदक सबूरी कलमा पाक ॥
खडी ना छेडे पडी न खाय । सो मुसलमान बिहिश्तको जाय ॥

१ क्रोध । २ अभिमान । ३ व्यभिचार । जारी ।

कलमा पढै न आवै बिहिस्त। हिरदे रहे पाप की दृष्टि॥ हिन्दु मुसलमां खुदाके बन्दे। हमतो योगी(किसीका)न राखेछन्दे देवी देहरा मसीद मिनार। हमरे तो एक नाम अधार॥ टाकी ले कौन ऊपर चढै। पाव न दाबें हाथ न गढै॥ तहां न अग्नि पवन का डर। ऐसा अलखपुरुष (जिन्दपीर)काघर चूना पत्थर बनाइया दादाआदम की करनी॥ हमतो रहें अलेख पुरुष जिन्दा पीर की शरनी॥ मक्खी जाय बंधनमें परी। छानत छानत ताही गिरी॥ काजी मुलना करे बिचार। मक्खी किया बडा अहँकार॥ मक्खी तो गाये भखे। मक्वी तो सूअर भखे॥मक्वी तो हलाल भक्खे। मक्खी तो मुर्दार भखे॥ मक्वी जायबिगारे खाना। तहां न चले बादशाह परवाना॥ कोरा कलमा बहुतेरा बोलै। खैर मिहर का खीसा न खोलै॥ मिहर न बांटेमुर्दार खोरा। खैर न बांटे अल्लहका चोरा॥अरस परस बीच समाना। मोम दिल मोम दिल जाना॥ सिदके सो परि पहिचाना। दर्दमन्द दुरवेश बखाना॥ रहमत है मुरशिद पीरको। जहमत सूम महसूदको॥ निश्चयपरिचे निमाज गुजारै। श्रवणनेत्रको बैर निहारै॥ मुहम्मद मुहम्मद क्या करे। कुरान कलमा क्या पढै॥ किधर किधर की राह बतावे। विनु गुरु पीर राह ना पावे॥

साखी–हाजी गाजी दोऊ गुरु, चेला खोजो दस दर्वाजा॥
अलख पुरुष कहँ माथनवाओ, इस विधि करै निमाज॥
सभै साचे काजी, सांचे मुलना बेद कुरान॥

कहै कबीर आबसो सब आलम उपजाना॥ हिन्दूकाहिये कीमुसलमाना॥राम रहीम बसे एक थाना॥मनको जाने सोई मोलाना॥ दरको जाने सोई दरवेश। हमतो बावा नेकी वदी सो न्यारा॥ दुनिया मति कोइ लावे दोष। हम तो करि हैं अकेले दस्त॥

ताका साहेब मक्का वस्त । मक्कवन्तका साहेबअकिल मन्द
अकिलमन्द अकिल सो जाना । मन मुरीद दोस्ती दाना ॥
सहर गदाई कौन यार । सिर खुरदनी कौन यार ॥
बन्दी खाने कौन यार । तख्त बादशाही कौन यार ॥
काया यार सिर खुर्दनी । दिल यार मार माहीं ॥
जीव यार बन्दी खाने । मन यार तख्त बादशाही ॥
मनलाल दिललालललालपोतदार । हमसाही हमसाहसाहपोतदार

इति कबीर साहब का वचन उचार विचार ।

अथा खान मुहम्मद अली पादशाहका प्रबोध ।

कलिक कीमोक लिस रसमें की चशमें । खदयर संयम करदम । ओजूद राह चकित करदम ।

औवल–अक्के पीर है । मन मुरीद है । तन शहीद है । असल गदाई है। तकबुर दुशमन है । गुस्सा हराम है । नफस शैतान है । चोरी लानती है । जुवारी पलीदी है । अदब आदि है । बे आदब कम असल है । राह पीर है । बेराह बेपीर है । सांच बिहिश्त है । झूठ दोजख है । मोमदिल पाक है । संगदिल नापाक है । हिर्स हैवान है । बेहिर्स वली है ॥

लाइ लुइ हरकत है । अचेतबेगुलाम है । असलजादे को सलाम है । कृतहीन जर्दरू है । दाना जौहरी है । असलकी दोस्ती है । दाना शायर है । बूझ महबूब है । बन्दगी कबूल है । अल्लाह नूर है । आलम हद है । साहिब बेहद है । यकीन मुसलमान है। शील रोजा है । शर्म सुन्नत है। ईमान मुसलमान है। बेईमान बेदीन है। दिल दलील है। बाँग बलेल है। फकीरी सबूरी है । नामबूरी मक्कारी है। दरोग द्वन्द है ।

इति समझौता ।

अथ बन्द ।

प्रथमबोलिये मूल बन्ध । दुजे बोलिये कमर बन्ध । तीजे बोलिये लंगोट बन्ध ।पाँचवें बोलिये दानिश बन्ध।छठे बोलिये शस्त्र बन्ध । सातवाँ बोलिये सहस बन्ध । आठवाँ बोलिये अहूठ हाथकी काया ।जाका मर्म काहू विरले पाया ।। मक्के हिर्स मदीने छाया औवल पीर हिन्दू कौबल वीर मुसलमान कहाया। मुसलमानकी काटी चोंचनी हिन्दू के छेदे कान । बोलता ब्रह्म नही हिन्दू नहीं मुसलमान । दादा आदम ने गाया । बडे बडे पीरन को फरमाया । खुदाने अली पादशाह को चिताया । हिम्मते बन्दा मददे खुदाया । दुआ फकीरा रहम अल्लाह । कदम दर्वेशाँ रद्द बलाय. । दादा आदम मामा हौआ । मक्के मदीने में चढा तावा । पाहिली रोटी फकीर को रवा । ना देवे रोटी तो टूटे कठवता फूटे तवा । बैठी रहो मामा हौवा । कुफ्र खेले अपनी रावा । इतनी सवाल रतनहाजी ने कह्यो । कहै कवीर पीर को जानी । काफिर वोध सम्पूरण वानी ।।

इति श्री काफिरबोध प्रथम मंज़िल समाप्त ।

फिरिश्तोंका व्यान ।

१ औवल फिरिश्ता बसर है। जैसे खुदाकी सूरत सूरत नहींहै आदि अंन्त नहीं है वैसे बसरकाभी कोई रूप रेख नहीं है । खुदाने यह फिरिश्ता सब जीवधारीके संग लगादियाहै ।जो हरएकको बतलाताहै कि, देख कर चलो ठोकर मत खाओ ।।

२ दूसरा फिरिश्ता समंअ (कान) है उसके द्वारा खुदा उपदेश करता है कि, मकरूह (बुरा) मरगूब (भला) आवाज और दोस्त दुशमन की बात को सुनो और समझो ।

---

१ नेत्रेंद्री कर्णेन्द्री ।

३ तीसरा फिरिश्ता शामा (घ्राणेन्द्रिय) है। यह फिरिश्ता सुगन्धि दुर्गन्धि को बतलाता है।

४ चौथा फिरिश्ता लमस (स्पर्शेन्द्रि) है जो बतलाताहै कठिन और कोमल को।

५ पाँचवाँ फिरिश्ता जायका (रसेन्द्री) है जो छः प्रकार के रसों का ज्ञान बतलाताहै।

६ छठां फिरिश्ता हाथ है जो हाथ से करने योग्य कामों को सिखाता है!

७ सातवाँ फिरिश्ता पावँ है जो चलने फिरने को बतलाताहै।

८ आठवाँ फिरिश्ता ज़बान (जिह्वा) है जो भला और बुरा वचन बोलने को सिखाता है।

९ नवाँ फिरिश्ता आलातनासुल (जनेन्द्रि) है जो मूत्र त्याग करने और-संसार की वृद्धि करने का मार्ग बतलाता है।

१० दशवाँ फिरिश्ता मेकअद (गुदेन्द्रि) है जो शरीर के मलों को बाहर निकालताहै।

११ ग्यारहवाँ फिरिश्ता दिल (मन) है जो इच्छा उत्पन्न करता है और राग द्वेष करता है। दिल वह नहीं है जिसको राक्षस मांसा हारी लोग कबाब बनाकर खाते हैं।

१२ बारहवाँ फिरिश्ता इदराक (चित) है जो सर्व पदार्थों का चिंतन करता है।

१३ तेरहवाँ फिरिशता अहंकार है जो जीवन की रक्षा करता है।

१४ चौदहवाँ फिरिश्ता अक़्ल (ज्ञान) है जिसे जिबरईल कहते हैं और जो सब के भेद को जानता है और सबको उपयुक्त मार्ग बतलाता है।

१५ पन्द्रहवाँ फिरिश्ता शहवत (रजोगुण) है जिसको ब्रह्मा कहते हैं।

१६ सोलहवाँ तमीज (सतोगुण) है जो सत्य असत्य का बिचार बतलाताहै इसीको बिष्णु कहतेहैं।

१७ सतरहवाँफिरिश्ता गज़ब (तमोगुण) है जो दुखदाई पदार्थोंसे रक्षा करताहै। इसी को शिव कहते हैं।

इसी प्रकार पांच तत्त्व और सर्व प्रकृतियाँ आदि संसार के सर्व वस्तु फिरिश्तोहैं और जिस प्रकार शरीर का राजा जीवहै उसी प्रकार सब जड चैतन्य का स्वामी साहिव है जिसके शरणमें जानेसे अटल सुखप्राप्त होताहै।

इति काफिरबोध।

इति श्रीबोधसागरान्तर्गत काफिरबोध नामक दशमस्तरंगः।

ज्ञातव्य।

काफिर बोध पुस्तक के प्रथम मंजिलकी एकही प्रति मेरे पास है। बहुत प्रयत्न करने परभी उसकी दूसरी प्रति न मिल सकी इस कारण जैसी प्रतिथी उसी के अनुसार ही रक्खाहै।इस ग्रन्थ में फारसी और अरबी शब्दों का बहुत प्रयोग कियाहै किन्तु यह ग्रन्थ लिखा हुआ अशुद्ध हिन्दी अक्षरोंमें मिलाहै और दूसरी प्रति न रहने तथा छपने कि शीघ्रता के कारण से कितने शब्द शुद्ध२न जान पडने के कारण जो त्रुटियाँ रह गयीहैं उनको दूर करने के लिये प्रयत्न कररहाहूँ प्रयत्न सफल हो करने पर दूसरी आवृत्ति में ठीक कर दिया जायगा।

इति।

इति

श्रीबोधसागरान्तर्गत

ग्रन्थ मुहम्मदबोधः

और

काफिरबोधः

समाप्तः ।



भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संशोधित।

श्री-सुलतानबोध।

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

सत्य नाम ।



श्री कबीर साहिब ।



अथ श्री बोध सागरे

एकादशस्तरंगः ।

श्रीग्रन्थ सुलतानबोध ।

मंगलाचरण–दोहा ।

अजर अमर सत नाम है, भजि शोक तम पुंज ॥
तासु चरण मन रमि रहहु, कमल भौंर जिमि गुंज ॥

धर्मदास वचन–चौपाई ।

धर्मदास उठि विन्ती लाये । सतगुरु मोहि कहो समुझाये ॥
कैसे करिये तजिय संसारा । ताको समरथ कहो विचारा ॥
आगे भये बलख के मीरा । माया सुख तजि भये फकीरा ॥
केही विधि तिन तजि पादशाई । सब वृतान्त कहो समझाई ॥

सतगुरु वचन ।

कहें कबीर सुनो धर्मदासा । बलख भेद कहूं तुम पासा ॥
बलख शहर एक नगर अनूपा । तहँ सुलतान यक ज्ञान सरूपा ॥
बादशाह शाहन सरदारू । प्रेम प्रीति मन माहिं विचारू ॥
इब्राहीम अद्धम जेहि माना । राज माहिं भक्ती जिन ठाना ॥
विरह उठी शाह मन माही । कारज अपना कीना चाही ॥
मनुषा जनम अमोलक पायी । ऐसे तन पाइ खुदा मिल जायी ॥
जो यहि अवसर अल्लह न पाया । क्षण महँ विनाशिजायगी काया ॥
ऐसी फिकर उठी मनमाई । तब षट दर्शन लिये बुलाई ॥

पण्डित साधु सन्यासी आये। जोगी जंगम यती बुलाये॥
ज्ञानी ध्यानी सबके पीरा। काजी मुल्ला सेख फ़कीरा॥
सब मिलि भेष जुड़े तहँ आयी। तिनसों बचन बूझा अर्थायी॥
तबहि शाह सब टेर सुनायी।अल्लह रूप मुहि देहु दिखायी॥
खुदा मिले कह कौन उपाई। कौन राम अरु कौन खुदाई॥
एक खुदा यक और को होई। काहे भयो एक अस दोई॥
दोऊ दीन मिलि कहो समझायी। दोमें सांच कौन ठहरायी॥
दोउ कर जोडि सबन सो कहेऊ। बहुत अधीन आप तहँ भयऊ॥
होय अधीन तब शीस नवायी। सबसे बूझे मन चित लायी॥
सब मिलि कहो खुदाइ सन्देशा। मेरे मनका मेटो अँदेशा॥
साहब बसे कौन से देशा। सो मुहि बात कहो दुरवेशा॥
दोऊ राह यह किनहि चलायी। किन वैकुण्ठ विहिस्त बनायी॥
एती सब मिलि कहो दिवाना। नातो दूर करो कुफराना॥
बिन देखे सबही दिल धरहीं।कान छिदाय अरु खतना करहीं॥
हमरे दिलका मेटो अँदेशा। हम माने तुमरो उपदेशा॥
हिंन्दू सबे बैकुण्ठहि धावैं। मुसलमान विहश्त ठहरावैं॥
इनमें कहां खुदा का बासा। विन देखे कीनो विश्वासा॥
किनहु खुदाका घर नाहिं पाया। झूठ झूठ सब द्वन्द मचाया॥
खुदाकी खबर न कोइ बताही। सबको जडो कोठरी माहीं॥
दोऊ दीन यह किन भरमाया।खुदाकी खबर किनहु नाहिं पाया॥
साखी—दोऊ दीन समझावहू, मो मन बहुत अन्देश॥
कौन खुदा दो दीन रचे, बसे कौन सो देश॥
कोपे इब्राहीम तब, ये सब भरम भुलाहिं॥
खुदा भेद कोउ नाकहे, डारो कोठरि माहिं॥

चौपाई।

चली जो बात दशो दिशि जायी। षट दर्शनको साधु रोकायी॥
इतनीबात काशी सुनि पाई। तब उठि धाये आप गुसाई॥
जिन्दा रूप गुसाईं कीना। जाइ शाह को दर्शन दीना॥
बैठे तख्त आप सुलताना। जिन्दा दुआसलामा कीना॥
दोआ सलाम हमरीनहिं माना। माया के मद गर्व भुलाना॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। जिन्दा रूप कौन को भेशा॥
कहँ से आये कहाँ तुम जाओ। कौन काज हमरे घर आओ॥
हम पूछें जो खुदा की बानी। इल्म अल्लाह की कहो निशानी॥
कुदरत की कोइ आदि बतावै। सोई मुर्शिद पीर कहावै॥
हमरे दिल में विरह बहु आया। खुदा मिलन कोउ नाहिं बताया॥

जिन्दा वचन।

जिन्दा कहे सुनोरे भाई। षट दर्शन तुम देहु छुडाई॥
तब हम तुम सों ज्ञान करावें। संशय तुम्हरो सकल मिटावें॥
षट दर्शन को छोडि तुम देओ। जो चाहो सो हमसो लेओ॥
अब जनि शंका मानो भाई। जो पूछो सो देउँ बताई॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान सुनो दुरवेशा। कैसे मिटै हमार अँदेशा॥
ऐसी बात कहो अधिकाई। क्या तुम दुसरे आय खुदाई॥

जिन्दा वचन।

तब हम एक कला दिखलायी। भैंसा पास यक साख भरायी॥
जब दुरवेश भैंसा लगि जायी। भैंसा से यक वचन सुनायी॥
भैंसा कहै सांचे दुर्वेशा। मानो शाह इनको उपदेशा॥
यहि दुर्वेश खुदा समजानो। इनसे कर्त्ता और न मानो॥

सुनिके शाह अचम्भो भयऊ । भैंसा साख सो कैसे भरेऊ ॥
यह तो पीर औलिया आये । भैंस पास इन साख दिवाये ॥
शाह के दिल परतीति अस आयी । यह दुरवेश खुद आय रहायी ॥
षट दर्शन को बन्ध छुडाये । बन्दी छोर कहिकहि सबजाये ॥
साखी—बन्दीछोर कहाइया, शहर बलख मंझार ॥
छूटे बन्ध सब भेष को, धन धन कहे संसार ॥

चौपाई ।

तब सुलतान अपने मन जाना । यह दुर्वेश अविगत ठाना ॥
भैंसा पास इन साख भराहीं । यहतो गति आदम की नाहीं ॥
एती कला जान जब पाये । फिरि ज़िन्दा से पूछन लाये ॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान सुनो दुर्वेशा । जिन्दा रूप कौनको भेशा ॥
कहाँ से आये कहाँ तुम जाओ । इतनी सनद कही समुझाओ ॥
तुमही मुर्शिद पीर हमारा । हम अपने दिल कीन विचारा ॥
साखी—कहाँ से आये जिन्द जी, फेर कहाँ तुम जाव ॥
हिन्दु तुरक में कौन हो, मोहि कही समझाव ॥

जिन्दा वचन—चौपाई ।

कहे दुर्वेश सुनो रे भाई । जिन्दा रूप खुदाको आई ॥
अल्लाह आप सकल घटमाहीं । दोऊ दीन दोउ राह चलाहीं ॥
हम दोजखतजि विहिश्त को जाये।सौंपन एक चीज तोहिआये॥
तुम हौ दीन दुनी सुलताना । राखो मियाँ सुई सहिदाना ॥
जबतुमआओगे विहिश्तकेमाहीं । तबहम सूई लेब तुम पाहीं ॥
यही काज तुमरे घर आये । मियाँ सुई धरों तुव ठाये ॥
दीन दुनी के बादशाह कहाओ । इतनी सनद हमारी लाओ ॥
सुई देव जब विहिश्त मँझारा । तब हम मानें सांच तुम्हारा ॥
हँसकर शाह सुई कर लीना । सहस्र सुई का कौल तव दीना॥

सुलतान वचन।

जाओ विहिश्तमानो विश्वासा। सहस्र सुई लेना हम पासा॥

सतगुरु वचन।

इतनी गोष्टि शाह सो कीना। तब तहाँ से पयाना दीना॥
एक सुई उन हम सो लीना। सहस्र सुई का कौल तब दीना॥
साखी—इतना कहि हम उठि चले, चानक शाह लगाय॥
नीमशाम के वक्त में, जुडी अदालत आय॥

चौपाई।

सबमिलि आय जुडे दरिखाना। बैठे आय तहां सुलताना॥
शाह के हाथ सुई जब देखा। तब वजीर मन कीन विवेखा॥
हाथ जोडिके विन्ती लावा। कैसे सुई हाथ में आवा॥

वजीर वचन।

कैसे सुई हाथमें लीना। कारन कौन कहो हम चीना॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान सुनो दीवाना। बन्दा अल्लाह दिया सहिदाना॥
दुरवेश एक यहां चलि आया। जिन या सुई दीन हम पाया॥
कहा दुरवेश विहिश्त तुम आव। तब या सुई लेव तेहि ठाँव॥
ऐसे वचन कह्यो दुर्वेशा। सुई हम देन कही तेहि देशा॥
एक सुई हम उनसे लीना। सहस्र सुईका कौल हम दीना॥
इतना वचन कहे सुलताने। सुनत वचन विन्ती तिनै ठाने॥

दीवान वचन।

दीवान कहे सुनो हो साईं। सुई विहिस्त कौन विधि जाई॥
गाम परगना औ ठकुराई। सबही धरा रहै यहि ठाई॥
तात मातु सुत सुन्दर दारा। तन धन धाम सकल परिवारा॥

---

१ दीवान।

अंत समय ये काम न आवैं। आपु चिन्हे तब जिव सुख पावैं॥
जहँ लगि जग में दृष्टिदिखाहीं।सो सब विनशि जाय क्षण माहीं॥
जतन करे बहुत सुख पावे। सो तन जले गडे मिटि जावे॥
ऐसे कहि वजीर शिर नायो। कैसे सुई संग लै जायो॥
समझि देखु अपने दिलमाहीं। सुई संग कौन विधि जाहीं॥

सुलतान वचन।

तब सुलतान वचन अस कहई। सुनो वजीर मता यक अहई॥
इतना लशकर संगलै जायब। हस्ती चार सो सुई भरायब॥

वजीर वचन।

हस्ती संग चले नहि शाहा। खोज करो तुम दिलके माहा॥
हस्ती घोडा माल खज़ाना। यह सब संग चले न निदाना॥

सुलतान वचन।

शाह तबै अस वचन सुनावैं। बैठि सुखपाल बिहिश्त को जावैं॥
लेवँ बाँस में सुई भरायी। यहि विधि सुई संग मम जायी॥

वजीर वचन।

तब दिवान कर जोरि सुनावे। यह सुखपाल कबर लगि जावे॥
आगे कस तुम करहू साँई। सो मोहि वचन कहो समझाई॥

सुलतान वचन।

आगे हम घोडे चढि जायब। लेइ जीन में सूई भरायब॥
अहो दिवान ऐसेई करिहौं। ले दरवेश के आगे धरिहौं॥

वजीर वचन।

सुना दिवान तबै हँसि दीना। दोइ कर जोरि के विन्ती कीना॥
दादा बाबा तुम्हर रहैया। घोडे चढि कोऊ ना गैया॥
साखी—इतने में संग नहिं चले, सुनहु शाह चित लाय॥
यह बजूद दिन चार है, सो भी संग न जाय॥

चौपाई।

मनमें चकित शाह तब भयऊ। झूठी माया हम चित दयऊ ॥
सुई संग चले नहि जाही। झूठी राज पाट सब शाही॥
सहस्र सुई का का परसंगा। एकै सुई चले नहिं संगा॥
अबतो खाना हम तब खावें। जब जिन्दाका दर्शन पावें॥
इतना ज्ञान शाह घट आवा। जिन्दा दरशको सुरति लगावा
इबराहीम ऐसि मति ठाना। राज मांहि भक्ती जिन जाना॥
साखी-जिन्दा जिन्दा रट लगी, हिरदय रहा समाय ॥
जो ज़िन्दा अबकी मिले, पूछूँ सब घर पाय ॥

चौपाई।

ऐसी रटना शाह तब लावा। जिन्दा मिलन भयो उरभावा॥
बहुत दिवस रट लागी ऐसी। आगे कहूँ भयी गति जैसी ॥
शाह कीन मन माहँ बिचारा। जिन्दा मिले सो कौन प्रकारा॥
सब सिद्धन को लाउ बुलायी। उनसे पूछो मति अस भाई॥
जोई सिद्ध अजमत बतलावें। उनसे खबर जिन्दाकी पावें॥
जबै शाह ऐसी मन ठानी। लिये बुलाय सिद्ध सबध्यानी॥
साखी-सब सिद्धनको टेरिके, शाह किये सन्मान ॥
देउ करामत सिद्ध मोहिं, तब मेरो मन मान॥

चौपाई।

सन्मुख शाह सिद्ध सब आनी। तबही शाह कहे अस बानी ॥

सुलतान वचन।

अधिक प्यारे तुमहौ अल्लः को। करामातदिखलाऔअबहमको
ना मैं तुम्हको बांधि झुलाऊँ। ना तो तुम्हको छुरी मराऊँ॥

सिद्ध बचन।

तब बोल सिद्ध चौरासी। हम हरि हर के आहिं उपासी॥
निशि दिन राम नाम गुण गावें। करामात ढिग हम नाहिं जावें॥
यह सुनि शाह बहुत रिसियाना। हुकम कीन सब बन्दीखाना॥

सुलतान वचन ।

तुम काफिर अल्लाह ते दूजा । भूत प्रेत चित लाये पूजा ॥
चक्की ढिग इनको बैठाओ । निशि दिन इनसे नाज दराओ ॥
जो नहीं करामात तोहि होई । क्यों कर सिद्ध कहाओ सोई ॥

सतगुरु बचन ।

बैठे सिद्ध सब चाक चलावें । चित विस्मय सब हरिगुण गावें ॥
त्रास देखि मुहि आयी दाया । तताछिन शाहद्वार चलिआया ॥
सोटा मारा चक्की माहीं । घूमहु सतगुरु दया कराहीं ॥
विदा सिद्ध भये हम भय गुप्ती । देख्यो आय शाहके जपती ॥
कहा साह सों तिन्ह कर जोरी । चक्की सब आपहिं चलि दौरी ॥

सुलतान वचन ।

सुनि के शाह कैफ दिल आयी । कौन शख्श यहचक्कि चलायी
वेगहि ढूँढि लाओ यहि बारा । चक्कि चलायो सो अल्लह प्यारा ॥

सतगुरु वचन ।

ढूंढत नगर थके दिल जबहीं । नहिं पाये व्याकुल चित तबहीं ॥
जबहिं शाह घर लगन विचारा । तब हम जीवदया उर धारा ॥
तुरतहिं जाय तहां पगु धारा । शाहके महलन चढे गोहारा ॥
महल पर देखत फिरों चहुँ खूंटा । करों पुकार हेरानो ऊंटा ॥
सुनि के शाह क्रोधकरि धाये । कौन हमारे महलपर आये ॥
कहो तुम कौन कहां से आवा । कौन काज महलन पर धावा ॥
तब हम कहा ऊंट यक छूटा । ढूँढत फिरूं मैं अपनो ऊंटा ॥
बहुत अधीन ऊँट हम भायो । खोजत ऊंट महल पर आयो ॥
सुनिके शाह तबे हंसि दीन्हा । कैसे ऊंट महलपर चीन्हा ॥
जँगल माहिं तेहि खोजो जाओ । कैसे ऊंट महल पर आओ ॥
तब हम कहा सुनो तुम ज्ञाना । चढे तख्त अल्लह किन जाना ॥
ऐसीबझ करो मन माहीं । सत्य वचन धरो मन ठाहीं ॥

साखी–तख्त चढे किन पाइया, सुनो शाह सुलतान ॥
हरदम साहब याद करु, रचा जिन सकल जहान ॥
महल न आवे ऊंट हमारा । तख्त ऊपर नहिं अल्लाह निहारा
अल्लाह तख्त पर कैसे पावे । जहँ लगि घट महँ गर्ब रहावे ॥
जब तुम छोडो राज शरीरा । अल्लाह लखो तुम अपनो पीरा
छोडो मान गुमान रे भाई । अल्लाह रूप तबही मिलि जाई
सुनत शाह सन्मुख जब आवा । तब जिन्दा से पूछन लावा ॥

सुलतान वचन ।

कौन रूप कौन नाम तुम्हारा । कहो अल्लाह मिले कौन विचारा

जिन्दा वचन ।

सांचे दिलसे सुरति लगाओ । प्रेम प्रीति लौलीन रहाओ ॥
सुख संपति की करो न आशा । निशि दिन दीया प्रेम प्रकाशा ॥
मन अस्थिर करि सुरति लगाओ । तबहीदरश अल्लाह कोपाओ
कहे कवीर खोजे सो पावे । खोजत खोजत अलख लखावे
साखी–प्रेम प्रीति करि खोजिये, हियमें आवे ज्ञान ॥
अलख अल्लाह की खोजमें, जागत भये सुलतान ॥
जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि ॥
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि ॥

चौपाई ।

जब कीन मन शाह अन्देशा । नहिं तहँ ऊँट नहीं दुर्वेशा ॥
ऐसे बहुत दिन बीता भाई । काल कला घटआन समाई ॥
बहुरि एक दिन बलख मँझारा । शाहके महलनमें पगु धारा ॥
नौरोजा खेले सुलताना । गिलम बिछायबहूबिधिजाना॥
महलन माहीं पहुँचे जायी । देखत फिरे महल चौपायी ॥
इब्राहीम अधम सुलताना । हमको देखत बहु रिसियाना ॥

सुलतान वचन।

कहे शाह तुम कौन है भाये। केहि कारण तुम महलन आये॥

जिन्दा वचन।

हम परदेशी दूर दिशारा। देखत फिरहिं सराय बसारा[1]॥

सुलतान बचन।

शाह कहे यह महल हमारा। कहाँ सराय जो करइ बसारा॥
जेहि महल हीरा जड़ा अपारा। तापर धुनी तुम कैसे बारा॥
अब तुम जाओ शहर बाज़रा। तहाँ जाइ करो सराय बसारा॥

जिन्दा वचन।

कहे दुर्वेश सुनो तुम शाहा। करि विचार परखो दिल माहा
महल तुमारा तुम कहँ पावा। करो खोज यह किन निर्मावा॥
महल तुम्हारो होय न भाई। तुम भी मुसाफिर बसो सराई॥
सुनो शाह तुम चतुर सयाना। सुरति निरति बूझो तुम ज्ञाना॥
बहुत बादशाह तुम आगे भयऊ। महल न संग काहुके गयऊ॥
दादा बाबा तुम्हरा रहिया। महल काहुके संग न गैया॥
जो तुम थापा महल हमारा। अन्त काल सब छुटे घर बारा॥
यह जग सकल सराय बसेरा। इनमें नाहिं कोउ केहि केरा॥
जहां के ताहां छूटहिं धामा। यह सबही दिनचार मुकामा॥
हरदम साहिब को पहिचानो। महल सराय एक करि जानो॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आवै। राज छोडि साहिव गुण गावै॥
साखी—ज्ञान[2] दृष्टि दिल आवई, सब तजि होय फकीर॥
कहे कवीर सुलतानसे, ज्ञानक लागे तीर॥

---

१ गुज़ारा, निर्वाह।

२ इस साखी के आगे एक प्रति में नीचे लिखे पद हैं। किन्तु यहाँ इनका मेल न मिलने से नोट में लिखा है।

चौपाई।

यक दिन शाह जु चले शिकारा। चुनि चुनि साथ लीन्ह असवारा।
छोडे बाज पक्षी गहि आने। देखत शाह बहुत सुख माने॥
बहुबिधि मारग करत कलोला। जहँ तँह फिरे शिकारिन टोला॥
बहुत समय वीति जब गयऊ। एक शिकार हाथ नहिं अयऊ॥

चौपाई।

ज्ञान दृष्टि जब दिलमें आही। छोड्यो राज पाट बादशाही॥
होय फकीर जंगलमें बासा। छोडी राज तख्तकी आसा॥
शाह जो बैठे जंगलमें जाई। नगर की सब परजा चलि आई॥
काजी पण्डित शेख मुल्ला। महंत महावत गुलाम नफराना॥
सेठ सेनापति परजा आई। सबही धरे शाह की पाई॥

प्रजा वचन।

ऐसी बात न करहु गुसाई। सबही राज भ्रष्ट होय जाई॥
जो तुम तजो तख्त औ राजू। सब परजा का होय अकाजू॥

सुलतान वचन।

नाहीं तख्त निकट हम जावें। नहिं अपने शिर भार चढावें॥
यह बादशाही हमसे नहिं होवे। कौन तख्त चढि दोजख जोवे॥
हम छोडा तख्त बादशाही। फिरि संशय महँ हम नहिं जाहीं॥
विना भक्ति मुक्ति किन पायी। राज करे सो दोजख जायी॥
हमको आय मिले यक साँई। वहि साहब मुझको फरमाइ॥
मैं अपराधी उन नाहिं चीन्हा। अध बिच छाँडि उन हमको दीन्हा॥
अबतो करौं मैं कौन उपाई। साँई मुझको कस मिलिहै आई॥

परजा वचन।

अब तुम चलो महल के माहीं। हम सब सँग तुम होहु गुसाँहीं॥
तुमको छाँडि एको नहिं जैहें। सब मिलि संग पयाना दैहें॥
सब मिलि लाये महल मँझारा। शाह के मनमें शोच अपारा॥
कैसे के जिन्दा मैं पाऊं। कैसेके मैं जिव मुक्ताऊं॥
झुठे झूठ मिल सब संसारा। दोज़ख कुंड में नाखन हारा॥
साखी–बेर बेर हमको मिले, नाम जिन्दा सो आहि॥
अभरापन यक सुलतान है, किसविधि मिलेंगे आहि॥

तबै शाह बहुत रिसियाना । खोजु शिकार हुकम फरमाना ॥
तबै शिकारी दुहुँ दिशिधावैं । पावें न शिकार मनहि पछतावें ॥
यहि विच लीला अस भइ भाई । सुनु धर्मनि तुम चित्त लगाई ॥
हरिन एक जो कनक रंग देखा । हीरा रतन मणि जडे विशेखा ॥
देखि सरुप शाह ललचाई । यहि मिरगा कहँ घेरो भाई ॥
आज्ञा पाइ चले असवारा । घेरचो हिरण सेन मंझारा ॥
कहे शाह जो मिरगा जाई । तुमसे मिरगा लेहौं भाई ॥
सेना सब मिलि रोकत भयऊ । मिरगा भागि शाह तर गयऊ ॥
शाह सब से तब कहे पुकारी । मिरगा मारि लाउँ यहि बारी ॥
मिरगा संग सुलतान अकेला । नाहिं कोइ सेना नाहिं कोइ चेला ।
छिन में मिरगा देखि लुपाना । तेहि पीछे धावहि सुलताना ॥
लागी प्यास शाह को भारी । महा भयानक बनहिं मँझारी ॥
वट का वृक्ष तहाँ यक देखा । शीतल छाया बहुत विशेखा ॥
मिला फकीर एक तहँ वासा । कुत्ता दोय रहै उन पासा ॥
शीतलकलशा पानिहि भरिया । जापर ठिलियामठका धरिया ॥
खोजत नीर शाह चलि आये। दुआ सलाम करि वचन सुनाये॥

सुलतान वचन ।

कहे सुलतान प्यास मुहि भारी । जात जान तुम लेहु उबारी ॥

दुर्वेश वचन ।

फकीर दुर्वेश कहावैं । सुरति होय तो भरी पियावैं ॥
पियो शाह जल लियो निवासा । जिन्दे कीना अजब तमाशा ॥

---

१ दूर से आहू उसे आया नजर । पहुँचा उसपर शाह घोडा मार कर ॥
होके वह अपने सवारों से जुदा । पीछे दो फरसंग तक उसके गया ॥
जाते जाते हो गया आहू खडा । बाफसाहत आबिन अद्धम से कहा ॥
तुझको इस खातिर नहीं पैदा किया । वहशियों पर ता करे जौरोजफ़ा ॥
है गरज़ ईजाद से तेरे कुछ और । कर ज़रा तू दिल में अपने आप गौर ॥
बात यह कहकर वह गायब होगया । नक्श उसका शाह के दिलपर हुआ ॥

साखी—गाकर काढी आगिनसे, मिश्रीघृतहि मिलाय ॥
न्यामत धरी रिकाबमें, कुत्तासे कहे खाय ॥

चौपाई ।

कुत्ता न्यामत खाय न भाई । मारे दुरवेश कुत्ता के ताई ॥
ऐसो चरित कीन दुर्वेशा । तबशाहके मनमें भयीअन्देशा ॥

सुलतान वचन ।

कहै शाह तुम सुनो दिवाना । यह पशु जीव न्यामत कह जाना ॥

जिन्दा वचन ।

कहे फ़क़ीर सुनो बे नादाना । जैसा दिया तैसाही खाना ॥
जैसि करे करतूत कमाई । तैसि देह धरि भुगते भाई ॥
यामें फेर फार नहिं होई । जो बोवे लुनिहे वह सोई ॥

सुलतान वचन ।

दोय कर जोरिके विन्ती कीन्हा । साहब तुमरी गति हम चीन्हा ॥
अगम वानी कहो समझाई । आगे कौन हते यह साई ॥

दुर्वेश वचन ।

तब दुर्वेश कहे समझायी । सुनो शाह तुम मन चितलायी ॥
बलख शहर यक नगर रहाई । तहँके हैं यह दोनो राई ॥
इब्राहीम[१] अहै यक राजा । एक बाप अरु दूजो आजा ॥
राज पाय कछु भक्ति न कीना । ताते जन्म श्वान को लीना ॥

---

१ यहां जो शाह इब्राहीम अद्धम साहेबके बाप दादे को बलखका बादशाह लिखाहै यह बात इतिहास और विचार द्वारा एकदम निर्मूल ठहरता है क्यों,कि बलखके बादशाह शाह इब्राहीम के बाप दादे नहीं थे वरन इसके उल्टा उनके पिता एक महान संत थे जो परम विरागमान और एकांतबास करने वाले थे । शाह इब्राहीम की उत्पत्ति की कथा बहुतही रोचक और आश्चर्य दायक है । यहां स्थान भाव सें नहीं दे सकते गुरु की कृपा होगी तो कबीर साहब के जीवन चरित्र के सहित सुलतान चरित्र भी बृहत स्वरूप में लिखेंगे । यहां दोनो कुत्तोंको बलख के बादशाह और शाह इब्राहीम

सुलतान वचन।

तब सुलतान कहे सुनु साई । एक बातऔर कहो समझायी ॥
दोय खूंटे दोय श्वान बंधाये । तीजा खूंटा क्यों खालि रहाये॥

दुर्वेश वचन ।

कहे दुर्वेश सुनोरे भाई । याकी गतिहि कहूँ समझाई॥
इब्राहीम नाम जेहि होई । बलख शहर का राजा सोई ॥
राज माहिं बहुत सुख करिहैं । भाव भक्ति नाहीं मन धरि हैं ॥
विना बन्दगी जिन छूटे देहीं । वे पुनि जनम श्वान को लेहीं॥
इसमें जहूँ आनि के ताही । तब ये तीनों रहें एक ठाहीं ॥
इतनी सुन दुर्वेशहि बाता । शाह के मन में लागी घाता ॥

सुलतान वचन ।

सुनि सुलतान अचम्भा भयऊ । तब दुर्वेश हि पूछन लयऊ ॥
श्वान योनि कस छूटे साई । ताका भेद कहो समझाई ॥

दुर्वेश वचन ।

कहे दुर्वेश भक्ति जो करई । सो नर श्वान देह ना धरई ॥
करे बन्दगी साहिव केरी । दया मिहिर की दशा जो हेरी॥
प्रेम प्रीति परमारथ नीका । माया मोह जाने सब फीका ॥
सब सुख नामहि से लौलावे । सो जिव श्वान जनम नहिं पावे ॥

सुलतान वचन ।

शाह कहे जो लेइ बचाई । सो दुर्वेश साँच है भाई ॥
सो दुर्वेश खुदा का बन्दा । श्वान योनि का काटे फन्दा ॥

अद्धम को बाप दादा बतलाना बहुत ही भूल है इस हेतुसे जाना जाता है कि, इस पुस्तक में भी उत्तरोत्तर मिलावट होतीगयी है और मिलावट करने वाले भी साधारण विचार के जान पडते हैं । ऐसी ऐसी मिलावट और भूलके कारण कबीरपंथी साहित्य की बडी निन्दा होती है । किन्तु बुद्धिमानों को विचार पूर्वकही उसे ग्रहण त्याग करना चाहिये ।

मन में शाहतब ऐसा जाना। यह दुर्वेश है खुदा समाना॥
बार बार मोहि आनि चिताई। सोइ दुर्वेश आपहै साई॥
तब अपने दिल कीन्ह विचारा। इनसे कारज होय हमारा॥
जो यह कहे सोई चित दीजे। इनका वचन मानि शिर लीजे॥
इतना शाह मन करत अन्देशा। नहिं वहँ कुत्ता नहिं दुर्वेशा॥
तबहि शाह मन कीन विचारा। निश्चय है यह सिर्जन हारा॥
साखी–कहे शाह अबकी मिले, पुरवे मनकी आस॥
क़दमें शिरे छुआवहूँ, पलक न छाड़ूँ पास॥

चौपाई।

बन ते शाह नगर में जाई। मन जिन्दा में रहा समाई॥

जिन्दा वचन।

गुप्त रूप तब शब्द उचारा। इब्राहीम सुनु वचन हमारा॥
नाहक जिव तुम मारि उडाई। तैसा हाल तुह्मारा भाई॥
जाहि समय इजराइल[1] ऐहैं। महाभयंकर रूप दिखै हैं॥
हनि हैं मुगदर धरि हैं चोटी। उठै अगिन तब बोटी बोटी॥
ताहि समय पुनि करि हो रोरा। काम न आवे सेन करोरा॥
मारत पंछी दरद न आई। एक दिन ऐसा तुम पर भाई॥
बैन सुनत मुराछित मन माहीं। गुप्त भये पछताने ताहीं॥
कहे शाह खोजो तेहि जायी। जिन ऐसी मुहि बात सुनायी॥
खोजि थके पुनि मुहि नहिं पाये। मुराछित शाह भवन चलि आये॥
तबहि शाह मन ज्ञान समाना। जिन्दा वचन सांच कर माना॥
राज पाट सुख सम्पति देहा। यह सब दीखत स्वप्न सनेहा॥
ज्ञान दृष्टि दिलमें जब आही। छोडेउ तख्त तबे बादशाही॥

१ मुसलमानी धर्मके विश्वास के अनुसार इजराईल एक फिरिश्ता है जो सब प्राणियोंके आत्मा को शरीर से अलग करताहै तब मृत्यु होती है।

होय फकीर जंगल कियो वासा। राज काज की छाडी आसा ॥
सबही लोग नगर के आये। आइ शाह के लागे पाये ॥
काज़ी वज़ीर औ शेखमुलाना। महंत महावत नफर ग़ुलामा ॥
लागे सबही शाह के पाई। सबही मिलि के विन्ती लाई ॥
ऐसी बात न कीजे साई। तुम विन यह परजा दुख पाई ॥
जो तुम तख्त न बैठो राजा। सब परजा को होत अकाजा ॥
राजा से परजा सुख पावे। जहां तहां आनन्द रहावे ॥

सुलतान वचन।

कहे सुलतान सुनो रे भाई। हमतो तख्त के निकट न जाई॥
ना हम पावँ तख्त पर लावें। ना अपने शिर भार चढावें ॥
अब हम तख्त न बैठें आई। बैठे तख्त सो नरकहिं जाई ॥
अब हम राज तजी बादशाही। यम की मार सही नहि जाही ॥
भक्ति विना जिव मुक्ति न पावे। राज करे सो नरकहिं जावे ॥
हमको आज मिले यक साई। सो साहिब ऐसी फरमाई ॥
मैं अपराधी उन्हें न चीन्हा। अध विच छोडि सो मोको दीना॥
अब हम करि हैं कौन उपाई। वह अवसर मुझको कब आई॥

प्रजा बचन।

प्रजा कहे सुनो हो साईं। अब तुम चलो महल के माईं ॥
जो तुम राज छाडि बन जैहों। तो सब संग तुम्हारे ऐहों ॥
साखी—यहां रहन को छोडि के, तुम सँग करिहैं प्यान ॥
ऐसे वचन प्रजा कहि, लाये गृह सुलतान ॥

चौपाई।

जब आये शाह महल मँझारा। उठी बिरह मन माहिं अपारा ॥
अब मैं किस बिधि जिन्दा पाऊँ। उनबिनु होय न मोर बचाऊ ॥
यह सब लोक अहै संसारा। नरक कुँड में डारनहारा ॥

ऐसी करुणा भयि दिल माहीं। जिन्दा महल मिले केहिं ठाहीं॥
भयीं शाह मन बिरह अपारा। जिन्दा जिन्दा करइ पुकारा॥
साखी–उन वनमें मुझको मिले, नाम न दिया वताय॥
इब्राहीम सुलतानको, भयो मिलन को भाय॥

चौपाई।

मूर्छित शाह भवन चलि आवा। मनमें जिन्दा आनि बसावा॥
थोडे दिन विरहा अधिकाई। फिरतो धरम जाल फैलाई॥
माहिं पुनि राज तहँ सुख पाये। माया मोह देखि ललचाये॥
गया ज्ञान सुख में लपटाना। काल शाह घट आनि समाना॥
उरझे शाह स्वाद सुख रंगा। देखि रंग मन बहुत उमंगा॥
पुनि कछु दिवस जो ऐसे वीता। विसरे शाह अल्लाह की चिन्ता॥
ऐसी चाल देखि हम राही। राज न छोडे लोभ मनमाही॥
तब हम रूप जो कीन खवासा। जेहि ते तख्त की छाडे आशा॥
जैसा जिव तैसा तन धारा। कोइ विधि जिव उतारूँ पारा॥
चतुर सहेली रूप आपारा। शोभा अंग अंग अधि कारा॥
होय खवास बाग में जायी। फूल लाय रचि मेज विछायी॥
बहु विधि फूलन सेज विछावें। जहां शाह पौढन नित जावें॥
ऐसहि करत बहुत दिन गयऊ। तब हम एक अचम्भा कियऊ॥
एक दिवस चित ऐसी आयी। ताहि सेज हम पौढे जायी॥
रूप खवासिन तहँ हम कीना। घडी एक पौढी सुख लीना॥
आये महल सेज ढिग शाहा। पौढि सहेली करे सुख लाहा॥
इब्राहीम देखत रिसियाना। मनमाहीं बहुते खिसियाना॥
हमरी सेज आई पौढाना। हमरी त्रास तनिक नहिं माना॥
हांक मारि तिंहि टेरि जगायी। देखत शाह मन क्रोध समायी॥
शाह कहे क्यों पौढी नारी। बढ्यो क्रोध तब ताजन मारी॥

*छन्द–हुकुम कीन शाह तन छीन लाव ताजन मारिये ॥
ताहि पीछे शीस उतारो पकडि भुजा फटकारिये ॥
मारन लागेउ शाह तेही खन हम कौतुक किन्हे ॥
हंसी सहेली रोवे नहीं त्रास अतिशय तेहि दीन्हे ॥
सोरठा–बूझे तेहि सुलतान, मैं मारी तैं क्यों हँसी ॥
कहो साँची सहि दान, कहो सत ना कुम्हलाय मुख ॥

चौपाई ।

बहुत क्रोध करि मारा जबही । बहुतै हंसी सहेली तबही ॥
हँसत सुलतान अचम्भा कीना । निकट बुलाय पूछि तब लीना ॥
निकट बुलाय आप सुलताना । बखश्यो चूक करचो जिवदाना

सुलतानवचन ।

यह तुम मोहि कहो समझायी । मारत तोहि हँसी क्योआयी ॥
सच सच बात कहो निःशंका । तुम जनि मानो हमारी शंका ॥

सहेलीवचन–चौपाई ।

तबहि सहेली करे बखाना । सुनो शाह तुम चतुर सुजाना ॥
एक घडी सुख हम जो लीना । ता कारण इतना दुख दीना ॥

* इस छन्द और उसके नीचेके सोरठाका पुरानी प्रतियोंमें गन्ध भी नहीं है। वरन आगेसे जो चौपाई चली हैं उसका ऊसरकी चौपाईके साथ सम्बन्ध है । यह छन्द और सोरठा किसी महात्मा ने वैराग के जोश में आकर लिखमारा है किन्तु कविताकी कैसी मिट्टी खराबकीहै उसकी बात पाठक छन्द और सोरठा से समझ जायँगे । देखिये सोरठाके प्रथम दोनो चरण तेरह २ मात्रा से पूर्ण हैं और तीसरे चरण में भी १३ मात्रा हैं और चौथे में पन्द्रह । कहाँ तक कहैं इसी प्रकारसे उत्तरोत्तर भट्टाचार्य्योंनें ग्रन्थोके विगाडनेमें ऐसा भागलियाहै कि, जिस्से कवीरपन्थकी साहित्य मृतप्राय होरहीहै । मुझे सब ग्रन्थों के शोधन में कैसी २ कठिनाइयाँ उठानी पडती हैं मैंही जानताहूँ तिस पर भी मुझे कहाँ तक सफलता हुई है पाठक स्वयम समझ सकते हैं । वर्तमान में यद्यपि कुछ २ विद्याकी ओर झुकाव कवीरपन्थियोंकी होरही है तथापि अभी तक दोचारी को छोड कर कोई भी ऐसा कवीरपंथी नहीं है जो अपना कलंक और अपना विचार कवीर साहब अथवा कवीर पँथी साहित्यके के मत्थे न थोपताहो ।

सदा सर्वदा जो सुख करई। तापर मार किती सो परई ॥
कहा करूँ मोहि रही न जायी। ताकरण मोहि हाँसी आयी ॥
उमर भरे सुख कीना ऐसा। ताका हाल होयगा कैसा ॥
या कारण हँसी हम शाहा। कीजे जो तुम्हरे दिल चाहा ॥
राज करइ बहुतै सुख पावे। तन छूटे चौरासी जावे ॥
चौराशीमें है कष्ट अपारा। बिना नाम नहिं होय उबारा ॥
आखिर खाक होय तन तेरा। वचन मानि ले यह अब मोरा ॥
कहा तख्त शज्या सुख पाओ। राह खुदा में चित्त लगाओ ॥
देह मिलेगी खाक तुम्हारी। चतुर सहेली कहे बिचारी ॥
सांची राह गहो तुम शाहा। जन्म पाय कछु लागो लाहा ॥
सतगुरु मिले तो भेद बतावै। जाते जीव मुक्ति घर पावै ॥
तहाँ जाय जिव करे अनन्दा। जनम जनम का मिटे सब फन्दा ॥
साखी *सद्गुरु भेद जो पावई, होय मुक्ति घर बास ॥
जन्म मरन फन्दा मिटे, तब सुख पावे दास ॥

चौपाई।

वचन सुन्यो जब शाह सुजाना। तब कछु दिल में उपज्यो ज्ञाना ॥
तेरा वचन सही सुनु नारी। सब सुख छाँडि अल्लाह चित धारी
शाह विचार कीन मन तबहीं। निकसि जाउँ जंगलविच अबहीं ॥
कहे सहेली सुनु सुलताना। दिलमें धरो अल्लाह को ध्याना ॥
जंगल बडा जेरी जिन देही। हवा हिर्स तजु निज मति एही ॥
नेकी करो बदी तुम छाँडो। दया मिहर दिल अपने माडो ॥
परमारथ पर सब कछु वारो। पाक ज़ात अल्लाह चित धारो ॥
सुनत वचन लागा चितघाऊ। शाह वचन सुनि लागे पाऊ ॥
कहे सहेली ज्ञान अपारा। जो दिल धरो तो उतरो पारा ॥

*यह साखी भी पुरानी प्रतियोंमें नहीं है।

❀सुनि कर शाह अचम्मा भयऊ। ऐसो वचन कबही नहिं कहेऊ॥
भयो ज्ञान शाह सुनि बानी । काल कला फिर आनि समानी
अरुझे शाह स्वाद सुख पायी । भयो मगन मन अति ललचायी
साखी--सखी सहेली सँग लिये, करत रंग अरु राग ॥
विसरे ज्ञान विचार सब, मोह बान उर लाग ॥

चौपाई ।

यक दिन शाह सेजहीं सोया । तोशक झूल बिछौना जोया ॥
देह उष्ण भइ अवसर ताही । नींद न आवे बहुत सिसाही ॥
कोई सखि पंखा पवन ढुरावे । कोइ चन्दन घासि अंग लगावे॥
तबहू नींद न आवे शाहा । बहु व्याकुल अति तन भइ दाहा॥
एक चरित्र तहां हम कीना । सखी रूप धरि दर्शन दीना ॥
सुबुधि सखी जोरे दोइ पाना । सुनिये एक अरज सुलताना ॥
कहूँ वचन परमाथ जानो । सुनत क्रोध जो दिल नहिं आनो
यह तन पाय बहुत सुख कीना । कबहू धनी नहीं दिल दीना ॥
जिन साहिब यह देह बनावा । तख्त सेज सुख राज करावा ॥
कोठा कोट अमीरी भारी । गज औ तुरंग हरष संग नारी ॥
ऐसा साहिब क्यों विसराये । राग रंग चित अति हरषाये ॥
जब वह साहिब कोप कराई । तेहि सभय को होय सहाई ॥
साखी—साहिब रीझे जेहि समय, देइ बिहिश्त को वास ॥
मालिक मेटे पलक में, करइ राज सुख नास॥

चौपाई ।

आखिर देह मिलेगी खाका । साहिब नेह करि होऊ पाका ॥
वचन सुनत चित गहबर भयऊ । आंसू बहुत चक्षु ते गयऊ ॥

---

१ इस चौपाईसे लेकर आगे जिस चौपाई के अंत में इसी प्रकार का फूल दिया है । वहाँ तक पुरानीप्रतियों नहीं है ।

तबहि शाह दिल अपने जाना । नारी में अस होय न ज्ञाना ॥
यह तो मुर्शिद मालिक मेरा । धरयो रूप इन नारी केरा ॥
तबहि शाह दिल माहि विचारा । हम कारण इन यह तन धारा ॥
जो यह कहे मानि शिर लीजे । जाते कारज अपना कीजे ॥
अब मैं वचन मानि शिर लेऊँ । चरण कमल में मस्तक देऊँ ॥
हम पुनि गुप्त भये तेहि थाना । देखत शाह बहुत अकुलाना ॥
कहे शाह कही अस बाता । घाव अचानक किये मुहि जाता
कछु दिन शाह विरहमें रहेऊ । बहुरि शाहदिल मोह सो गहेऊ ॥
तब दिन एक श्वान यक आवा । जाके शीस माहि बड घावा ॥
कीन माथ देह भरि जाही । कल बल करि व्याकुल तन ताही
श्वान बिकल डोले चहुँओरा । आयो शाह ढिग तबही दोरा ॥
सखी सहेली मारन धायी । शाह श्वान कहँ लीन बुलायी ॥
कहे श्वान सुनु शाह सुजाना । हमहूँ रहे बडे सुलताना ॥
सुख सम्पति पुनि तिरिया रंगा । जीव सतावे बहुत अस अंगा ॥
सोना रूप कटक गज बाजा । अंत समय कोइ आवे न काजा ॥
साखी–मातु पिता सुत बाँधव, औरो दुलहिनि नारि ॥
अंत समय सब बिछुरई, यह शोभा दिन चारि ॥

चौपाई ।

प्यासे जल नागे पट दीजै । भूखे नाज मिहर दिल कीजै ॥
जैसी परी आपकहँ जानौ । तैसी सकल जीव पहिचानो ॥
हवा हिर्स तन साधो भाई । साधो पीर मिटै दुचिताई ॥
इतना कही श्वान उठि धाया । सखी सहेली मोह लगाया ॥
पुनि हम कहा गैबकी बानी । सुनहि शाह सह सखी सयानी

आकाश बानी ।

यह नर नरकहि फेर बनाया । तुम तो वहुत नरक मन लाया ॥
सखी सहेली काम न आवे । जबही धरि यम आनि सतावे

तात मात सुत नारि खज़ाना । काम न आवे सब विलगाना ॥
झूठें करें खुशामद तेरा । बांधे यम तब देख घनेरा ॥
उठि अकुलाय शाह चित लागा। देखे नहिं उपजे अनुरागा ॥
दया मिहर घट आन समाना । छोडे जीव बात अभिमाना ॥
पीर शाह के घटहि समायी । भूखे नंगे सब दीन बुलायी ॥
मनमां कहे करो सो पीरा । जिन दिन्ह मोही चेत शरीरा ॥
प्रेम विरह निशिदिन चित लागा। अकह नाम सुमिरन अनुरागा
जेहि दिवस छूटे मम जामा । झूठा सुख नहिं आवे कामा ॥
यक दिन शाह किये असवारी । बलख शहर देखा निरुवारी ॥
कहवाँ देखों पीर सुजाना । जिन मुहि कहा भेद निर्वाना॥
डेरा सहित सखी रंग सैना । चले बेगि चित नाहि न चैना ॥
बैठा एक ऊंट ताजि प्राना । पहुँचे आप तहाँ सुलताना ॥
देखि ऊँट दिल भये उदासा । रोवे बहुत विकल धरि स्वासा॥
ऐसी गति यक दिवस हमारी । अपने मनमें यही विचारी ॥
माया मोह अहै जंजाला । दिना चार का झूठा ख्याला ॥
इब्राहीम कह्यो गोहराई । जाहु सबे अपने घर भाई ॥

*छंद—गजसे उतरि ठाढे भये सबदिये भूषण डारिहो ॥
चोला पहिर शिर ताज दे तब चले निर्धार हो ॥
सेना सकल विलखित बदन सब करहिं शोर सहेलियाँ॥
मम खबर लय को सखी शिर कूटि मरहिं सहेलियाँ ॥

सोरठा—घेरि राह सब लोग, कोइ न छोडहिं शाहको ॥
ऐसे सबको सोग, पुत्र मरे जिमि विकल जग ॥

* पुरानी प्रतियोंमें समस्त ग्रन्थभरमें छन्दका गन्धभी नहींहै किन्तु नयीप्रतियोंमें ये बेतुकी छन्द कई मिलतेहैं । इसीप्रकार से कई सोरठे और दोहे (साखी) की भीपायाहै । पुरानी प्रतियोंमें तो वह हैही नहींहैं किन्तु नई प्रतियोंमें एक दम बेतुक हैं ।

छन्द–कहे शाहको समझ दिल हमरी खबर को लेइगा ॥
सब माहि दाता सबन को सो सबन भक्षण देइगा ॥
मां के रहे शिकम[1] में तहाँ को खबर जग लेत है ॥
जल थल है घट सकल पूरण जो जहाँ तहँ देत है ॥
सोरठा[2]–साझ कहे भोरे एक हन, सुनत दिन बीति गये ॥
शाहदिये नहि चैन, पिछले पहर उठि चले ॥

चौपाई।

निकलत शाह कोई नहिं जाना। उठि चल्यो जंगल कहँ सुलताना।
नंगे पावँ पनही नहिं लीना। ऐसे शाह धनी दिल दीना ॥
स्वाद सलाह तजी सुख गेहा। राज पाट जान्यो सब खेहा ॥
साखी[3]–सोलह सै सहेलियाँ, तुरी अढारह लख ॥
साई तेरे कारणे, छोडा शहर बलख ॥

चौपाई।

सकल छोडि के भये फकीरा। लागे विरह बान गंभीरा ॥
पिव कारण तज्यो सव आशा। जगत नेह तजि भये उदासा ॥
शाह निपट बहुतहि सुकुमारा। तिन सुख तजि गह्यो दुःखपारा॥
क्षुधा लगे कोइ जांचे नाहीं। गहि संतोष रहे मन माहीं ॥
छन्द–पाँव छाले पडि गये चलि पंथ पग थहरावई ॥
कोइ संग आगे पाछे नाहीं धूप लगे कुम्हलावई ॥
अन्न बिना दिन तीन बीते हरष शोक नहिं चित गहे ॥
शाह निशि दिन अति बिरागी नाम अबिचल पद चहे ॥

---

१ पेट। २ वर्तमान के अथवा इस के थोडेदिन प्रथमके परम भक्त महात्माओंके विद्वत्ताके नमूने के लिये यह सोरठा जैसाका तैसा रक्खाहै।

३ पुरानी प्रतियों में इसी साखी से पुस्तक की समाप्ति होती है किन्तु इसके प्रथम बहुत कुछ विषय है सो इस पुस्तक में आगे आवेगा इस नोट में इस विषय में बिशेष नहीं लिखा जासकता ग्रन्थके अन्त में "ग्रन्थ विवेचन" नामक हेडिंगके नीचे लिखा जायगा।

सोरठा–तब साहब कछु दीन, रूखा सूखा टूकडा ॥
शीस नायके लीन, खरी कसौटी नामकी ॥

चौपाई ।

कछु भायो कछु औरहि दीना । मनमें नाहिं गुनावन कीना ॥
जो मुख पांचो अमृत पावत । सो मुख सूखा टुकडा खावत ॥
आसन वासन अभूषण नाना । सो सब तजे भूरि मनमाना ॥
जेहि लागी तिन ऐसी कीन्हा । कहे कबीर प्रेम मन चीन्हा ॥
प्रेम गली अति सांकरि भाई । राई दशवां भाग रहाई ॥
मन अहि रावत किस विधि जावे । विरले संत कोइ मारग पावे ॥
साखी–प्रेम बन्ध अति दुर्लभ, सब कोइ सके न जाय ॥
चढना मोम तुरंग पर, चलना पावक माय ॥
छन्द–मिही सुई को नाको जिमि तिमि इश्क मारग ठानिया ॥
ताहीते कोउ झीनि होइ के प्रेम अगम गम जानिया ॥
जिन करि फना मरो आपको सो लहें सुखको धामहो ॥
कहें कबीर आप जहां तहां नहिं मिलत अराम हो ॥
सोरठा–मन महँ शाह उदास, कबहुंक दरश मैं पाइहौं ॥
पुरवहि मोरी आस, प्रगट रूप जब देखिहौं ॥
जबहि शाह घट विरह समायी । दोय कर जोरि के विन्ती लायी
दीन दयाल दया अब कीजे । अपना दर्शन मोको दीजे ॥
शब्द[1] स्वरूपरहिरूप छिपाओ । प्रकटरूप मुहिदरश दिखाओ ॥
जब हम लगन शाह घट चीन्हा । तब हम रूप प्रकट तहँ कीन्हा ॥

---

१ पुरानी प्रतियों में यह चौपाई इस प्रकार है ।
नारि रूप तुम लेउ छिपाई । पुरुष रूप धारि दरश दिखाई ॥
और इसका सम्बन्ध उस कथासे है जहाँ सहेली बादशाहके सेजपर सोगयी है और उसे मार पडा है । पर जब सखीने बादशाहको समझाया है तब बादशाह अपने मन में विचारने लगा है कि ।

धन्यो स्वरूप अंग उजियारा। जगमग ज्योति तेज चमकारा॥
उठत सुगन्ध अंग बहुताई। परिमल बास महेके सब ठाई॥
बहुत कान्ति दीसे उजियारा। देखि शाह भये हर्ष अपारा॥
तबही शाह चरण लपटाये। दोइ कर जोरिके विन्ती लाये॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना॥
लगे शाह सतगुरु के चरना। अब मुहि राखो साहब शरना॥
धन्य धन्य तुम आपु गुसाईं। अपना भेद कहो समझाई॥
कहँ तुम रहौ कहांते आये। वह सब गम्य कहो समझाये॥
साहिब अपना नाम बताओ। अपना जानि जीव मुकताओ॥
अबतो यह कला जानि हम पायी। साहिब हमको दरश दिखायी॥
तुमबिनु दया करे को ऐसा। जनम मरन का मेटे संसा॥
अब मुहि मुर्शिद भेद बताओ। तुम साहिब हम बन्दा आओ॥

कबीर वचन।

कहे कबीर सुनो चित लाये। अमर लोकते हम चलि आये॥
नाम कबीर हमारा होई। हंस उबारन आये सोई॥

चौपाई।

कहे सहेली ज्ञान अपारा। जो दिल धारो तो उतरो पारा॥
तबे शाह दिल अपने जाना। नारीमें अस होय न ज्ञाना॥
यहतो है खुद साहिब मेरा। धरा रूप इन ख्वासिन केरा॥
तबे शाह दिल माहि विचारा। हम कारन इतना तन धारा॥
जो यह कहे मानि सो लीजै। जाते काज आपनो कीजै॥
जो मैं वचन मानि शिर लेऊँ। चरण कमल में मस्तक देऊँ॥
जबे शाह घट प्रेम समायी। दोय कर जोरि उन विन्ती लायी॥
धन्य भाग मुहि दर्शन दीना। पतित जीव पावन करि लीना॥
शाह लगे सतगुरु के चरना। अब मुहि साहिब राखो शरणा॥
दीन दयाल दया अब कीजे। अपना दर्शन मोकहँ दीजे॥
नारि रूप तुम लेहु छिपायी। पुरुष रूप धारि दरश दिखायी॥

इसके आगे जो पुरानी प्रतियोंमें आयी है सो यहाँ भी वही बात आयीहै।

जो जिव माने शब्द हमारा । सो जिव उतरे भौजल पारा ॥
तबही शाह भये आधीना । शिर लेइ चरण कमल में दीना ॥
चरण पखारि चरणामृत लीन्हा। प्रेम भाव सतगुरु कहँ चीन्हा ॥

सुलतान वचन ।

अब कीजे मम साहिब काजा । जाते नहिं छेडे यम राजा ॥
सोई नाम मुहि देहु बतायी । जाते जीव अमर घर पायी ॥

कबीर वचन ।

कहें कबीर मुक्ति तब पावे । सुरति निरति ले शब्द समावे ॥
उन्मुनि ध्यान रहो लौ लाई । अजपा जपो सदा दिल भाई ॥
निशि दिन मनुवा अस्थिर राखो।नाम अमीरस रसना चाखो ॥
नाम प्रताप मुक्ति जिव पावे । जनम मरण को दुःख मिटावे॥
गहो नाम सत्यलोक सिधावो । तहां जाय बहुते सुख पावो ॥
वहिं घर हंसा करई आनन्दा । काटे कर्म कालको फन्दा ॥
बहुविधि शोभा रूप अनूपा । षोडश रवि सो हँसको रूपा ॥
किया चहो तुम अपनो काजो * ।यम तृण तोरि आरती साजो॥
सहज चौका करि दीनो पाना । यम का बन्धन हृदय उठाना ॥
अमर अंक जो परवाना पावे ।काल कला तजि लोक सिधावे॥
प्रथम पान परवाना लेई । पीछे सारशब्द तेहि देई ॥
तब सतगुरु ने अलख लखाया । करि परतीति परम पदपाया ॥
ऐसी रहनी गहे जो कोई । सतगुरु पद पावे नर सोई ॥
तन मन धनका मोह बिसारे । सो हंसा सत्य लोक सिधारे ॥
सोरठा–शाह किये तन खाक, अपने पिव के कारने ॥
खाक मिली भये पाक, आदमते भये औलिया ॥

---

* इस आधी चौपाई तक तो पुरानी प्रति के अनुसारहै। इसके प्रथम जो गडबडहै वह वह टिप्पणियों द्वारा दिखलायी चुकाहूँ। अब यहां से जो गडबडहै सो नवीन प्रति की पंक्ति पूरी हो जानेपर ऐसी फूटके चिन्ह के साथ उसे भीदेंदूगे ।

सुनो धर्मदास सुजान, शाह भये जीवन मुक्त ॥
पद पाये निर्वान, शब्द परखि करनी किये ॥

चौपाई ।

धरम दास चित अति हर्षाये । प्रभुलीला तुव वरणि न जाये॥
शाह काज धारे प्रभु रूपा । सखी नाम धर कला अनूपा ॥
अमित कला जीवन सुखदाता । भव बूडत राखे शठ त्राता ॥
अधम उधारण नाम तुम्हारा । बहुत जीव कीने भवपारा ॥
महा नेह तुव चरण लगावा । यश रह्यो और परम पद पावा
साखी-सत्य कबीर समरथ धनी, दोऊ दीन के ईश ॥
सुयश सुन्यो सुलतान को, धर्मनि नायो शीश ॥

नबीन प्रतियोंमें पुस्तक यहां आकर समाप्त होतीहै किन्तु पुरानी प्रतियोंमें ७३२-२८ पृष्ठके पक्ति की आधी चौपाई "किया चहो तुम आपनो काजो" के आगे की बाणी उपर्युक्त नबीन प्रतिसे एकदम विरुद्ध नीचे लिखे अनुसार है ।

और नवीन प्रति से पुरानी प्रतिके अंत के एक समान न मिलने का कारण उसे पृष्ठ की टिप्पणी में दे दियाहै । और विशेष वृतान्त पुस्तक की समाप्ति में देंगे ।

चौपाई ।

किया चहो तुम आपना काजू । तुम्हारो राज छोडिदो आजू ॥
सतगुरु नाम गहो बिश्वासा । जाते मिटत कालको त्रासा ॥
यहि सुनि शाह तख्त तब छाडा । प्रकटे ज्ञान हिया गुण बाडा ॥
तब सतगुरु ने अलख लखाया । करी प्रतीति परम पद पाया ॥
साखी[1]-सोलह सै सहेलियाँ, तुरी अठारह लख ॥
साई केरे कारणे, छोडा शहरबलख ॥

इति ।

---

१ यह सखी एक स्थान में औरभी आगयी है ।

ग्रन्थ विवेचन।

इस ग्रन्थकी कई प्रतियाँ मेरे पास उपस्थितहैं जिनमेंसे कोई पुरानी सौबर्षसे अधिक की लिखी हुइभी हैं किन्तु पुरानी प्रति की अपेक्षा उत्तोत्तर २ जैसे२नवीन पुस्तक लिखी गयीहै सबमें कुछ वृद्धि और प्रसंगका उलट फेर और छन्दोभंग का समावेश होता गयाहै। नवीन प्रतियोंके अन्तमें कई पुस्तकोंमें किसी किसी महात्माओंने अपना नाम लिखकर अपने को पुस्तकका कर्ता सिद्ध करना चाहाहै। चाहा तो सब कुछ है किन्तु लिखते लिखते दोहा और सोरठा भी शुद्ध नहीं लिख सकेहैं। सबसे जो पुरानी प्रति मेरे पास मौजूदहैं वह नवीन सब प्रतियों से अधिक शुद्ध औरछोटीहै और उसका आरम्भभी "बलख शहर एक नगर अनूपा" से होताहै ठीक उसके उल्टा नवीन प्रतियोंका आरम्भ "धर्मदास उठि विन्ती लाई" से होताहै। इसी प्रकार से पुरानी प्रतियोंकीअपेक्षा नवीन प्रतियों के मध्य मध्यमें अधिक कथाएँ इतनी मिलायी गयी हैं कि, पुस्तक डेवढी होगयीहै। इतनीही नहीं है कि, विषय बढाया गयाहै किन्तु साथही साथ थोडे २ वचन किसी में एक दोहा किसी में एक छंद(जो सब अशुद्ध हैं) वढाकर बढाने वाले महाशय ग्रन्थ के कर्ता बनगये हैं। यद्यपि मैंने इस पुस्तक को सब प्रतियोंके अनुसार ठीक करदियाहै तथापि जहां २ विषयोंका उलट फेर अथवा घटाव बढाव हुआहै वहां टिप्पणी देदीहै। इस ग्रन्थकी पुरानी प्रतिमें कवीर पंथकी अन्य ग्रन्थों के समान किसी कर्ता का नाम तो है नहीं किन्तु नवीन प्रतियों में कई कर्ताओंका नाम है इससे किसी एक कर्ताका नाम निश्चय करने में अशक्ति होकर मैंने किसीका नाम

नहीं दिया है और यथार्थ में हैही यहीबात कि कबीरपंथ की जैसी और पुस्तकों में कर्ता का नाम नहीं है किन्तु वह कबीरपंथी पुस्तक कहलाती हैं और कबीर साहिब तथा धर्म दास साहबके सम्बाद में लिखी गयीहैं ॥

इस पुस्तक के अतिरिक्त और भी निर्भयज्ञान आदि अनेक पुस्तकों में सुलतान इब्राहीम अद्धम के विषय में बहुत कुछ बात आयी है जिनमें परस्पर बहुतही भेद हैं और कितने विषय ऐसे हैं जो एक में हैं और दूसरे में नहीं हैं । इसकारण शाह इब्राहीम अद्धम साहेब का वृतान्त गद्यमें संक्षेप लिखदेताहूँ क्योंकि विस्तारसे लिखने के लिये एक स्वतंत्र पुस्तक लिखने-का विचारहै ।

सुलतान शाह इब्राहीम अद्धम साहिबका संक्षेप चरित्र ।

उत्पत्ति ।

इस सुलतान इब्राहीम शाह के पिताका नाम अद्धम शाह था । आप संसार त्यागी फकीर थे । अपनी फकीरी और तप-स्यामें पूरेथे । बस्ती से सदा अलग रहतेथे । प्रारब्धि से जो कन्द, मूल, फल अथवा नाज मिल जाता था उसी पर अपना समय बितातेथे किन्तु कभी एक स्थान में जम कर नहीं रहते थे । कभी उनने घर नहीं बांधा । कहाभीहै कि,

साखी—बहता पानी निर्मला, बन्धागन्दा होय ।
साधू जन रमते भले, दाग न लागे कोय ॥

कुछ समय तक तो ऐसेही निःसंग फिरतेरहे । फिरते फिरते एक बार बलख शहर में पहुंचे । ठहरने के लिये तो शहर से दूर उन्होने जंगल में निश्चय किया किन्तु नित्य शहर में फिरने के

लिये जाया करते। एक दिन संयोगसे बलख के बादशाहकी लड़की को देख लिया।अबतो ज्ञानध्यान सब वैराग भूलगया। उस शाहजादी पर उनका मन ऐसा आशक्त हुआ कि, उसी के विरह में दिन रात फिरने लगे। अन्त में उसके मिलने का कोई उपाय न देख कर स्वयम् उन्हों ने बादशाह के पास जाकर अपने विवाह के लिये प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को सुनकर बादशाह तो सन्न हो गया। वह शोचने लगा कि, ऐसे फकीर भीख मांगते को कन्या देकर उसे दुख सागरमें डुबाना है। बादशाहने ऐसा मनही मन विचार तो किया किन्तु आस्तिक होने के कारणसे दुर्वेश की बददुआ (शाप) से डरकर कुछ बोल नहीं सका और उसने दूसरे दिन फिर उन्हे आनेको कहा। उनके चले जाने पर बादशाह और वजीर ने परस्पपर विचार करके अद्धमशाह कोटाल देनेका उपाय निश्चय किया और जब नियत समय पर अद्धमशाह बादशाहके पास पहुंचे तब वजीरने उनसे कहा कि, शाहजादीने अपने विवाहके लिये यह प्रतिज्ञा कीहै कि,नमूनेके अनुसार जो कोई दूसरा मोती ले आवेगा उसीके साथ वह विवाह करेगी। अद्धमशाहने वज़ीरको बहुत कुछ समझाया बुझाया गिडगिडाये रोये कल्पे किन्तु वजीरने एकभी न मानी। अन्तमें वजीरसे शपथपूर्वक वचन लेकर वह मोतीकी खोज करनेको निकले और दोवर्षतक देश २ नगर २ ग्राम २ भटकते फिरे अन्तमें यह सुनकर कि मोती खारे समुद्रमें उत्तपन्न होताहै खारे समुद्रके किनारे पहुंचे वहां पहुंचकर उन्होंने अपने खप्परसे पानी भरकर रेतमें फेकना अरम्भ किया, इसप्रकारसे पानी फेंकते फेंकते जब उन्हें चालीस दिन बीत गये तब परम दयालु सत्यपुरुषकी आज्ञासे सद्गुरु उनके निकट समुद्र तटपर पहुंचे। वहां पहुंचकर सद्गुरुने अद्धमशाहसे पूछा कि,

हे भाई तू यह क्या कररहा है? समुद्रके पानीको उलचनेने तुझे क्या लाभहै? अद्धमशाह तो अपने काममें ऐसे मग्नथे कि, उन्हे कुछभी सुधि नहीं हुई कि, कौन मुझसे क्या पूछताहै। जब सद्गुरुने कईबार पूछा और निकट जाकर उन्हे सचेत करके कहा कि, तुझे जो चाहिये मुझसे कह तेरेही लिये सत्यपुरुषने मुझे तेरे पास भेजाहै।सद्गुरुकी इतनी वातको सुनकर अद्धमशाहको कुछ चेत हुआ और उन्होंने अपना सब वृतान्त आदिसे अन्ततक सुनाकर सद्गुरुसे कहा कि,यदि सत्यपुरुषने कृपाकीहै और आप मेरे दुखको दूर करनेके लिये आयेहैं तब मुझको वैसाही मोती जैसा शाहज़ादीने मांगाहै दीजिये। अद्धमशाहकी ऐसी इच्छाको सुनकर सद्गुरुने उन्हे समझाया कि, तू उस सच्चे साहिबका भजन कर जिसने तुझे और शाहज़ादी दोनोंको उत्पन्न कियाहै। सद्गुरुने वहुत कुछ ज्ञान और विवेक वैरागका अद्धम शाहको उपदेश किया किन्तु उन्होंने एकभी नहीं माना वरन उलटकर उनने उत्तर दिया कि, मैंतो मोतीका मिलना और शहाज़ादीसे विवाह करनाही परम भजन समझताहूँ मुझे दूसरेसे कछ सम्बन्ध नहीं है" ?

फिरसद्गुरुने कहा समुद्रका पानी तू क्यों उलचता है? तब अद्धम शाह ने उत्तर दिया कि,इसी प्रकार से उलचते उलचते समुद्रको सुखा दूंगा और समुद्र के सूखनेपर मोती लेकर जाऊंगा तब शाहजादीसे विवाह करूंगा। सद्गुरुने हंसकर कहा कि, भला यह कब सम्भवहै कि, तेरे उलचनेसे समुद्र सूख जाये और तू मोती पावे अद्धम शाहने उत्तर दिया कि, समुद्र सूखे या न सूखे जब तक दममें दमहै तबतक मैं अपने कामसे पीछा न फिरूंगा। इतना कहकर उनने कहा यदि सत्य पुरुषने आपको

मेरा दुख दूर करनेको भेजाहै तो आप मुझे उसी जोडके मोती दीजिये ?

जब सद्गुरुने देखा कि, अद्धमशाह अपने निश्चयसे नहीं टलताहै और उसको मोतीके सिवाय दूसरा कुछ नहीं सूझता है तब सद्गुरुने कहा कि,हे अद्धमशाह आंख बन्दकर। सद्गुरु की आज्ञाको पाकर अद्धमशाह आंख बन्द करके अन्तरमें सद्गुरु का ध्यान करने लगे। उधर तो वह ध्यानमें मस्तथे इधर सद्गुरुकी आज्ञा पाकर समुद्रने लहर मारा और हजारों सीप रेतमें डाल गया। लहरके हटजानेपर जब अद्धमशाहने आंख खोली तब क्या देखा कि, सहस्रों मोतीके सीपोंका ढेर लगाहै। मोतियोंका ढेर तोपड़ाहै किन्तु सद्गुरुका पता नहीं है। फिरतो अद्धमशाहने मोती देखना आरम्भ किया। देखते २ वह ऐसे आश्चर्यमें फंसे कि, उन्हे यह निश्चय करना कठिन होगया कि, किसको लेवें और किसको न लेवें। अन्तमें चालीस बडे २ मोती चुनकर अपने कमरमें रक्षापर्वक बांधकर रवाना हुए।

चलते २ कुछ दिनोमें जब बलखमें पहुचें तब सीधे धड धडाते हुए बादशाहकी कचहरीमें पहुंचे। उस समय बादशाह की कचहरी लगी हुईथी। इनके पहुंचतेही बादशाह और वजीर दोनोंकी दृष्टि उनपर पड़ी। देखते ही वज़ीर आग बगोला बन गया। वजीरके क्रोधकरनेका कारण यह था कि, जिस समय अद्धमशाह और वजीरसे इस बात की प्रतिज्ञा हुईथी कि, मोती लेकर आनेपर शाहजादीसे उनका विवाह करा दिया जायगा, उसी समय वजीरने अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा लीथी कि, यदि मोती तुम न ला सको तो बलख शहरमें फिर

दुबारा नहीं आना। और यदि आओ तो तुम्हारी गर्दन मारी जाय। वजीरको अद्धमशाहसे ऐसी प्रतिज्ञा लेनेका यह आशय था कि, अद्धमशाह जैसे फकीरको न मोती मिलेगा न वह फिर आयगा और न उसका विवाह शाहजादीसे होगा। यही कारण था कि, अद्धमशाहको देखतेही वजीरने क्रोध करके कहा कि, ओ अद्धम! तू अपनी प्रतिज्ञाको भूलकर फिर यहां आयाहै? इस कारण प्रतिज्ञाके अनुसार तेरा शिर धडसे अलग किया जायगा। वजीरके अहंकार भरे वचनको सुनकर अद्धमशाहने कहा ओ बेखबर तुझे क्या खबरहै कि, प्रभुने तेरे नमूनेके मोतीसे भी बढकर बहु मूल्य इतने मोती मुझको दियेहैं कि, जितना तेरे संकल्प में भी नहीं आ सकताहै। प्रभुने तो बहुत दियेथे किन्तु मैंने चालीस चुनकर लेलियेहैं। अद्धमशाहने इतना कहकर अपनी झोलीसे चालीसो मोती निकालकर बादशाहके मसनदपर गिनके पंक्ति लगाकर रख दिये॥ मोतियोंके निकलतेही चारों ओर उसके प्रकाश फैल गया। जौहरियों और परखियोंसे आश्चर्य में आकर अबाक रहने के अतिरिक्त कुछ न बन पडा। बादशाहकी तो बुद्धिही ठिकाने न रही वह शोचने लगा कि, अबतो अवश्य शाहजादीका विवाह इसके साथ करदेना पडेगा। अन्तमें बादशाह ने तो यह निश्चय किया कि, अब शाहजादी का विवाह उसी फकीरसे कर देना अच्छा है किन्तु राजदर्बार का कामहै। राजनीति के नियमानुसार बादशाह एकान्तमें जाकर अपने वजीर और-परिवारोंसे इस विषयमें विचार करने लगा कि, शाहजादीको अद्धमशाहसे विवाहना चाहिये कि नहीं, उस समय उसी वजीरने जिसने प्रथम बार प्रतिज्ञा कराकर अद्धमशाहको मोती लानेकेलिये भेजा।

था उस समय भी विघ्न डालनेके लिये कहना आरम्भ किया ।

पूछी फिर शाहने वजीरोंसे सलाह ।
सब सगीरों कबीरोंसे सलाह ॥
जो कि औवलमें हुआथा नेशज़न ।
फिर हुआ इस प्रकारका वह बेखकुन ॥
उक्दसे माना हुआ फिर वह वजीर ।
क्योंकि था हर अमरमें शहका मशीर ॥
हीला व हुज्जत ब्याँ करने लगा ।
नुक्ता औ ऐब उनके अयाँ करने लगा ॥
कुबह कुछ उसने किये ऐसे बयाँ ।
होगया खामोश वह शाहे जहाँ ॥

उसवज़ीरफित्नेजोनेफिरकहा । आपघरमेंहूजियेरोनकफ़िज़ा ॥
अहद्ओपैमाँमुझसेहैदुर्वेशका । आपअन्देशानकीजेकुछजरा ॥
सौंपिये यह काममेरीरायपर । लाइयेदिलमेंनकुछखौफोखतर ॥
याद रखियेआपयहमेरीहदीस । इसकेहैताबाकोईजिन्नेखबीस ॥
क़अरसेदरियाकेगोतामारकर । लादियेहैंउसनेयह नादिरगोहर ॥
यहकरामतपरनहीं इसकीदलीलहैबनावटइसकीऐशाहेजलील॥
ऐसेमरवादीदवरनःयहफकीर । लाताक्योंकरऐशहेआफ़ाक़गीर॥
हैनज़रबन्दोमें भी यहदस्तगाह । गुर्दःनानको बना देतेहैं माह ॥
योंकियाहैइसनेयहमकरोदगल।पासइसकेहैकोईसिफलीअमल ॥
संगरेजाजिससेआतेहोंनज़र । ख़ल्ककीआँखोंमेंताविन्दःगोहर ॥
यहजोयोंरोशनतरअज़ खुर्शेदहैं । यहबनावटहीके मरवारीदहैं ॥
मोतियोंमेंयहदरखशानीकहाँ । यहचमकयहनूरअफ़शानीकहाँ ॥
अबकुछइसकोनसमझेजन्नबद । नूरताविन्दःहैमर्दुमकीखेरद ॥
मुझको आताहै नज़रउसनूरसे । मकरवहीलाइसगदाकादूरसे ॥

सादिकोबरहकहैयहकौलेलबीब। हैव्यानेआदमीसिहरेअजीब ॥
बादशाहसुनकरयहतकरीरेवज़ीर। होगयादामेतवहुममेंअसीर ॥
करकेआखिरकारतफ़वीज़ेवज़ीर। बादशाहघरमेंहुआरौनकपज़ीर
कहगया उससेकितूमुख्तारहै। नेकवबदकाइसकेतुझपरबारहै ॥
लैकबदअहदी है इन्दुल्लाहबद। है नतीजा ऐ खेरदआगाह बद ॥
कीजियोकुछतदबीरऐसीवज़ीर। तंगजिससेहोनयहमर्देफ़कीर ॥
घरमेंअपनेबादशाहदाखिलहुआरहगयाउसकावज़ीरऔरवहगदा

इस प्रकारसे बादशाहको समझा बुझाकर वज़ीरने महलमें भेजदिया। अब अद्धमशाह और वज़ीर रह गये तब वज़ीरने अद्धमशाहसे कहा-

उसको धमकाकर लगाकहने वज़ीर।
क्या हुआहै तुझको ऐ मरद कफ़कीर ॥

तूजो यों गुस्ताखेकरतौहकलाम। बरमलालेताहैशहज़ादीकानाम।
तुझकोहंकुछअक्कभी ऐ बेहया। शहजादीवहहैतूमुफलिस गदा ॥
नाम शहजादीका गरतूने लिया। होगाहरहरबन्दतेराजुदा ॥
काटकर तेगोंसे मैं तेरीजुबाँ। दारपरखींचूँगा तुझको बेगुमाँ ॥
जिस्तगरचाहेतोइश्तगफार कर। इसख्यालेखामसेअपनेगुजर॥

वजीरकी धमकी और विश्वासघातकी बातको सुनकर अद्धमशाह बहुतही दुःखी हुए और फिर अपनेको सँभालकर वजीरसे कहने लगे-

जबसुनीअद्धमनेउसकीगुफ्तगू। बोलाऐबदअहदनासंजीदःखू ॥
भूलताहैउसखुदायपाकको। जिसने यह रुत्बः दियाहै खाकको॥
तूनेवहजामिनदियाथादरम्याँ। जिससेकायमैहजमीनोआसमाँ ॥
आलिमो दामा व दारायजहाँ। कादिरे मुतलक शहे शाहन शाहाँ॥

गुलजार इब्राहीमसे।

क्याहुएवहअहदोंपैमा ऐ वजीर । कौलो एकरारेईमाँऐवजीर ॥
अहदकरतेहैंवफाअपनाकरीम।किज्बवबदअहदीहैकिरदारेलईम।
उक्दउसकागरमुझसेकरनानथा । अहदक्योंतूनेकियाऐबेवफा ॥

अद्धम शाहने वजीरसे कहा यदि तुझको अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनीही नहीं थी तो तूने मुझसे प्रतिज्ञा करके और मुझसे प्रतिज्ञा कराके दोवर्ष तक मुझे क्यों भटकाया। देख तूने ईश्वरको साक्षी रखकर प्रतिज्ञा की और करायीथी अब विश्वासघात मतकर इस विश्वासघातकाफल अच्छा न होगा। देख! आज उच्च पदवी को पहुंचाहै तो फकीरों और दीन दुखियोंको इस प्रकार दुःख देताहै, विचारकर! किसीका अभिमान आजतक नहीं रहाहै। इस संसारमें आकर मायाके चमक दमकमें पड़कर जिस जिसने गर्व कियाहै सबका गर्व टूटाहै किसीका गर्वभी रहा नहीं है? अब तू विश्वासघात मत कर और जिस प्रकार मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीहै उसी प्रकार तूभी अपना वचन रख। इसप्रिकारसे परस्पर अनेक प्रकारकी नोक झोंककी बातें होनेके पश्चात् वजीर बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने नौकरों को आज्ञादी कि, अद्धमशाहको इतना मारो कि, यह जीता न बचे। फिर क्याथा वजीरकी आज्ञाको पाकर निर्दयी नौकर चारों ओरसे टूट पड़े। किसीने लकडी उठायी तो किसीने कोडा लिया। संक्षेपतः यह कि, जिसको जो मिला उसने वही ले लिया और चारों ओरसे अद्धमशाहके ऊपर मार पडने लगी। अन्तमें जब वह एक दम अचेत होगये श्वासोच्छ्वास की क्रिया रुक गयी जब मारनेवालेंने समझ लिया कि, वह मरगया है तब वजीरकी आज्ञासे वस्तीसे दूर जंगलमें डाल आये

इधर अद्धमशाहकी यह गति हुई उधर बादशाहकी बेटीके

हृदयमें शूल उठा और उस दर्दने थोडीही देरमें ऐसा बल पकडा कि, हजारा वैद्य और उपाय करनेवालोंके रहते हुएभी शाहजादी को कुछ आराम नहीं हुआ। तीन चार घडीमें वह मरगयी। अब क्या था बलख शहर में हाहा कार मचगया। शोकने आकर समस्त नगर में निवास किया। यदि उस समयके शोकका वर्णन लिखने लग जाऊं तो एक दूसरी और बडी पुस्तक बन जाये इस कारण संक्षेपमें लिखना यह है कि, बादशाहको सिवाय इस शाहजादीके दूसरी संतान न होनेके कारण सर्वत्र शोकही शोक फैल गया। संक्षेपतः यह कि शाहजादीकी मृतकको लेकर कब्रकी अन्तिम क्रिया करके सबलोग लौटकर चले आये।

इधर अद्धमशाहकी आयु शेष रहनेके कारण सद्गुरुकी कृपासे दिनभर अचेत पडे रहनेके पश्चात् दोघडी दिनरहते वह सचेत हुए।सचेत होतेही शिर उठाकर देखा तो जंगलके सिवाय कुछ नहीं दीख पडा। नतो शाही महलहै, न वजीरका दर्बार न उनके मोती। इस प्रकारसे चारों ओर शून्यही शून्य देखकर अद्धमशाह प्रथम तो आश्चर्यमें आये किन्तु उनका आश्चर्य जाता रहा और इश्कका जोश फिर अन्तःकरणमें उठा। फिर तो अद्धमशाह सीधा शहरको पहुँचे। शहरमें पहुँचकर उनने चारों ओर शोक फैला हुआ देखकर जिससे पूछते वही कहता कि,शाहजादी मरगयी। प्रथमतो उन्हे लोगोंके कहनेका विश्वास नहीं हुआ किन्तु जब शाही महलके द्वारपर पहुँचे और वहांभी लोगोंको शोकमें विकल देखा और चारों ओरसे हाय! हाय! की ध्वनि सुनी तब उन्हे विश्वास हुआ कि, सचमुच शाहजादीका परलोकबास होगया।इस बातके निश्चय होतेही

उनके हृदयपर ऐसा आघात लगा कि, जहां खडेथे वहाँ ही वह अचेत होकर गिरगये और उसी अवस्थामें उससमय तक पड़ेरहे जब तक बादशाह शाहजादीकी अंतिम क्रिया करके कब्रस्थानसे फिर कर आये। बादशाहके कबरसे लौटकर एकबार फिरभी रोने पीटने और हाय बोय करनेकी वह धूम मची कि,जिसका वर्णन करना कठिनहै। उसी हाय बोय शोककी चिल्हाहटमें अद्धम-शाहकोचेतआया चेत आतेही उससमयकी सभादेखकर पागल विक्षिप्त चित्तके समान होकर वहाँसे वह चल पडे।एक तो अंधेरी रात दूसरे शोकसे कातर अद्धमशाह आधीराततक तो जंगलमें इधरउधर भटकते और ठोकरखाते रहे किन्तु आधीरातके पश्चात् प्रभु कृपासे भटकते २ शाही कब्रस्तानके निकट पहुँच गये। वहाँ जाने पर उनके हृदयको कुछ धैर्यसा हुआ और कुछ चेतनाभी आयी, फिर तो एक वृक्षकी आड़में खडे होकर उन्होंनें कब्रके रक्षकोंको ध्यान पूर्वक देखना आरंभ किया। संयोगवश दिनभ-रके थके हुए पहरेवाले ऐसी निद्रामें अचेत हुए कि,उन्हें किसी बातकी सुधि न रही। पहरेवालेंको बेसुध देखकर इश्ककीतरंगमें अद्धमने एक ओरसे कनात फाड दिया और अन्दर पहुंचकर वह चोरोंके समान धीरे धीरे कबरतक पहुंचे। कब्रके निकट पहुंच कर वह प्रथमतो कब्रसे लपटकर थोडीदेरके लिये अचेत होगये फिर चेत आनेपर उन्हे यह विचार आया कि, एकवार माशूकका दीदार कर लेना चाहिये। दीपक तो चारों ओर जलही रहेथे उसी प्रकाशमें उन्होंने कबरकी मिट्टी अलग करके ताबूत से शाहजादीकी मृतक को बाहर निकाला और दीपकके सामने उसे लिटाकर उसके मुखको एकटक देखने लगे। देखते देखते उनके हृदयमें ऐसा तरंग उठा कि इसे अपने पर्णकुटीतक

लेजाना चाहिये। बस। फिर क्या था क़ब्रकी मिट्टीको ज्योंका त्यों करके वह शाहज़ादीकी लाश उठाकर अपनी कुटीपर पहुंचे सद्गुरुकी ऐसी कृपा हुई कि,जबतक यह अपनी कुटीतक नहीं पहुंच गये तबतक किसी पहरेदारने करवटभी नहीं ली। अद्धमशाहने अपनी कुटीमें शाहज़ादीकी लाशको दीवारके सहारे बैठा दिया और जंगली लकडियोंको जलाकर उसीके प्रकाशमें उस मृतकको सम्बोधन करके कहने लगा।

होगयी आतश जब वहां शोआले ज़न।
बैठा उसके रूबरू यह खिस्तःतन॥
रोशनीमें आगके वह नीमजाँ।
देखता था हुस्न रूए दिलस्ताँ॥
बादिले पुरदर्द चश्मे अश्कबार।
देखता था उस परीरू की बहार॥
गोरे तनपर वह उसके पैठा कफ़न।
जामये शबनभमें गोया यासमन॥
चिहरेका आलम कफ़नमें जो कि था।
बिर्द कबदे चांदनीमें वह मज़ा॥
करके उसकी लाशको अद्धम खिताव।
यों लगा कहने जे़राहे इज़तराव॥
ऐबुते संगीं दिले ना आशना।
क्यों क्या मुझको बलामें मुबतिला?॥
क्यों दिखाकर दफ़ेतन अपनी फबन।
रंजमें डालाथा ऐ नाज़ुक बदन॥
दर्द व ग़ममें अपने करके मुबतला।
एक मुद्दत तक मुझे रुसवा किया॥

मुझसे क्यों चाहेथी वह नादिर गोहर ।
दो बरसतक क्यों रखाथा बहू पर ॥
अहद गर तुझको वफ़ा करना न था ।
मुझको जिन्दः छोडकर मरना न था ॥
तुझमें कुछ बूए वफादारी नहीं ।
यार होकर शेवये यारी नहीं ॥
तुझको गर दुनियांसे करना था सफर ।
साथ लेना था मुझको ऐ सीम्बर ॥
रूह तेरी बाग़ जन्नतको गयी ।
देगयी इस रख्त जांको बकली ॥
हालकी मेरी खबर भी है तुझे ।
कल नहीं पडती किसी करवट मुझे ॥
बाग़ जन्नतमें किया तूने वतन ।
मैं रहा बहरे अलम में गोते ज़न ॥
हैफ है सद हैफ दीदारे हबीब ।
बाद मरनेके हुआ मुझको नसीब ॥
वाह ऐ चर्ख़ सितमगर वाहवाः ।
तने ज़ालिम क्या सितम मुझपर किया ॥
जीस्त में माना रहा दीदार से ।
बाद मरनेके मिलाया यारसे ॥
देखलेती यहभीमेरीबेकली ।
जोबरआती सब तमन्नाये दिली ॥
इसको भी शायदथाकुछमेरा कलक ।
होगयी जो दमके दम में जांबहक़ ॥
खागयी इसको गमें पिनहानः इश्क ।

आतशे उलफत तुफे सोज़ान इश्क ॥
कत्ल ज़ालिम तने दोनों को किया।
इस परी रूसे जुदा मुझको किया ॥
जान इसकी तो हुई तनसे बदर ।
जिन्दगी में मैंहू मुर्दा से बतर ॥
यह तो मर कर हिज्रके ग़मसे छुटी ।
तलमलाहट मुझको है अबतक वही ॥
वहशियों की तरह अपना माजरा ।
कह रहा था उस परीरू से गदा ॥
बा ज़बाने हाल वह देती जवाब ।
इश्कहै आ सौतरहके पेच ओ ताव ॥
मुझसे अपने दर्द गम कहता है क्या ।
मरगयी मैं तू तो जिन्दाभी रहा ॥
इससे वरतर क्या है दर्द ओ रंज इश्क ।
जीती मैंने वाज़िये शतरंज इश्क ॥
जीको अपने करदिया उसमें फ़ना ।
मुझसे त कहता है क्या यह माजरा ॥
देखकर अद्धम के यह रंजो महन ।
हो गया वहरे तरहुम मौजज़न ॥
देख कर उसमर्दके दिलका क़लक़ ।
जोश में आयी इनायतहाय हक ॥
कुदरते हक़ ने किया असबाब जमा।
जिससे यह दोनों हुए अहबाब ॥

इसप्रकार से अद्धमशाह शाहजादी के मृतकसे अपने विरह की बातेंकरता औररोता जाताथा उसकी ऐसी दशाको देखकर

साहिव का कृपा सागर लहराया । फिरक्या देरथी सब सामग्री इकट्ठी होगयी । अर्थात् ।

भूलकर जुल्मतसे रहको कारवाँ।कुदरते हक़से वहाँवादिदहुआ ॥

अंधेरी रात के कारण कोई ब्यापारी क़ाफ़ला राह भूल कर उसी बन में आकर उतरा । जाडेकी ऋतु के कारण जब क़ाफ़लेके आदमी आगकी खोज करने लगे तब दूरसे आगके प्रकाश को देखकर एक आदमी अद्धमशाहकी कुटी परभी पहुँचा ।

कारवांमेंसे कोईमरदे खुदा । देखकरबनमेंउजाला आगका॥
दिलमें अपने पुख्तः करके गुमाँ । खानए दुर्वेश है शायद यहाँ॥
आगलेने को वहांआया चला।ताकरे वहअपनी कुछ हाजतरवा॥
मुतासिलहुजरेकेजबपहुँचावहमर्द।रंगअद्धमका हुआदहशतसेजर्द

उसकी आहट पाकर अद्धमतो मारे डरके घबरा गये और कुटीके कोनेमें बने हुऐ गुफ़ामें छिपगये । इधरतो यह हुआ, उधर वह आदमी जब कुटीमें आया तो भीतरके दृश्यको देखकर एकदम घबरा गया । अद्धमशाहने समझाथा कि, कबरके रक्षकोंको सबहाल मालूम होगयाहै इससे उन्हीमेंसे कोई मुझे पकड़ने आयाहै और उस आदमीको मालूम हुआ कि, न जानें यह क्या चलाहै कि, शून्यसान घरमें कफनसे ढकी हुई मृतक देह बैठी हुईहै और सामने आग जल रहीहै किसी जीवित पुरुषका पता नहीं है । वह अपने मनहीमन बहुत डर गया और पिछले पावँ फिरकर अपनी मंडलीमें गया । वहां जाकर उसने अपने सरदारको सब देखी हुई बातें एक एक करके सुनायीं जिसको सुनकर लोग बडे आश्चर्यमें आये । कुछ देरतक शोच विचार करके मण्डलीके सरदारने क़ाफ़लेके साथके वैद्य और अन्य कई मनुष्योंको साथ लेकर अद्धमशाहकी कुटीपर जाने-

का विचार किया। और प्रथम मनुष्यको जो वह सबदृश्य देखकर आयाथा आगे करके कुटीपर जा पहुंचा॥

थाक़ज़ायकारउनेंमएकनबीब।हाज़िरकोदानावहुशियारोलबीब॥
लेके साथउसकोअमीरे कारवाँ।सुनतेही इसबातकेपहुंचावहां॥
थी जहां रौनक फ़िज़ा वह हूरज़ाद॥
पहुंचे यह दोनों वहां मानिन्द बाद॥
बे तअमुलबेतवकुफ़केदवाँ। यह गयेवहरोशनथीआतशजहां॥
जाके देखा फिर हक़ीक़तहैवही।जिसतरहकहताथावहमरदेरही॥
देखकर उस हालको शुसदर रहे।लबगुज़ाँ हैरत जदा मुजतररहे॥
आइनेसाँ शक्ल जब आयीनज़र। होगये हैरानदोनों देख कर॥
बोला आखिरवह हकीमें नुकतेदाँ। रंगमेंमुर्देके यह रौनक कहाँ॥

वहां जाकर उन्होंने सब दृश्य वैसेही ठीक ठीक देखा जैसा उपर्युक्त मनुष्य ने कहाथा। प्रथम तो वैद्य सहित वह व्यापारी आश्चर्यमें आया किन्तु थोड़ी देर तक शाहजादीकी और ध्यान पूर्वक देखनेपर वैद्यने जब कहाकि,यह औरत मरी नहीं है किन्तु सकते के रोग से ग्रसित हो अचेत होगयी है तब तो उपरोक्त (काफलेके) सर्दार और भी अधिक आश्चर्य में आया उसने वैद्य से कहाँ क्या यह (शाहजादी) अच्छीभी हो सकती है ? वैद्य ने उत्तर दिया अभी अच्छा करताहूँ। पश्चात् वैद्यने अपने पाससे नशतर निकाल कर शाहजादीके हाथ की रग को नशतर से छेदा जिससे रक्त बहने लगा। थोडी देर तक लोहू निकलता रहा और जब दूपित रक्त शरीर से निकल गया तव शाह ज़ादी सचेत होगयी।

सचेत होतेही शाहजादीने जैसेही आँख खोली अपने सामने दो–अपरिचित मनुष्योंको खड़े देखकर लज्जा और आश्चर्यमें

आकर घूँघट तानने लगी। तबतो अपने शरीर पर कफन देख कर भय और आश्चर्य में आयी। फिर जब इधर उधर दृष्टि डालकर घरकी दशाको देखने लगी तब तो आश्चर्य, भय लज्जा और व्याकुलता तथा शाही रोबह सबही उसके सन्मुख, आकर खड़े होगये। एकदो क्षण तक तो पत्थरकी मूर्तिके समान चुप बैठी रही फिर चकित दृष्टिसे सन्मुखके खडे आदमियोंसे शील और लज्जा पूर्ण वाणीसे इस प्रकार बात चीत करने लगी॥

शर्मसे सरको किया फरो ।
पूछा उसने तुम बताओ कौनहो ? ॥
मैं कहाँ हूँ और है यह किसका मकाँ ।
घरसे मुझको कौनलायाहै यहाँ ॥
है कहाँ वह ताज व तखते जरनिगार ।
जामें लालो कूजेहाए आबदार ॥
खानए जरबफ्तपोश अपना कहाँ ।
मखमलोदीबारकाफर्शअपना कहाँ ॥

शाहजादीने कहा, कि मेरे राजमहलसे उठाकर क्यों और किस प्रकारसे मुझे यहा जङ्गलमें कफन पहिना कर किसने बैठाया है? इसका वृतान्त मुझसे कहो। शाहजादीकी बातोंको सुनकर हकीम और व्यापारीने उत्तर दिया कि, हम लोगोंको इन बातों की कोई भी खबर नहीं है कि, तुम कौनहो ? तुम्हारा घर कहाँ है ? और यह घर किसकाहै ? तुम्हे कफन किसने पहिनाया है ? और यहां लाकर किसने बैठायाहै ? हमारा कारवाँ अँधेरेके कारण मार्ग भूलकर इसओर आ निकाला था। हमारे साथ का एक आदमी आगको ढूँढ़ता ढूँढ़ता यहाँ आया और तुम्हें

मृतकके समान किन्तु बैठी हुयी देखकर उसने डर कर पीछे पाँव जाकर हमको समाचार दिया। जिससे आश्चर्य में आकर कौतूहल वश हम यहाँ तुम्हें देखनेको आये। यहाँ आकर हमारे हकीम साहिबने तुम्हें देखकर कहा कि तुम मरी नहीं हो किन्तु सकतेकी बीमारीमें अचेत होगयीहो। फिर उन्होंने तुम्हारी दवा करके अच्छा किया है जिससे अब तुम बात चीत करने को समर्थ हुयी हो।इतना कह कर व्यापारीने कहा इसके अतिरिक्त और हम कुछ नहीं जानते अब तुम अपना वृतान्त सच्चा सच्चा हमसे बर्णन करो कि,तुम कौन हो? तुम्हारे माता पिता का नाम ग्राम क्याहै? औ तुम्हारे ऊपर क्या २ बीतीहै ॥ ?॥

कर व्याँ किस गुलिसतां का गुलहै तू।
पायीहैं किस बोस्ताँ में रंग व बू ॥

इधर तो यह बातें होरही थीं उधर तहखानेमें बैठ हुए अद्धम शाह कबरके पहरे दारोंके भ्रमसे भयके मारे डरते हुए बडी सावधानी से कान लगाकर बाहरकी बातें सुन रहेथे। जब उन्होंने शाहजादीको बात करते सुन लिया तब उनकी और ही दशा होगई। अब बाहर निकलकर शाहजादीके पास जानेका बार बार वह साहस करने लगे।फिर तो गारके द्वारसे उन्होंने मुहँ निकाल कर दोनों आदमियोंको बडे ध्यानसे देखकर जब निश्चयकरलिया कि,वे कबरके पहरेदार नहींहैं तब एकदम बाहर निकल आये। बाहर निकलकर उन्होंने कुटीके बाहर अन्धेरेमें खडा होकर शाहजादी और व्यापारीकी बात चीत सुनने लगे। और जब उन आदमियोंके रूप रंग और शारीरक लक्षणों से यह बात निश्चय होगई कि, वे नतो जासूसहैं न कोई बुरे आदमीहैं तब आनन्दके समुद्रमें गोते खाते हुए एकदम कुटीके भीतर

जाकर खड़े होगये और उपरोक्त दोनों नवागत पुरुषोंको देश कालके आचारके अनुसार नमस्कार आदि करके शाहजादीकी ओर देखते हुए खड़े होगये।

इनको वहाँ आता देखकर उनके वेष और स्वरूप परसे उन लोगोंने निश्चय किया कि, इस पर्णकुटीका स्वामी यहीहै। ऐसा निश्चय करतेही वहां और शाहजादीके पूर्ण वतान्त जानने की पूरी इच्छा व आशा उनके हृदयमें निश्चय होगयी। उनलोगोंने अनुमानसे यहभी निश्चय कर लिया कि, हो नहो यह इस स्त्रीके ऊपर आशिक है जिससे प्रेममें पागल होकर इसके मृतक-कहींसे यहां उठालायाहै अब क्षण२में उनकी उत्कण्ठा वढनेलगी जिससे अधिक समय तक न ठहरकर व्यापारी और हकीमने अद्धमशाहसे पछा कि, ऐ बन्दः खुदा सचा कहना तू कौन है? और यह अनूपम शोभामयी सुन्दरी कौन है? तू इसे यहां कहांसे और किस प्रकारसे लायाहै? सब वृतान्त सत्य२कहदे। उनकी बातको सुनकर अद्धमशाहने आदिसे अन्त तक शाहजादीपर आशिक होना, वज़ीरका मोती मांगना, दोवर्षतक संसार में भटककर मोती लाना, फिर वज़ीरकी प्रतिज्ञाभंगकरके उन्हे मारकर फेकवा देना, चेत आनेपर शाहज़ादीकी मृत्युका समाचार पाकर कबरस्थानमें जाकर पहेरे वालोंकी आंख बचाकर कब्र खोदकर लाश बाहर निकालकर लाना आदि सब वृतान्त कह सुनाया। अद्धमशाहके आश्चर्यमय वृतान्तको सुनकर उन दोनोंके सहित शाहज़ादी भी चकित होगयी। अपने लिये अद्धमशाहके महानकष्ट उठानेकी बात और उसके सच्चे प्रेमके वृत्तान्तको सुनकर शाहज़ादीभी मनही मन उनपर आशिक होगयी।

इश्कने अद्धमके वह तासीरकी ।
वह परीरू उस पै आशिकहो गयी ॥
देखकर एहवाल अद्धमका तबाह ।
चश्म नम गमसे हुई वह रश्केमाह ॥
गुजरी जोजो उसपै थी तकलीफ ओ दर्द ॥
सुनके दुखतर होगयी दहशतशे जर्द ॥
देखकर अद्धमको यों पजमुर्दे हाल ।
आया दिलमें उसपरीरूके ख्याल ॥
मेरी खातिर इसने यह रंजो बला ।
लेके सरपर कर दिया जीको फिदा ॥
खींचकर क्या २ अजीत औ बला ।
मिहनतो तकलीफो रंजे लादवा ॥
बादमरनेकेभी यह आशुफतः हाल ।
लाश मेरी कब्रसे लाया निकाल ॥
इसके बायस फिर खुदानेदी हयात ।
जीस्तका मेरी सबबहै इसकी जात ॥
गर न होता मुझपै आशिक यह जवां ।
कब्रमेंसे क्यों यह फिर लाता यहाँ ।
रुकके दम यकदममें मैं होती फना ॥
जिस्म होता तमए मूरो मारका ॥
थी यह इस दुर्वेशकी तासीरइश्क ।
मुर्दा जिन्दाहो है यहतदबीरइश्क ॥
जीस्तदुनियाकीहै बसख्वाबोख्याल ।
इस जहाँकी इश्क पर तू खाक डाल ॥
तालिबेदुनिया नहो अब जीनहार ।

दिलसे करतूभी फ़कीरीअखतियार ॥
हैयहजबतक यहजिन्दगीमुस्तआर ।
करइसे मसरूफ यादे किर्दगार ॥
लज्जते दुनियायदूँ से दरगुजर ।
यादहक़में बांध चुस्त अपनी कमर ॥
दमजो बाकी है न इनको यों गँवा ।
सीख इस दुर्वेश से राहेखुदा ॥
जीतेजी तू आपको मुर्दाबना ।
खाकमें इसजिस्म खाकीको मिला ॥
करइसी दुर्वेशसे अपना निकाह ।
दोनों आलममें हो ता तुझको फलाह ॥

शाहज़ादी मनहीमन अद्धमशाहके साथ रहकर अपना जीवन व्यतीत करने का प्रण कर रहीथी इतनमें व्यापारीने अद्धमशाह और शाहज़ादी दोनोंको सम्बोधन करके कहा कि, तुम दोनों के वृतान्त ज्ञात हुए। तुम दोनोंकी दशा ऐसीहै कि, परमात्माने दोनोंको परस्पर एक दूसरेके प्राण रक्षा का कारण बना दियाहै, अब तुमलोग यह कहो की, तुम्हारी इछा क्याहै? अब तुमलोग क्या करना चाहते हो?। यदि तुम्हे हमारे साथ चलना हो तो संध्याको अपना कारवाँ यहांसे जानेवालाहै हमारे साथ चले चलो तुम्हे किसीप्रकारसे दुख न होगा। हम अपनी शक्ति अनुसार तुम्हारी सेवासे कदापि नहीं चूकेंगे। यदिहमारे साथ चलना स्वीकार न हो तो जो तुम्हारी इच्छा हो सो प्रकटकरो।

सौदागरकी बातको सुनकर परम कृतज्ञता प्रकट करते हुए अद्धमशाहने कहा कि, यदि मेरा रोम २ जिह्वा बनजावे तबभी तुम्हारी भलाईका पुरस्कार मुझसे नहीं दिया जा सकता। तुम्हारी

ही कृपासे शाहजादी फिर जीवित होकर मेरे जीवनका कारण बनी है। तुम्हारे इस पुण्यका फल परमात्मा तुम्हे देगा किन्तु जबतक मेरे शरीर में प्राणहैं तबतक मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूंगा। अब मुझे सिवाय शाहजादीसे विवाह करनेके किसी प्रकारकी और इच्छा नहींहै। यदि यह स्वीकार करले तो धर्मानुसार तुम दोनों अपने सन्मुख साक्षी बनकर हम दोनोंका सम्बन्ध जोड़दो।

अद्धमशाहकी बातको सुनकर व्यापारीने शाहजादीको कहा कि,हे शाहजादी ! यदि अद्धमशाह न होता तो तू कब्रकी कब्रमें मरकर संसारसे चलबसी होती। इसके अतिरिक्त उसने तेरे लिये कैसे २कष्ट उठाये हैं अब उचित है कि,तूभी उसे स्वीकार करले। इसप्रकारसे अनेक बातोंके समझानेपर शाहजादीने उत्तर दिया कि, आप लोगोंकी मैं बहुत कृतज्ञ हूँ आप लोगोंकी आज्ञा कदापि उलंघन नहीं कर सकती किन्तु अद्धमशाह इस बातका प्रण करे कि, वह कभी मुझसे अलग न होगा और न कभी मेरी आज्ञासे बाहर जायगा तबमैं इसको स्वीकार करूंगी और मेरे विवाह का यही मुहर[1] होगा।

शाहजादीकी बातको सुनकर अद्धमशाह आनन्दके मारे उछल पड़े और शपथ पूर्वक शाहजादीके कहे अनुसार प्रतिज्ञा करके शाहजादीके उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगे। फिर शाह-जादीने व्यापारी और हकीमसे कहा कि शरअ (मुसलमानी-

---

१ मुसलमानी धर्मानुसार विवाह करने के समय वरकी ओरसे कन्याके लिये मुहर की रीति पूरीकी जातिहै। जिसमें वर अपनी प्रतिज्ञाके साथ २ नियतरुपया या अशरफी का दस्तावेज अपनी स्त्रीकेनामसे लिखदेताहै कि, वह आजसे उसके इतने रुपये का ऋणी हुआ प्रथम तो कभी वह उसे स्त्रीको छोडहीगा नहीं यदि किसी कारण वश उसे छोडना चाहे तो अमुक रकम देकर केही छुटकारा पासकेगा जब तक वह ऋण उसका न चुकादे तब तक वह उसको कदापि नहीं छोड सकता इसी का नाम मुहर है शाहजादीने अपना मुहर यही मांगा कि,जावज्जीवन अद्धमशाहछोडकरकहीं न जावे।

धर्मशास्त्र) के अनुसार विवाहके लिये दो साक्षीकी आवश्यकताहै सो तुम दोनों हमारे विवाहके साक्षी होजाओ जिसमें लोक परलोकमें हम पापके भागी न होवें तब मैं विवाहको स्वीकार करूँगी । उन दोनोंने शाहजादीके बचनको मानकर साक्षी बनना स्वीकार किया और दोनोंकी गाठ जोड़ (पाणि ग्रहण) करा दिया । पश्चात् वे दोनों तो अपने कारवानमें चले गये और अद्धमशाह शाहजादीको पाकर परम आनन्दितहो अपनी पर्णकुटीमें बास करने लगे ॥

दोनोंमें परस्पर ऐसा प्रेम हुआ कि, कोई किसीके वियोग को क्षणमात्र के लिये भी सह नहीं सकता था।जङ्गलके फल फूल पत्ते और कन्द मूलपर वे अपना दिन विताते और स्वर्गसेभी बढ़के आनन्दको मनाते थे ॥

कुछ दिनोंके पश्चात् शाहजादी गर्भवती हुयी और समय पूरा होनेपर परम सुन्दर पुत्रको प्रसव किया।उसी पुत्रका नाम अद्धम शाहने इब्राहीम रक्खा । किताबोंमें लिखाहै कि, अद्धमशाहके संगके प्रतापसे शाहजादी भी सर्व शुभ गुणोंसे सम्पन्न महान तपस्वीनी और भजनानन्दी होगयी थी । जिस समय उसे गर्भ स्थित हुआ था उस समय समस्त बन नाना प्रकारके फल फूल और मेवोंसे सम्पन्न होगया था । सदा बसन्त ऋतुकाही आनन्द वहाँ दीखने लग गया था । नाना प्रकारके पशु पक्षियों ने आकर वहाँ बास किया था । जिससे वह बन कानन बन-बन कर स्वर्गके समान सुखदाई हो रहा था । इब्राहीमके जन्म लेनेपर उनकी आकृति सम्पूर्ण रूपसे हजरत इब्राहीम खली लुल्लाहसे मिलती थी इसी कारणसे उनका भी नाम इब्राहीम रक्खा । जिस समय शाह इब्राहीम का जन्म हुआ वह एक सो एकसठ (१६१) हिजरी थी ।

माता पिताने बड़े प्रेमसे इब्राहीमको पालना आरम्भ किया दो वर्षके पश्चात् उनको अन्न प्रासन कराया ॥

दोबरसपूरेकाजबवहहोगया।औरगिज़ाफिलजुमलेवहखानेलगा।
गैबसेआनेलगेनादिरतआम।कुदरते एजिदसेउसकोबिलदवाम॥
उसकीबर्कतसेलगेअशजारपर।अच्छी अच्छीवज़अकेशीरींसमर
कुदरतेहकसेहुआवहदश्तोबर। गुलशनोगुलजारपरभीफौकतर॥

आखिरकार देखते देखते बालक इब्राहीम सात बरसके होगये। अब अद्धमशाहको इस बातकी चिन्ता हुई कि बालक को विद्या अभ्यास कराना चाहिये सबसे पहले जैसा मुसलमानोंमें रीतिहै बालकको कुरान पढ़ाना आरम्भ किया। जब कुछ दिनों तक घरमेंही पढ़ाकर देख लिया तब एक दिन बालक को गोदमें लेकर अद्धमशाह शहरमें गये वहाँ ढूँढ़ते ढूँढ़ते एक सज्जन मोलवी साहेब मिले जिनके यहाँ इब्राहीमके पढ़नेको ठीक करके उनसे कहदिया कि, सबेरे मैं इब्राहीमको यहाँ रख जाया करूँगा और शामको आकर लेजाया करूँगा।

अलगरज हर सुबह वह मर्दनेको।
लाता उस मुकतबमें इब्राहीमको॥
उलफते कलबीसे अपने बिलदवाम।
फिर उन्हें लेनेको आता वक्त शाम॥
था यही हररोज अद्धमका शआर।
आते जाते शहरमें बिलइज़्तरार॥
थी जेबस शफकत उन्हें बेइन्तहा।
तनहा आना जाना दिलपर शाकथा॥

(इब्राहीम अद्धमका बादशाह बनना ॥)

जबसे बलखके बादशाहकी इकलौती बेटीका उससे वियोग हुआ तबसे बादशाह बहुत उदास और दुखी रहने लगा।

उसका चित्त संसारसे उदास हुआ वह सदा दुर्वेश फकीर और ईश्वरके भक्तोंके संगमें रहने लगा। जहाँ किसी महात्माका समाचार पाता वहीं उनके दर्शनको चला जाता और अपनी शान्तिके लिये उनसे प्रार्थना करता। दूसरी आदत उसकी सदासे यह थी कि, जब कभी वह शहरमें निकलता तब मदरसे और मुकतबोंमें जाकर लड़कोंका पढ़ना सुनता और उन्हें मिठाई वगैरह देकर खुश करता और शिक्षकों को भी इनाम देकर लड़कों को छुट्टी दिलाता।इसके अतिरिक्त एक संतने भी उसे कहा था कि,मुकतबके लड़कों को खुश रखनेसे तेरी मुराद कभी न कभी पूरी होजायगी। सो एक दिन बादशाहकी सवारी संयोगसे उसी मुकतबके पाससे निकली जिसमें इब्राहीम अद्धम पढ़ते थे। जिस समय बादशाकी सवारी मुकतबके पास पहुँची उस समय बादशाहके कानमें बहुत मीठा और रीतिके अनुसार कुरान पढ़ते हुए किसी बच्चेका शब्द सुनपड़ा। बादशाहने एकदम सवारी रोकली और कुछ देरतक वहाँ ही खड़ा खड़ा सुनता रहा। फिरतो उस शब्द पर इतना मोहित हुआ कि, सवारीसे उतरकर मुकतबमें पहुंचा।

गुज़राउसमुकतबकेआगेनागहाँ। मसहफइब्राहीमपढ़ताथाजहाँ॥
बादशाहनेजबसुनीउसकीसदा। दिलपैउसकेकुछअसरपैदा हुआ
करकेउसजाअपनेघोड़ेकोखड़ा। पढ़नाइब्राहीमका सुनतारहा॥

मुखरिजे इलफाज उसके मद्दवशद।
सुनके अश अश कर गया हर जीखरद॥
था हमेशासे तरीका शाहका।
जिसजगह मुकतब सरेरह देखता॥
सुनता पढना जाके हरेक तिफ्लका।
करता फिर इनआम हरयकको अता॥

आता पढना जिसका खातिर में प्रसन्द।
उसको देता नकद औरों से दो चन्द॥
देके जर उस्ताद को शाहे निको।
छुट्टी दिलवाता था फिर हर तिफ्लको॥

अपने सदा की आदतके अनुसार बादशाहने मुकतबके हर एक लड़के का पढ़ना सुना और सबको इनआम भी दिया। परन्तु जब इब्राहिम की बारी आयी तब उस छोटेसे बच्चे का शुद्ध शुद्ध पढना, उसकी अदब के साथ बात चीत और उसके रंग रूप को देख कर बादशाह एकदम आश्चर्य सागर में गोता खाने लगा। उसके हृदयमें उस बच्चे का इतना प्रेम प्रवाह उमड़ चला कि वह हैरतमें पड़ गया। आखिर अपने प्रेम प्रवाह को रोक नहीं सका एक दम इब्राहीम को गोदमें उठाकर प्यार करने लगा। यद्यपि बादशाही रोब दाब से यह बात कदापि मुमकिन नहीं थी तथापि अन्तर्गत हृदयमें किसी अन जानी शक्तिने ऐसा काम किया कि बादशाह अपना पद एक दम भूल गया और इब्राहीम को उठाकर गले लगा लिया। इब्राहीम के हृदय में भी खून ने जोश मारा वहभी बादशाह के हृदयसे चिपटगया। अब बादशाहके हृदय पर और भी बड़ा भारी प्रभाव पड़ा।

जुज्वकोहै जुज्वसे पैवस्तगी।
खून को है खून से दिलबस्तगी॥
दाब शाही से यह बिलकुल दूर था।
लैकवह इस अमरमें मजबूर था॥
दिलको अपने जब्र गो उसने किया।
जोश उलफत पर न उससे रुकसका॥

जुज्वकोहै गर्चे जायद इजतरार ।
कलको भी बेजुज्वके कबहोकरार ॥
गो नहीं जाहिर का पैगामों सलाम ।
जुज्व कलमेंहै मगर पिनहाँ कलाम॥
दिलको हरेकके खलिशहै जो यहाँ ।
है अनासिरकी कशिश यह ऐ जवाँ ॥
जज्व अपने जुज्वको करतेहैं कल ।
उस कशिशकाहै बदनमें शोरोगल ॥
हरबशरको है जोदिलमें इजतराब ।
खींचतीहै उसको पिनहानी तनाब ॥
रिश्तए उलफतसे रहताहैबंधा ।
जुज्व अपने कुलके साथ ऐ बाखुदा ॥
जुज्व तनकोहै जो कुलके साथरब्त ।
है कशिशसे उसकीतेरी अक्लखब्त ॥
अपनी गुफलतसे तुझे है यह गुमाँ ।
मुझको जोफे कलब और मादा है अयाँ ॥

बादशाह दिल भरके इब्राहीमको प्यार करलेने पर जैसे ही गौर से उसकी ओर देखने लगा वैसेही उसे अपनी लडकी की याद आयी । लड़की की याद आतेही उसकी सूरत बादशाह के सामने आखड़ी हुई । अब बादशाह देखताहै तो इब्राहीमकी और उसकी लड़की की शकल में बाल बराबर भी भेद नहीं है । कहते हैं कि, उस समय बादशाह इतना रोया कि, उसका चेहरा लाल होगया और आगे के कपड़े आंसू से भींग गये । फिर जब मन कुछ ठहरा तब बादशाहने मुल्लाजीसे पूछा कि,—यह लड़का कहां रहता है ? इशका बाप कौन है ? यह

यहां कितने दिनोंसे पढने आया है? मुल्लाजीने बादशाहके प्रश्नोंका यथा योग्य उत्तर दे दिया।

दस्त बस्तः यों मुअलिमने कहा। बाप इसका है फकीरे बेनवा॥
रहताहैसहरामें आबादीसेदूर। अहल दुनियासेनिहायतहैनफूर॥
अद्धम उसका है लकबऐनेकपै। इसपेसरका नाम इब्राहीम है॥
एक बरस गुजराकिपढ़नेकोयहां। आताहैयहतिफ्लऐशाहेजहाँ॥
सुबहको लाताहै बाप इसका यहां।शाम को लेजाताहैआकरवहाँ
है जेबस दुर्वेश वह साफी निहाद। है मुझे हदसे ज्यादा एतकाद॥
जसतनअल्लाहइसेबहरेसबाब।यादकरवाताहूं रब्बानी किताब॥

मुल्लाजीकी जबानी अद्धम शाहका नाम सुनतेही बादशाह चौक उठा। उसे पहलेकी सब बातेंः–अद्धमशाहका शाहजादी पर आशिक होना, उसका मोती लाना, वज़ीरका उसे धक्का देकर निकाल देना, उसका छातीपर मुक्का मारना और शाह जादीका मरजाना इत्यादि–याद आगयीं। तब बादशाहने अपने मनमें अनुमान किया कि,हो न हो इसमें जरूर कोई छिपा हुआ भेद है।नहीं तो इस बालकके ऊपर मेरा इतना प्रेम क्यों होता? दूसरे इसका रूप मेरी बेटीसे पूरा पूरा मिल रहाहै। सोइसमें अवश्य कुछ भेद छिपा हुआहै। इसलिये इस बालकको अपने महलमें लेचलकर बादशाह बेगमको दिखलावें जिसमें उसके हृदयमें कुछ संतोषहो। इतना सोचकर बादशाह इब्राहीमको गोदमें लिये हुए उठ खड़ा हुआ और मुल्लाजीसे कहा कि, जब इस लड़के का बाप आवे तब उसे मेरेपास भेज देना वहीं से वह अपना लड़का लेजायगा। फिर मुल्लाजीको बहुत कुछ इनआम देकर रवाना होगया।

महलमें पहुंचकर बादशाहाने बेगमको बुलाकर इब्राहीको उस-

की गोदमें रखदिया। बेगमने जैसेही इब्राहीमको गौर करके देखा वैसेही लड़कीकी शक्ल देखकर एकदम बेहोश होकर गिरपड़ी। फिरतो महलमें धूम मचगयी। बेगमको होशमें लानेके सैकड़ो उपाय कियेगये। जब वह होशमें आयी तब इब्राहीमको गोदमें लेकर बार बार बलाएँ लेने और नाना प्रकार के संकल्प विकल्प मनमें करने लगी।

गोदमेंफिर उसकोलेकरनागहाँ। सांस ठंढीभरके करती थी ब्याँ॥
ऐ मेरे लखते जिगरके हम शबीह। ऐ मेरे नूरे बसरके हम शबीह॥
ऐ मेरे रशके कमरकेहमसिफत। ऐ मेरे गुल बर्ग तरके हम सिफत॥
ऐ मेरे उस गुल बदनके हम अनाँ। ऐ मेरे शीरीं दहनके हम निशाँ॥
ऐ मेरे उस लाबुते चींके करीं। ऐ मेरे आहुए मिराकींके करीं॥
ऐ मेरे ताबिन्दः अख्तरकीशबीह। ऐ मेरे मेहरे मनौवरकी शबीह॥
ऐमेरे नादीदः दुनियांके मिसाल। ऐमेरे फरजन्द जेबाके मिसाल॥
ऐ मेरे यूसुफकेहमतजीतराश। ऐ मेरेलैलाकेहम वजअवकमाश॥
ऐ मेरे जाने जहांके हमअनाँ। ऐ मेरे गुंचः देहाँके हमअनाँ॥
ऐ मेरे उस मूकभरके हम कमर। ऐ मेरे याकूत लबके हम गोहर॥

देताहै हर जुज्व तेरा वे गुमाँ।
युसुफे गुम गश्तः मेरे का निशाँ॥
है जो हर हर जुज्व तेरा बिलएकीं।
यादगार लैलीय महमल नशीं॥

इस प्रकार अनेक तरहसे बेटीका स्मरण करलेनेके पश्चात बेगम ने इब्राहिम से पूछा कि, तेरीमां और बापका नाम क्या है? इब्राहमिने बापका नाम अद्धम शाह और मां का नाम वही बतलाया जो बादशाह की लड़की का नाम था।

शाहकी दुखतरका जो कुछ नामथा। वहीब्राहीम ने मांका लिया॥

और बतायानामअद्धम बापका।दश्तमेंअपनीकहीरहनेकी जा ॥

अद्धम शाहके नाम को बलख निवासी स्त्री पुरुष बच्चे से बूढे तक सभी जानतेथे। क्योंकि वह शाहज़ादी पर आशिक था। और शाहज़ादी का मरजानाभी अद्धम शाहकेही शापका फल लागान मान रखाथा। यही कारण है कि,अद्धमशाहको सब लोग महात्मा सिद्ध समझते थे। इब्राहीमके मुखसे बादशाहज़ादी और अद्धम दोनाकों नाम सुनकर लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह और बेगमके अन्तःकरणमें न जाने कितनी कल्पनाएँ आतीथीं और कितनी आशा और निराशा उनके चारों ओर फिररहींथीं। आखिर बादशाह बेगमने अपने हाथसे इब्राहीमको स्नान कराकर अच्छे २ कपडे पहनाया और उत्तम उत्तम पदार्थ उसे खानेको दिया। फिर बादशाह इब्राहीमको बेगमके पास छोड़कर अपने खानगी स्थान में जा बैठा और इस भेद पर विचार करनेलगा। अन्तमें बादशाहने निश्चय किया कि,अद्धमशाहसे इसका वृतान्त पछना चाहिये वह संसार त्यागी फकीर है वह कदापि झूठ नहीं बोलेगा।

बादशाहके दिलमें आया यों ख्याल ॥
पूछिये अद्धमसे उस दुख्तर का हाल ॥

फ़र्क़उसकीरास्तगोयीमें नहीं।जो कहेगा वह सच्चहै बिल यक़ीं ॥
मर्द हक़है पाय बन्दे रास्ती। झूठ हर्गिज न बोलेगा कभी ॥

इतना विचार कर बादशाह ने दरवान को बुलाकर हुक्म दिया कि, अगर कोई लड़का लेने आवे तो उसे द्वार पर मत रोकना बलकि उसे सीधा मेरे पास पहुंचाना। उसको प्रतिष्ठापूर्वक ले आना;खबरदारउसके मनमें किसी प्रकारसे बुरानलगने पावे। इतना हुक्म देकर बाहशाह अद्धमशाहकी इन्तज़ारी करने लगा।

उधर अपने नियत समय पर जब अद्धमशाह इब्राहीमको लेनेके लिये मुकतबमें आया तब उसे मालूम हुआकि, इब्राहीम को बादशाह अपने महल में ले गयाहै और कहगयाहै कि अद्धमशाह वहाँही से उसको लेजावे । उसे किसीप्रकार डरना नहीं चाहिये जिस समय वह आयेगा उसी समय अपना लड़का लेजायगा। यह सुनतेही अद्धमशाहनेबेकरारहोकर सीधे बादशाहकी ड्योढ़ी पर जा खड़ा हुआ और दरवानसे कहाकि, बादशाहसे जाकर कहदेकि, इब्राहीमका बाप उसे घरलेजाने आयाहै । जल्दी उसे बाहर भेजदो।

जैसेही अद्धमशाहके आनेकीखबर बादशाहको पहुंची वैसेही बादशाहनेउसे अन्दर अपने पास बुलालिया और बडी प्रतिष्ठा के साथ उच्चासन पर बैठाकर ईश्वरका शपथ देकर उनसे पूछाकि

सचबतातुझकोसौगन्देखुदा । नामहैइसतिफ्लकीमादरकाक्या ॥
हैवहकिसकीदुख्तरेआलीगोहर । रास्तकहदेकौनहैउसकापदर ॥

बादशाहकी बातको सुनकर अद्धम शाहने कहा "ऐ बादशाह वहवही तुम्हारी लडकी है जिसपर मैं आशिक हुआथा" ।

सुनकरअद्धमनेकहाऐबादशाह । हैवहदुखतरआपकीबेइश्तबाह ॥
मादरइसकीहैवहीरशकेक़मर । जिसपैमैंआशिक़हुआथादेखकर॥
नामभीउसकादियाउसकोबतादुखतरेसुलतानकाजोकुछनामथा

अद्धमकी बातको सुनकर बादशाहके आश्चर्यका पारावार नहीं रहा उसने आश्चर्य मुद्रासे अद्धमशाहसे कहा कि मेरी बेटी को मरे हुए तो मुद्दत होगयी । उसको हम लोगोंने क़ब्रमें गाड़दिया उसकी तो हड्डी तक गलगयी होगी।वह अब तुम्हारे घरमें कहांसे आगयी ? क्या कोई आजतक मरकरके भी जियाहै?

बादशाहकी बातको सुनकर अद्धमशाहने शाहज़ादी के जीने और विवाहहोने आदिका सबवृतान्त कह सुनाया।

जबकहाअद्धमनेऐआलमपनाह मुबतलासकतेमेंथीवहरश्कमाह
खल्कउसदुखतरकोमुर्दाजानकर।कब्रमेंचुपरखकेआयीअपनेघर।
कब्रमेंउसकोकियाथादफनजब।एकपहरभरसेसिवागुजरीथीतब॥
मिट्टीजोडालीथीउससन्दूकपर।जिसकेअन्दरथीवहमाहेसीमवर
कुदते हकसे हवाका रास्ता। रहगयाथा कब्रके अन्दर खुला॥
था जिलाना बसकि मञ्जूरे खुदा। इस सबब से कब्रमें रखना रहा
मुझको जज्वे इश्कमें आयी तरंग। कब्रपर उसके गया मैंबेदरंग॥
पासबाने कब्र सोते देखकर। लाश दुखतर को किया मैंनेबदर॥
लाशको मैंने निकालाकब्रसे। फिरकिया हमवार मिट्टी डालके॥
मैं वलेमुर्दाहीउसकोजानकर। रखके उसकीलाशकोबालायसर॥
जल्दतरउस दश्तोबरमें लेगया। थी जहां ऐ शह मेरीरहनेकीजा॥
करके रौशन आग मैं बैठा वहां। बा हजारों दर्द व अन्दोहो,फिगाँ॥
देखताथा हुस्नकी उसके बहार।और रोताथा निहायत जारजार॥
कुदरते हकसे हुआ बारिद वहां।ऐन उस हालतके अन्दर कारवाँ॥
देखकर आतशको रौशनएकजवां।आगलेनेके लिये आया वहाँ॥

पास वाने कब्र उसको जानकर।
फर्त दहशतसे हुआ दिलमें मुनताशिर॥

दश्तमें मुर्दे को तनहा देखकर।होगया दहशतसे लरजाँ वह बशर॥
कारवाँमें जाके दी उसने खबर। उसमें था मर्द तबीबे पुर हुनर॥

साथ लेकर उसको मीरे कारवां।
सुनतेही उस बातके आया वहां॥

देखकर दुखतरको उसने यों कहा। हैयहसकतेकेमर्ज़में मुबतला॥

कहके बिसमिल्लाह नशतर को लिया।
उससे की झट पट रगे कैफान वा॥

जबकिनिकलाउसकेतनमेंसेलहू।होगयीहुशियारवहफर्खुन्दःखू॥

करादियाआंखोकोउसनेअपनेवा।पूछाउनदोनोंसेक्याहैमाजरा ॥
कौन हो तुम और यह किसका है मकां ।
घर से मुझको कौन लाया है यहाँ ॥
मैं भी आखिर सुनके उनका मकाल ।
अन्दर आया करने को दरियाफ्त हाल॥
देखकर जिन्दा मैं उसको ऐ शहा ।
लाया सिजदए शुक्र यजदांका बजा ॥
पूछा मुझसे फिर उन्होंने माजरा ।
मिन व अन एहवाल मैंने कह दिया ॥
मेरा औरदुखतरका एजाबो कबूल ।होगया पेशे गवा हानेअदूल॥
फिर हुआजो लुफवइनआमेंखुदा । पैदा इब्राहीमयह उससेहुआ॥
माजराहै यह बेला कम और कास्त ।
जो कहा मैंने यहहै सब रास्त रास्त ॥

अद्धमशाहके द्वारा अपनी बेटीका सब वृतान्त सुनकर बादशाह मारे खुशीके उछलपड़ा । वह उसी समय उठकर महलमें गया और बादशाह बेगमसे सब वृतान्त कह सुनाया। बेगमने बेटीके मिलने की खुशीमें दान पुण्य खैरात करना आरम्भकरदिया । उधर बादशाह ने शाहजादीके बचपनकी सखी सहेलियों और उसको दूधपिलानेवाली बुढियों को पालकी पर सवार करा करा कर शाहजादीकी जांच करनेको भेज दिया । तब तक आप अद्धमशाह को बातोंमें फंसा रखा ।

थोडीदेरमें जांच करने बालियों ने आकर बादशाहसे कहा कि, सच मुच वही शाहजादी है । फिर तोबादशाहने बेगमको साथ लेकर उसी समय बेटी से मिलने के लिये जंगलमें जाने की तैयारी की । आगे आगे बेगमोंके मुहाफे और पीछे सब

दरबारियों सहित बादशाहकी सवारी रवाना हुई। जब अद्धम-शाहकी कुटीके निकट सवारी पहुँची तब बादशाह नीचे उतर पड़ा और बेगम को साथ लेकर पाय प्यादे झोपड़ी की ओर चला। बादशाहने देखा कि, एक टूटी फूटी झोपड़ीमें सैकड़ों जगह से फटे हुए कपड़े पहनी हुई घास की टूटी चटाईपर बैठी हुई शाहजादी निमाज पढ़ रहीहै। जब वह निमाज पढ़चुकी तब लौंडियों ने हाथ जोड़कर कहा कि, आपके पिता और माता आपसे मिलने को आये हैं। दासीकी बात सुनतेही शाहजादी दौड़कर माता पिताके पग पर गिरपड़ी। फिर दोनों ने उसे उठाकर गले लगाया और शकुन के आंसू बहाकर उसे शाही महल में अपने साथ ले जाने की इच्छा प्रकट की। शाहजादी ने कहा आपकी आज्ञा मेरे शिर पर है किन्तु पतिकी आज्ञा विना मैं यहां से एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती। बादशाहने अद्धमशाह से आज्ञा दिलादी। फिरतो उसके वह फकीरी वेष को उतार कर शाहाना कपडों से उसे सजाया और बेगम ने अपनी पालकीमें साथही बैठाया। वैसेही अद्धमशाह और बादशाह एकही सवारीमें बैठ कर शाहीमहल को रवाना हुए। बादशाहने महलमें पहुँच कर उत्सव करने की आज्ञा दी

राह हकमें माल व जर बिलकुल दिया।
इस कदर खैरात की बेइन्तहा॥

इस प्रकार खूब धूम धामके साथ आनन्द मनाया गया। चौथे दिन अद्धम शाहने बादशाहसे कहाकि, फकीरों का एकान्तमें रहनाही अच्छा है इसलिये मुझे तो जंगलमें ही जाने दीजिये। अगर आप चाहें तो मेरी स्त्री और मेरा लड़का आपकी सेवामें रहेगा। बादशाह ने बहुत प्रकार से समझा

कर अद्धमशाह को अपने पास रखना चाहा किन्तु उन्होंने एकभी नहीं माना आखिर मजबूरीसे बादशाहने उन्हें विदा किया । अद्धमशाह अपनी उसी कुटीमें जाकर रहने लगे जब उनका जी चाहता तब आकर अपने लडके और स्त्री को देख जाते । कहते हैं कि, जबतक जीते रहे तबतक उनकी यही रीति रही ।

बादशाहने अपने घर लाकर इब्राहीमको पढ़ाने के लिये अच्छे अच्छे शिक्षक सबप्रकार की विद्या और गुणसे पूर्ण देश देशसे बुलाकर रखा । "होनहार विरवान के होत चीकने पात" के अनुसार इब्राहिमकी बुद्धि ऐसी तीव्रथी कि शिक्षकलोग यदि एक बात बतलाते तो इब्राहीम उससे दश अधिक निकालते इसप्रकारसे सद्गुरू की कृपा द्वारा इब्राहीमने थोडेही वर्षोंमें अनेक विद्या और कला कौशल तथा राज नीतिमें योग्यता प्राप्त करली । समय पाकर बादशाहने इब्राहीमको राज्य सिहांसन पर बैठाकर बलख का बादशाह बनादिया ।

नानाकी गद्दी पर बैठकर इब्राहीम अब इब्राहीमशाह हुए । राज्यके कामको इस योग्यता से किया कि, शत्रु और राज्य के लालची दूसरे बादशाह लोगोंने स्वम प्रशंसा करके उनसे दोस्ती करली ।

इस प्रकारसे रामराज्य सा राज्य करने परभी इब्राहीमशाह को फकीरों दुर्वेशों की संगति का ऐसा चसका लगा था कि, दिन रातमें राजकाजसे जभी अवकाश मिलता तभी साधु सन्तो के पास पहुंचते । चाहे कितनेही दूर पर किसी अच्छे महात्मा के रहने का समाचार पाते जरूर वहां जाकर उनसे सत संग करके लाभ उठाते । इसी प्रकार राज्य करते हुए कई वर्ष

बीतने पर उनके नानाका जिन्होंने अपना राज्य इन्हें देकर आप भजनके लिये एकान्त बास कियाथा देहान्ता होगया ।

नानाके मरजानेपर इब्राहीम शाहके मन पर बडा धक्का लगा उनका चित्त संसारसे एक दम वैराग्यको प्राप्त हुआ अब उन्हें दिन रात परलोक की चिन्ता रहने लगी ।

यानै इब्राहीमशाहे दो जहाँ ॥
करताथा जाहिरमें गो कारे शहां ॥
लैक था दुनियासे दिलबरदाशता ॥
बेवफा व बेबका पिन्दाशता ॥
कारदुनियाँसे नथी चसपीदगी ।
कुछ तहेदिलसे नथी गरवीदगी ॥
जानता था कार दुनियाँ मुस्तआर ।
करताथा बहरे जरूर तकारो बार ॥
मुल्क रानी उसनेकी बा आब वताब ।
दसवरस वल्लाह आलम बिलसवाब।
अदल अपने असिरमें ऐसा किया ।
महो मुतलक होगया जौरो जफा ॥
शमआ परवानेकोदे तकलीफ अगर ।
किता जल्द उसका करे गुलगीर सर ॥
जुल्मसे तोड़े जो बुज ठन्नी हरी ।
फेर दे कस्साव गर्दन पर छुरी ॥

इसके आगे नानाकी मृत्यु देख कर इब्राहीमशाहके हृदयमें विराग का अंकुर विशेप वृद्धिको प्राप्त हुआ और सद्गुरुने जिस प्रकार उन्हें उपदेश देकर सत्य पदको प्राप्त कराया उसका

विशेष वृतान्त सुलतान बोधमें लिखा है। यद्यपि और और लिखने वालों के विचार और लिखनेसे सुलतान बोधमें बहुत कुछ भेद पड़ताहै तथापि सबका लक्ष एकही है औ सबने अन्त में फलभी एकही दर्शाया है। इस कारण और यहाँ पुस्तक बढ़ जानेके भयसे अधिक न लिख कर शाह इब्राहीम अद्धमके फकीर होजाने पश्चात् की करामात औ प्रचा की बातों में से थोड़ी सी बातें यहाँ लिखकर यह ग्रन्थ समाप्त किया जायगा।

शाहइब्राहीम अद्धम का स्फुट वृतान्त।

वार्त्ता १।

कहते हैं अद्धम हुए जिस दम फकीर।
छोड़ सुलतानी[1] का सब ताजो[2] शरीर[3] ॥
मालोजर[4] जितना खजाने बीच था।
लेके दरियामें दिया सारा डुबा ॥
पूछा एक ने क्या किया यह ऐ मलिक[5]।
क्यों न हर एक को दिया यह ऐ मलिक ॥
दर जबाब[6] उसको कहा यह मालोजर।
याँदये[7] बोग्र्जब[8] हसद[9] नखवत[10] का घर ॥
यों सुनाहै मैं बुजुर्गोंसे[11] कलाम।
जानतेहैं इस मिस्लको खास व आम ॥
आप पर जो चीज होवे ना पसन्द।
गैरपर[12] उसको मत रखना पसन्द ॥

---

१ बादशाही, राज्य। २ राजमुकुट। ३ राजसिंहासन। ४ धनदौलत। ५ बादशाह। ६ उत्तरमें। ७ पूंजी। ८ कीना, गुस्सा, क्रोध, आंटी। ९ ईर्षा। १० अभिमान। ११ बड़ों से। १२ दूसरा।

* वार्ता २ ।

बादशाहत[1] छोड़कर अद्धम चले ।
कोह[2] व सिहरों[3]की तरफ़को शहरसे ॥
बेटेको अपने किया क़ायम[4]मुकाम ।
बादशाहत वह लगा करने तमाम ॥
आपली फिर राह सिहरा की ग़रज ।
कुछ न रखी माल दुनियाकी गरज ॥
साथ एक प्याला लिया और बोरिया[5] ।
एक मिसवाक[6] और एक तकिया लिया ॥
एक सोजन[7] खलका सीनेके लिये ।
साथ यह असबाब जरूरी ले लिये ॥
शहरसे बाहर निकलजोकी नजर ।
सोते देखा एकको वाँ खाकपर ॥
बोरिया फेंका वहाँ और यह कहा ।
खाकसारोंको जमीन है बोरिया ॥
आगे जा देखा तो एक बेचारः आब[10] ।
औकसे पीता है बैठा बे हिजाब ॥
हाथसे प्यालेको भी फोडा वहीं ।
यानी पी लेवेंगे हम पानी योहीं ॥
आगे देखा एक सोताहै गरीब ।
हाथको रखे सिऱ्हाने बेनसीब ॥
तकिया भी छोडा फजूली जानकर ।
यानी एक यह भी है मुझपर बारसर[13] ॥

---

* इस वार्तामें जिन २ शब्दोंपर अंक दिये गये है उनका अर्थ वार्ताके अन्तकी टिप्पणी में देखो ।

आगे जाकर देखा तो एक नेक[14] खो।
उंगलियोंसे मांजताहै दांतको॥
हाथसे मिसवाक[15]भी तब फेंकदी।
मिस्ल ईसाँ[15] एक सोजनही रखी॥
सैर करते करते आखिर[16] एक जाँ[17]।
एक पहाड़ पर गुजर उनका हुआ॥
आदमी वाँ था न वाँ हैवाँन था॥
यातो था वह कोह[18] या मैदान था॥
दूरसे एक झोपड़ी आयी नजर।
देखा एक दुर्वेश[19]को उस कोह पर॥
करके इश्क अल्लाह पै बैठे वहां।
बैठना इनका हुआ उस पर गिराँ[20]॥
बोला वह दुर्वेश[19] ऐ दुर्वेश! तू।
रातको रहना न याँ[20] दिलरेश[21] तू॥
यां[21] न दाना है न पानी है कहीं।
मसलेहत[22] तेरा यहां रहना नहीं॥
तब यह बोले उससे ऐ कम हौसला[23]।
रिज्क[24]का हरगिज[25] न करियो तू गिला[26]॥
तेरा मैं मिहमाँ[27] नहीं ऐ तकियेदार[28]।
जिसका मिहमाँ[27] हूँ वही है गमगुसार[29]॥
जिसने दी है जान वह देवेगा नान[30]।
गर नहीं बावर[31] तो करले इमतेहान[32]॥
जो किसीके पास[33] आता है अजीज[34]।
किस्मत[35]अपनीसाथलाताहै अजीज[34]॥
है खुदा सबका नहीं करता शरीक[36]।

रिज्कमें बाहम किसीको लाशरीक ॥
देख आते मत किसीको सहमें जा।
उसकी किसमतकाहैसाथउसकेधरा॥
कहके यह और हटे वहांसे जा रहे।
सामने तकियोंके जा सुस्ता रहे ॥
शामको एक लोटा और दो रोटियाँ।
तकियोंवालेको वहां पर उतरियाँ ॥
और उनके वास्ते ख्वाने तआम।
यक पुलाओंकी रिकाबी एक जाम ॥
जर्फ चीनी और उनपर ख्वानें पोश।
यक तकल्लुफसे उनमें नाय नोश ॥
खाके इब्राहीमने पानी पिया।
शुक्रनेआमतकाफिरयकसिजदाकिया
यह तो नेअमत लेके बस चलते रहे॥
वह जो तकियादार थे जलते रहे।
शाम जब आयी वही फिर उतरियाँ।
साथ यकलोटाके वाँ दो रोटियाँ ॥
मारे गुस्साके उन्होंने यों कहा।
मैं नहीं खानेका खाना आपका ॥
एककोतुमभेजो कलियाँऔरपुलाओं।
मुझकोजौकी रोटियाँरुखीखिलाओ॥
जैसा वह दुर्वेश मैं दुर्वेश हूँ।
जैसा वह दिलरेश मैं दिलरेश हूँ॥
क्यों बढ़ायी एककी यह इज्जतशाँ।
हैं फकीर आपसमें सब एकसाँ ॥

जबकियायहशिकवः[51]उसने आशकार[52]।
तब हुआ उसपर खताबे[53] किर्दगार[54] ॥
कि ऐ फकीर!इतना न भूल अपने तईं।
तुझको शरम[55] इसबातपर आती नहीं॥
उसकी गैर[56] पछे तो वह तो बादशाह ।
मेरी खातिर[57] तज दिया ताजो कुलाह॥
छोड़ कर लज्जात[58] दुनियाकी तमाम ।
वहशराब[59]औवह कबाब[58] औवहतआम[60] ॥
वहहुकूमत साहिबी सब अपनी छोड़।
बन्दगीमें मेरी आया हाथ जोड़ ॥
साहिबी जो छोड़ कर होवे गुलाम ।
क्योंनदूँमैं उसकोयकख्वाने[62] तआम॥
तेरी इस रोटीसे यह खाना है कम ।
याद कर उसके वह नाजो[61] नअम[62] ॥
और अपना वक्त भी तू याद कर ।
किस तरह औक़ात[63] होती थी बसर[64] ॥
एक घसियारा था तू मर्दे गरीब ।
खोदता था घास तू ऐ बेनसीब ॥
जङ्गलोंमें खोदता फिरता था घास ।
एक टका आता था उसका तेरे पास॥
तू हुआ था छोड़ कर उसको फ़क़ीर ।
मां न बेगम थी न बाबा था अमीर ॥
उस मुशक़्क़त[65] से बसर[66] करता था तूं ।
सर पर गट्ठे लेके नित मरता था तू ॥
तुझको मैं पक्की पकायी रोटियाँ ।

भेजता हूँ साथ पानीके यहां ॥
गर रजा पर मेरी तू राजी नहीं।
तो ठिकाना अपना कर यांसे कहीं ॥
दिल फकीरीसे अगर तेरा फिरा।
जाली और खुरपा यह है तेरा धरा ॥
आशकीसे तू हमारे बाज आ।
लेके खुरपा घास अपनी खोद खा ॥
जो खुदा किस्मतमें देवे बेश[६६] ओ कम।
मत रज़ांसे[६७] उसकी रख बाहर कदम ॥
तरफ से अपने न कर बाहर तलब।
खींच मतले फायदा रंजो तअब[६८] ॥
उसने जो समझा हैं सोई खूब है।
तालिबोंको[६९] नित रज़ा[६७] मतलूब[७०] है ॥
अपने तईं सबके बराबर तू न जान।
फहम[७१] कर यह मौलवीकी[७२] बात मान ॥
हम भी ऐसे हैं यह कहना है बुरा।
इज्ज़में[७३] वह आदमी गर है भला ॥
यां खुदीमें[७४] और खुदामें बैर है।
किस तरफ भटका फिरे है खैर है ॥
वन्दगाने[७५] हक्क हैं मिसकीनों[७६] गरीब।
कुब्रसे[७७] दूर और जिल्लत[७८] से करीब[७९] ॥
इज्जत[७३] व गुरबतही[८०] वहां मञ्जूर है।
कुब्र[७७] है जिसम सो हकसे दूर है ॥

पकके गिरपड़ताहै मेवा खाके पर ।
खाँम है जब तक रहे इफलाके पर ॥

सार्खी

दास गरीबी बन्दगी, सत गुरुकाउपकार ।
मान बड़ाई गर्बका, पचि पचि मरै गवाँर ॥
मान बड़ाई कूकरी, धरमराय दरबार ।
दीन लकुटिया बाहिरे, सब जग खाया फार ॥
मान बड़ाई कूकरी, संतन पायी जान ।
पाण्डव जग पान नभई, सुपच विराजे आन ॥

---

१ राज्य । २ पहाड । ३ जंगल । ४ स्थानापन्न । ५ टाट । ६ सूर्द । ८ गुदड़ी । ९ जमीन मिट्टी । १० पानी । ११ अट्टली । १२ लज्जा, शरम । १३ बोझ । १४ नेक = अच्छा । खो = स्वभाव । अर्थात् अच्छे स्वभावको भलेमानस आदमी । १५ ईसा पैगम्बर इसाई धर्मके प्रवर्तक मूल पुरुष । १६ अन्तम । १७ जगह । १८ वहां, उस जगह । १९ फकीर दो प्रकार के होते हैं । एक तो गदा (भखिमांगनेवाले) जिनको संसारी वैभवकी बहुत लालसा है मगर उनको मिलतानही । दूसरे दुर्वेश जिन्होंने संसारको अपने विचार द्वारा त्याग दियाहै । २० इस जगह । २१ दिल = ह्रदय; रेश = जखम घाव । आशय ह्रदय पर चोट खायेहुआ अर्थात् संसार से उदास हुआ पुरुष । २२ बिहतरी, भलाई, नसीहत, उपदेश, उत्तम उपाय । २३ हौसला = हिम्मत, उत्साह; कम हौसला = कमाहिम्मत, अनउदार ॥ २४ रोजी, भोजन । २५ कदापि नही; कभी नही २६। शिकायत, उलाहना । २७। अतिथि । २८ दुख मिटाने वाला, सहानुभूति दिखाने वाला । ३० रोटी । ३१ विश्वास, यकीन । ३२ परीक्षा ३३ निकट । ३४ प्यास । ३५ भाग्य । ३६ एकसाथ । ३७ साथ । ३८ डरता । ३९ हटकर । ४० मठ । ४१ थाल । ४२ गिलास । ४३ वर्तन । ४४ थालीका ढकन । ४५ तैयारी । बनावट ४। ६ खानेपीने के सामान । धन्यबाद । ४८ मुसलमानी एक खाना । ४९ प्रतिष्टा । ५० बराबर, समान । ५१ निन्दा, शिकायत । ५१ जाहिर प्रकट । ५३ क्रोध, कोप । खतावे किर्दगार = ईश्वर का कोप । ५४ कर्ता । ५५ लेना ॥ ५७ खुशी, लिये । ५८ लज्जात = स्वाद । लज्जात बहुवचन है लज्जात को अर्थात् बहुतसे स्वाद । लज्जात दुनिया ॥ संसारी विषय घासना का सुख ॥ ५९ पीनेकी चीज । ६० भोजन, खाना । ६१ लाड । ६२ प्यार । ६३ समय । ६४ करना; गुजरना । ६५ परिश्रम । ६६ अधिक । ६७ मर्जी, इच्छा, आज्ञा । ६८ दुख । ६९ चाहने वाला । ७० चाह । ७१ समझ । ७२ यहां मोलवीसे मतब है मौलाना रूम । ७३ अधीनता । ७४ अभिमान । ७५ ईश्वरके भक्त । ७६ गरीब । ७७। आभिमान । ७८ अपमान । ७९ निकट । ८० गरीबी, दीनता । ८१ सत्य । ८२ कच्चा । ८३ आसमान ।

माया तजे तो क्या भया, मानहिं तजा न जाय।
मानहिं बड़ मुनिवर गले, मान सबन को खाय ॥
कविरा अपने जीवते, ये दो बातां धोय।
मान बड़ाई कारने, अछता मूल न खोय ॥

वार्त्ता ३।

शाह इब्राही अद्धम संसार त्याग देनेके पश्चात् मस्त फकीरों के वेषमें इधर उधर फिरा करतेथे। न कोई उनका विशेष वेष था न चिन्ह। इसलिये लोग उनको पहचान नहीं सकते थे। एकबार ऐसेही फिरते हुए किसी अमीर आदमी ने उन्हें पकड़-कर अपने बाग में माली के काम पर लगा दिया। सद्गुरु की इच्छा जानकर वे अच्छी तरह बाग का काम करने लगे। एक बर्ष जब बागवानी करते उनको हो गया तब एकदिन बाग का मालिक अपने कइ मित्रोंको साथ लिये हुए बागमें आया।शाह इब्राहीम साहबने उस समय बाग में जितने फल फूल थे सब में से थोड़ा थोड़ा लेकर एक ड़ाली बनायी और मालिकबेगके पास ले गये।जब उस अमीर ने डाली में से अनारोंको लेकर खाया तब सब अनार खट्टे निकले।उसने शाहशाहब को बुलाकर पूछा कि, मेरे लिये ये खट्टे अनार क्यों लाया ? उन्होंने जवाब दिया कि, मुझे खट्टे मीठे की कुछ खबर नहीं है। उस अमीर ने कहा कि, तुम कितने दिनसे इस बाग में रहतेहो ? उन्हों ने कहा एक वर्षसे। अमीर ने कहा एक वर्षसे बागवानी करके भी तुमने आजतक बाग के खट्टे मीठे अनारों को नहीं यह जाना ? शाह इब्राहीम ने उत्तर दिया तुमने मुझे बाग की रक्षा करने के लिये रखाथा कि, फलों को खाने के लिये ? अमीरने

कहा रक्षाके लिये ? उन्होंने कहा तब मैं फल कैसे खा सकता था ? अगर रक्षक भक्षक बनजाये तब तो रक्षा का नामही संसार से उठ जाय । आपकी बात को सुनकर वह अमीर बड़े आश्चर्य में आया । फिर जाँच करने पर उस अमीर को मालूम हुआ कि, वहतो शाह इब्राहीम अद्धम हैं तब तो वह हाथ जोड़ कर उनके पैर पर गिरपड़ा और अपना अपराध क्षमा कराने लगा । तब वे हँसकर उस अमीरको उपदेश देकर चलदिये.

वार्त्ता ४ ।

कहते हैं कि,बादशाहत त्याग देने के पश्चात् सुलतान इब्राहीम अद्धम शाह दस वर्ष तक नेशापुर के जंगल की एक गुफ़ा में रहकर भजन करते रहे । आठवें दिन वे गुफ़ा से निकल कर जंगलकी लकडियां इकट्ठी करके बस्ती में लेजाकर बेंचआते और उससे जो कुछ मिलता उतनेही में आठ दिन के भोजन का सामान खरीद कर लेआते और आठ दिनतक बैठे भजन करते ।

लिखाहै कि,इस दस वर्ष की तपस्या और एकान्त बाससे उन्हों ने अपने मन तथा इंद्रियों को पूर्ण रीतिसे जीत लियाथा।इसके प्रमाणमें लिखाहै कि,जब नेशापुर से शाहइब्राहीम अद्धम रवाना हुए तब एक जहाज़ पर चढ़ कर अरब को चले । संयोगसे उस जहाज़ पर एक अमीर भी जारहाथा । उस अमीर के साथ सब अमीराना सामान नाचराग वगैरह थे।ठट्ठा मसखरी से अमीरों को खुश करने वाले भांड़ भी उसके साथ थे । एक रातको भांड़ो ने कहा अगर कोई आदमी मिलता तो उसपर से हमलोग अपनी मसखरी उतारते।उस अमीर ने हुक्म दिया कि,देखो

ज़हाज़ में कोई गरीब भूखा मिल जाय तो उसे रुपया दो रुपया देकर अपना काम निकाल लो। आखिर कार ढूंढते ढूंढते उस अमीर के आदमियोंने शाह इब्राहीम अद्धमको किसी कोने में बैठा हुआ पाया। इनका विचित्र वेष और बढी हुई दाढी वगैरह देखकर सबने पागल समझ कर उन्हें पकड़ लिया और अमीर के मजलिस में लाकर बैठा दिया। फिर तो भांड़ों ने मनमानी की।जितने खेल खेलते अन्तमें सब उन्हींपर उतारजे अंतमें जब उन्हें बहुत तकलीफ हुई तब आकाश वानी हुई कि, अगर तुम कहो तो इस जहाज को डुबाकर इन सब मूर्ख बदमाशों को इनके कियेका दण्ड देदूँ। शाह इब्राहीमने बड़े धीरज के साथ कहा कि,

खींच कर सीने में अपने एक आह।
बोला इब्राहीम ऐ मेरे अल्लाह॥
कुछ नहीं इस अमरमें इनकी खता।
करता अगर बसीरत इनको तू अता॥
कजरवी क्यों करते ऐ दानायराज।
फेल बद से आप करते एहतराज॥
राह में गर बेबसर के चाहहो।
जो न रोके उसको वह गुमराह हो॥
मर्दबीना को है लाजिम दे बता।
वरनः गोया उसका खून उसने लिया॥
वह है या रब्ब जुर्म असियां से बरी।
कुछ नहीं उसमें खता उनकी जरी॥
क्यों कि गुफ़लतसे है मसलूबुल हवास।
जेहल नादानी से मकलूबुल हवास॥

फिर उनने कहा कि,हे प्रभु!क्या मैं तेरा बन्दा इस काबिल हूँ और ऐसा नापाक हूँ कि,मेरे स्पर्श के पाप से इतने बडे जहाज को डुबाकर इतने निष्पापों का अन्त करेगा। प्रभु! तूतोदयालुहै अधम उद्धारनहै ऐसा क्यों नहीं करता कि यदि केवल मेरेही कारण से तुझे इतनी हत्या करनी मड़ती हो तो मुझको ही डुबादे अगर नहीं तो इन सबों को वह ज्ञान दे कि, ये तेरी बड़ाईको समझें और इनका हृदय दया और ज्ञान से पूर्ण हो जावे। उनके इस प्रकार आशिरर्बाद करनेके पश्चात् तत्का-लही अमीर सहित समाज़ के सब आदमियों का हृदय शुद्ध और ज्ञान से पर्ण होगया।उस समय सबने उनको पहचाना। फिर तो सब उनके पगपर गिरकर क्षमा कराने लगे । उन्होंने सबको उपदेश देकर संतोष दिलाया ॥

वार्त्ता ५ ।

एकबार एक स्मशान में बैठे हुए शाह इब्राहीम अद्धमसे किसीने पूछा कि, बादशाही छोड़कर मरघटों में क्यों बैठते फिरते हो? उन्होंने उत्तर दिया कि, संसार के मनुष्यों को मैं चार प्रकार का देखता हूं। १। कोई तो जीताहै और संसार में मौजूद हे॥ २॥ कोई मांके पेटमें है। ३। कोई अपना कर्म पूरा करके आनेही चाहताहै । ४ । कोई मरगये हैं । इनमें से मरे हुए लोग पुकार रहे हैं कि, ओ संसार के आद-मियों! जल्दी जल्दी मरो कि, क्यामत जल्दीहो और हमलोग कब्रके कष्ट से छूटें । जो माताके पेठ में आचुके हैं और जो आने वाले है वे पुकार रहे हैं कि, ओ संसार के मनुष्यो। जल्दी संसारको छोड़ो कि,हमारे आने को स्थान मिले। आशय यह है कि, एक ओर से भगाते हैं और

दूसरी ओरसे बुलाते हैं। इस दशा में संसारमें रहने की इच्छा किस प्रकार होसकती है। इसलिये मैंने मौतको और मरघट को अन्तिम स्थान जानकर सेवन करना आरम्भ कियाहै।

वार्ता ७।

एक बार फकीर होजाने के बहुत दिन पीछे शाह इब्राहीम अद्धम बलखमें गये और शहर से बाहर एक जलाशय के किनारे बैठे। आने जाने वालों ने उन्हे देख कर पहचाना और उनके बेटे को जो उस समय वहां के बादशाह थे उनके आने की खबरदी।

बादशाह बापके आने की खबरको। सुनकर चट सवारी मँगाकर बहुतसे मुसाहेब और नौकर चाकरों को साथ लिये हुए वहां पहुचा। शाह इब्राहीम के आनेका समाचार जैसेही बलख के लोगों को पहुंच वैसेही जो जिस दशामें था अपना अपना काम छोड़कर दौड़ पड़ा थोड़ी ही देरमें शाह इब्राहीम के निकट बड़ा भारी मेला लग गया।

सुलतान इब्राहीम के पास में सिवाय एक गुदड़ी के दूसरा वस्त्र या पात्र आदि कुछ नहींथा। कठिन तपस्या के कारणसे उनका शरीर भी बहुत दुबला पतला और कमजोर देख पड़ताथा। बापकी वह दशा देखकर बादशाह बने हुए आत्म दृष्टिसे शून्य बेटेने कहा पिताजी ? आपने बादशाहत छोड़कर संसार भरका कष्ट अपने शिर उठाके क्यालाभ उठाया ?।

जो आपका शरीर मखमल और फूलोंकी सय्या पर सोने वाला था अब उसके लिये टाट भी आपके पास नहीं है। जिसके सम्मुख हजारों दास दासियाँ सेवा करनेके लिये हाथ जोड़ खडेरहते थे आज वही इस प्रकार बेकस और लेचारक समान

भूखे प्यासे जमीन पर सोता और दुःख उठाता फिर रहाहै। पूज्य पिता जी ! एक चीज को छोडकर मनुष्य दूसरी वस्तुको उन्नति की आशासे स्वीकार करताहै। आपने तो उलटा प्राप्त सुख को भी खोकर अपनी ऐसी दशा बनाली है जिसे देखकर मुझे शरम आती है और आपकी यह प्यारी प्रजा आठ आठ आसूं रो रहीहै। इसी लिये मैं आपसे पूछता हूँ कि, आपको इस त्याग में क्या प्राप्त हुआहै ?।

बेटेकी बातको सुनकर उसे कुछ उपदेश देने के विचारसे सुलतान ने कहा, बेटा ! मैंनेजो कुछ कमाया है वहतो पीछे बताऊंगा पहले तू बतला कि, बादशाही पाकर तूने अपनी उन्नति कहांतक की है ? बापकी बात को सुनकर बेटा हंसकर बोला कि, देखिये आपके राज्य छोडकर चले जानेके पश्चात् मैंने अमुक अमुक देश अपने बाहु बलसे जीतकर स्वाधीन कर लियाहै और अमुक अमुक सुधार राज्यमें फैलायाहै। मेरे अधिकारमें क्या नहीं है ? जिसको चाहूं आज गरीब बनादूं जिसको चाहूं आज कुबेर कहलादूं। जिसको चाहूं उसका जान बखशी करदूं जिसको चाहूं मार डालूँ। मेरे नाम को सुनकर शत्रु डरते है। मेरी आज्ञा को कोई तोड नहीं सकता।

इतना सुनकर सुलतानने कहा कि, बेटा ! अगर सच मुच तुझमें ऐसी सत्ता आगयीहै तो ले मेरी यह सुई इस तालाब मेंसे निकलवादे। इतना कहकर गुदड़ी सीनेकी सूईको तालाब में फेंकदिया।

यह देखकर बेटा (बादशाह) ने हंसकर कहा यह कौन बडी बातहै। एक नहीं लाखों सुई आपको मंगवा देताहूं। सुलतान ने कहा मुझे दूसरी सुई नहीं चाहिये मुझे तो मेरीही सुई चाहिये।

बादशाह ने उसी समय वजीर को आज्ञादी और आनन फानन में देखतेही देखते हजारों पानी में डुबकी मारनेवाले और जाल डालने वाले हाजिर होगये। यद्यपि सूईका निकाल लेना बादशाह सहल काम समझता था तथापि सब उपाय करने परभी सूईका पता नहीं लगा। तालाब के तह में जमें हुए सब कीँदों कीच साफ होगये। मगर सूईका पता नहा लगा। तबतो बादशाह अपने मनमें शरमाकर पिताके पास जाकर कहने लगा कि, वह सूई तो नहीं मिली उसका मिलना असम्भव है दूसरी सुईयां हाजिर हैं जितनी चाहिये लीजिये।

सुलतान इब्राहीम ने कहा कि, बेटा तूने यह क्या उन्नति की कि, एक सूई भी तालाब से नहीं निकलवा सकता? खैर अब मेरी कमाई को भी देख और अपनी कमाई से मिला। इतना कहकर सुलतान ने आंख बन्द करली एक क्षण के बाद आंखखोल कर तालावकी ओर देखा तब आगिनित जल चर मछली आदि जीवधारियों को किनारे जलमें खड़ा देखा। बादशाहने उनसे कहा प्यारी ईश्वरकी सृष्टिकी मछलियो? क्या तुम मेरा एक काम कर सकोगी? सब जल चरोंने एक जबान होकर कहा जो आपकी आज्ञा हो करने को तैयार हैं। जल चरों को बोलते सुनकर बादशाहसे प्रजा तक सब आश्चर्य में आगये। सुलतानने मछलियोंसे कहा कि मेरी एक सुई पानीमें है उसे ढूँढकर लादो। इतना सुनतेहीं मछलियां गोता लगा गयीं। थोडीदेरमें एक मछली सूई मुहंमें लिये हुई किनारे आयी। बादशाहने अपने हाथ से सूई लेकर देखी तो वही सूई थी। फिरतो वह बापके पगपर गिरकर रोते और अपनी अज्ञानता के अपराध को क्षमा कराने

लगा। प्रजा चारों ओर से जय जयकार वाणी उच्चारने लगी। इतने में सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहब वहां से अन्तरध्यान होगये।

वार्ता ८।

कहते हैं कि, जब सुलतान इब्राहीम अद्धम मक्का के निकट पहुँचे तब सुना कि मक्का के पुजारी और यात्री लोग उनकी अगुवानी को आरहेहैं। तब वो जमात से निकल कर अलग होकर आगे चले गये जिसमें उनको कोई पहचान न सके। मक्का के महात्माओं के सेवक लोग जो अपने अपने मालिकों से आगे आरहे थे पहले सुलतान इब्राहीम अद्धम से मिले। उनलोगों ने आपसे पूछा क्या सुलतान इब्राहीम अद्धम यहांसे नजदीक हैं? सब महात्मा लोग उनसे मिलनेको आरहे हैं। आपने उत्तर दिया कि, वे उस अधर्मीसे क्या चाहते हैं? सेवकों ने गाली देते सुनकर आपको खूब मारा और गरदनियां दी और कहने लगे कि, तू ऐसे महात्मा को अधर्मी कहता है? असलमें तूही अधर्मी है। आपने कहा हां भाई सोई तो मैंभी कहरहा हूं। वे सब तो आपको मारकूट के आगे बढ़े और आप अपने मनसे कहने लगे कि, क्यों ओ दुष्ट तूने अपने किये का फल पाया या नहीं? अभी कैसा खुश हो रहा-था कि, मक्का के महात्मा लोग हमारी अगुवानी को आरहे हैं। इसी प्रकार से आपही आप आप अपने मनको समझा रहेथे इतने में लोग आगये और आपको पहचान कर आपसे क्षमा मांगने लगे। फिर आप मक्का में जाकर बहुत दिनों तक रहे। आपके बहुत से चेले भी हो गये। आपके चेले गुदड़ी ओढते और खड़ी टोपी पहनते थे।

वार्त्ता ९।

जब आप बलख छोड़ कर फकीर हुए थे उस समय आपका एक छोटा पुत्र था जब वह लड़का बड़ा हुआ तब उसने अपनी मांसे पूछा कि मेरा बाप कहां है? मांने सब हाल कह सुनाया और यहभी कहा कि सुननेमें आता है कि, आजकल मक्कामें रहते हैं। लड़के ने मांसे कहा "अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं भी मक्का जाऊँ, तीर्थभी करूँगा और पिताको ढूंढकर उनका दर्शन भी करूँगा" मांने कहा अकेले तू क्यों जायगा मैं भी मक्का की जेयारत को जाऊँगी। फिरतो लड़केने वजीरों को हुक्म दिया कि,शहर भर में डौंडी पिटवादो कि, जिसको मक्का चलना हो वह चले उसका सब खर्च मेरी ओरसे दिया जायगा। फिर चार हजार आदमी मक्का जानेको तैयार हुए। सबको साथ लेकर लड़का मक्का पहुँचा। वहाँ जाकर गुदड़ी वाले फकीरों की एक जमात देख कर उनसे पूछा कि, तुमलोग इब्राहीम अद्धम साहब को जानते हो? उन्हों ने कहा वे तो हमारे गुरु हैं। फिर पूछा वो कहां हैं? उत्तर मिला कि वो लकड़ियों के गट्ठे लाने जंगलमें गयेहैं। क्योंकि जब वो जंगल से लकड़ी लेकर आयेंगे और बेचकर रोटी लायेंगे तब हमलोग खायेंगे। इतना सुनकर लड़का जंगल की ओर रवाना हुआ। आगे जाकर एक बुड्ढेको लकड़ियों का गट्ठर शिर पर रखे हुए आते देखा। लड़का सुलतानकी वह दशा देखकर रोने लगा। फिर उनके पीछे पीछे बाजार तक गया। जहां जाकर उन्होंने लकड़ी रखकर पुकारा कि कोई है जो माल हलाल (सुकृति की कमाई) को माल हलालके बदले लेवे। एक आदमी आया उसने आपसे लकड़ियाँ लेलीं

और उसके बदले में रोटियाँ देदीं । आप रोटी लेकर जमातमें आये और साथियों के आगे रखदीं। लोग रोटी खाने लगे और आप भजन में लगे ।

सुलतान इब्राहीम अद्धम साहेब सदा अपने चेलों से कहा करते थे कि, "देखो बेदाढी मूँछके लड़के और स्त्रियों से सदा सचेत रहना उनकी ओर कभी ध्यान देकर मत देखना"। उनके शिष्यवर्ग सदा उनकी आज्ञाका पालन करते थे।

काबाकी परिक्रमाके समय संयोगसे सुलतान इब्राहीम अद्धमका लड़का उनके सन्मुख आगया । आपने दृष्टि भरकर ऊसकी ओर देखा । शिष्य लोग उनके उस कामसे आश्चर्यमें आये । जब परिक्रमा कर चुके तब आपके शिष्योंने आपसे हाथ जोड़कर विनय किया कि दीनबन्धु हमको तो आपने आज्ञा दी है कि, बिना मूंछ डाढी वाले बालकों और स्त्रियोंकी ओर दृष्टि मत करना किन्तु परिक्रमाके समय आपने स्वयम् एक बालककी ओर टकटकी लगाकर देखा था इसका क्या कारण है ?

शिष्योंकी बातको सुनकर आपने उत्तर दिया कि,जिस समय मैं बलख छोड़कर चला था उस समय मेरा एक छोटा लड़का था मुझे इस लडकेको देखतेही ऐसा जान पड़ा कि यह वही लडका है।आपकी बात सुनकर आपके शिष्योंमेंसे एक शिष्य यात्रियोंके स्थानमें गया और बलखके यात्रियोंको ढूँढते ढूँढ ते आपके पुत्रके पास पहुँचा। उस समय वह लड़का अपने खीमेंमें बैठा हुआ पुस्तक पढ रहा था और रो रहा था उस शिष्यने जाकर उस लड़केसे पूछा कि आप कहाँसे आये हैं ? लड़केने कहा-बलखसे आया हूँ। फिर उसने पूँछा आप

किसके लड़के हैं ? उत्तर मिला कि, इब्राहीम अद्धमके। उसने पूँछा कि, आपने उनको देखा है? लड़केने कहा कलके सिवाय मैंने उनको कभी नहीं देखा। किन्तु मुझे यह भी निश्चय नहीं है कि, जिनको मैंने देखा है वह मेरे पिता हैं कि, नहीं।मैंने उनसे इस डरके मारे कि, वो तो हमही लोगोंसे भाग कर यहां आये हैं कहीं हमको जानकर यहांसे भी कहीं भाग न जावें कुछ न पूछा। आपके उस शिष्यने कहा कि, आप मेरे साथ आइये मैं आपको आपके पितासे मिला दूँ। फिर तो दोनों मां बेटे और बहुतसे आदमी उस शिष्यके साथ चले। जब सब आपके सामने आये तब आपकी स्त्रीने आपको देखलिया देखते ही वह विकल होगयी। और रोने लगी। फिर लड़केसे बतलाया कि, देखो तुम्हारे बाप यही हैं। लड़का भी रोने लगा। उस समयकी दशा ऐसी करुणापूर्ण थी कि, आपके सब शिष्य भी उनके साथ रोने लगे। मोहने करुणाके स्वरूपमें सबके ऊपर अपना जाल फैलाया।

लड़का रोते रोते बेहोश होकर गिरपड़ा जब चेतमें आया तब बापके पगपर गिरकर प्रणाम किया। आपने उसे गले लगाया फिर उससे उसके पढ़ने लिखने और धर्मकी बातोंको पूछकर आपने चाहा कि, वहांसे उठकर चले जावें। किन्तु आपके पुत्र और स्त्रीने न छोड़ा। तब थोड़ी देरतक चुप रहनेके बाद आपने आसमानकी ओर मुहँ करके कहा हे प्रभु! तू मेरी सहायता कर! आपका इतना कहना था कि पुत्र आपहीके गोदमें मृत्युको प्राप्त हुआ।

शिष्योंने लड़केको मरते देखकर पूछा या सतगुरु! यह क्या हुआ? आपने कहा जिस समय मैंने इस लड़केको गले

लगाया था उस समय मेरे हृदयमें मोहका संचार हो आया था तब परमात्माकी ओरसे आज्ञा हुई थी कि, ऐ इब्राहीम तू मेरे प्रेम और भक्तिका दम भरता है और स्नेह दूसरोंसे करता है। जिस बातके लिये शिष्योंको सबसे अलग रहनेको कहता है उसीको तू आप पकड़ता है। जब मैंने यह सुना तब मैंने आशीर्वाद किया कि, हे प्रभु ? मेरी रक्षा तेरेही हाथमें है, यदि मेरे पुत्रका मोह मुझे तुझसे अलग करने वाला है तो याती मुझे मृत्यु देदे या उसीको। बस जो कुछ साहबने किया सब ठीक किया। इतना कहकर आप वहांसे शिष्यों सहित उठकर चले गये। बलख वाले लोग रोते पीटते लाशको दफन करनेके लिये ले गये। *

वार्त्ता १०।

एकबार हजरत इब्राहीम अद्धमक पास कोई आदमी एक हजार दिरम लाया और विनय पूर्वक प्रार्थना की कि, आप इसे स्वीकार कर लीजिये। आपने उससे कहा कि, मैं मँगतों से कुछ नहीं लेता। उस आदमीने कहा मैं मँगता नहीं हूँ बलकि बड़ा धनवान हूँ। तब आपने उससे पूछा कि, जितना तेरे पास है उससे अधिक मिलनेकी इच्छा तेरे हृदयमें है कि, नहीं ? उसने कहा हां अधिकतो जरूर चाहता हूँ। तब आपने कहा कि, तब तो तू बड़ा भिखमँगा है इसलिये मैं तुझसे कुछ नहीं लेसकता। मैं उसीसे लेता हूँ जो इतना पूरा है कि, कुछ नहीं चाहता।

* वर्तमानके त्यागके अभिमानी साधु और महंतोको विचार करना चाहिये क्यों कि, येभी तो अपने को सुलतान इब्राहीम अद्धमसे बढकर त्यागी बतलाते हैं।

वार्त्ता ११।

एकबार एक आदमी दसहजार अशरफियाँ लेकर आपके पास आया और उनको स्वीकार करानेके लिये हठ करने लगा। आपने उससे कहा कि, तू इस थोड़ेसे सोनेके बदले मेरी साधुता मोल लेके मुझे त्यागियोंकी जमाअतसे निकलवाना चाहता है? इतना कहकर आप वहांसे उठकर चले गये।

धन्य है इस त्यागको। आजकलके वैरागी भी अपनेको महान त्यागी मानते हुए भी एक एक पैसाकेलिये संसारी तुच्छ जीवोंके पास दीनता करते और झूठी खुशामद किया करते हैं। क्या कोई सच्चा विचारवान उन्हें वैरागी कह सकता है? कदापि नहीं।

वार्त्ता १२।

एक आदमी ने आपसे विनय किया कि, आप मुझे ऐसा उपदेश दीजिये जिसपर अमल करके मैं सन्त पदवी को पा सकूँ। आपने उससे कहा—सन्त बनने के लिये सबसे पहली बात यह है कि, लोक और परलोक दोनोंसे चित्त उठाकर केवल साहबमें लगादे। साहब के सिवाय अपने हृदयसे दूसरा सब कुछ निकाल दे। दूसरे—हरामकी कमाई छोडकर सुकृति कमाईसे उदर निर्वाह कर। क्योंकि जिसका आहार शुद्धहै उसका हृदय शुद्ध होताहै, और जिसका हृदय शुद्ध होताहै, उसीके अन्तःकरणमें साहबका सच्चा प्रकाश प्रगट होताह। जिसने अपना आहार शुद्ध किया है वह अवश्य अपने पदको पहुंचा है। तीर्थ व्रत और नाना प्रकारके ऊपरी तपस्यासे चित्त शुद्ध नहीं होता बरन आहार शुद्ध होनेसे ही अन्तः करण शुद्ध होता है।

वार्त्ता १३ ।

एक बार लोगोंने हजरत इब्राहीम अद्धमसे कहा कि, अमुक सन्त बडा सिद्ध और ईश्वरतक पहुंचा हुआहै। वह सदा ध्यान में ही रहता है और दूर दूर देशकी बातोंको कह देता है। और सदा तपस्या में ही रहता है । आपने उन लोगोंसे कहा कि, मुझे उसके पास लेचलो मैं उसका दर्शन करूंगा। लोग आप को उसके पास लेगये । आपने वहां जाकर देखा कि,वह उससे भी बढकर सिद्धिवाला है। उस सिद्धने आपसे प्रार्थना की कि, आप तीन दिन तक यहां रहिये आप रहगये । उसके व्यवहार को देखकर आपने विचार किया तो मालूम हुआ कि, उस का भोजन आदि निर्वाह दम्भकी कमाईसे चलता है । तब आप-को उसकी दशा पर दया आयी । तीन दिनके बाद आपने उस सिद्ध को नेवता देकर अपने कुटी पर बुलाया । जब वह आप के पास आया तब दूसरे ही दिन उसकी सिद्धि लुप्त होने लगी तीसरे दिन तो वह कोरा कोरा सन्त रह गया । तबउसको बडा आश्चर्य हुआ उसने आपसे कहा कि, आपने मेरे ऊपर क्या करदिया मेरा सब चमत्कार जाता रहा ? आपने उसको उत्तर दिया कि, पहले तुम हरामकी कमाईसे अपना पेट भरते थे इस कारण काल ने तुम्हारे हृदयमें प्रवेश करके तुम्हे अनेक प्रकारकी सिद्धि का लालच दिखाकर साहब के देशसे काल देशमें लेगया था। अब तुम तीन दिनसे सुकृति की कमाई का भोजन करतेहो इस कारण कालका राज्य तुम्हारे हृदय से उठ गया है । अब तुम चाहो तो साहिबका भजन कर सत्य लोक का साधन कर सकते हो ।

सुलतान इब्राहीम की बात उस समयतो उसको अच्छी नहीं

लगी परन्तु जब वह लौटकर अपने स्थानपर आया और सुलतान इब्राहीम अद्धम साहेब के आचार विचार को अपने कर्तव्यों से मिलाने लगा तब उसे प्रत्यक्ष ज्ञात होगया कि, वतो अपने उचित परिश्रम द्वारा अपनी संसार माया चलाते हैं और– वह अपनी संसार यात्राके लिये नाना प्रकार के वेष और दम्भकी बातोंसे संसार को बहकाकर अपना नाम बढ़ाता है। जिन बातोंके भेदको वह स्वयम नहीं जानता उसको जानने का डौल बनाकर लोगो को ठगता और भ्रममें डालता है। इस प्रकार से बोध होतेही उसने पश्चात्ताप करके अपने सब स्वांगों को तिलाँजली देकर काल दशसे निकलने और सत्यराज्य म प्रवेश करने के लिये सच्चे संतोका संग करना आरम्भ किया।

वार्त्ता १४।

एक दिन परिश्रम करने पर भी आपको भोजन नहीं मिला। आपने साहिब को धन्यवाद दिया। इसी प्रकार सात दिन तक आपको भोजन नहीं मिला और बराबर आप साहिब का धन्यवाद करतेरहे। आठवें दिन निर्बलता बहुत बढ़गयी तब आपके मनमें कुछ भोजन मिलने की इच्छा हुई। साहिब की कृपासे एक मनुष्य आकर खड़ाहुआ और विनय करने लगा कि, आप मेरे यहां भोजन करने चलिये। उसके प्रेस और भक्ति भाव को देखकर आप उसके साथ गये। जब आप उस आदमी के घरपर पहुंचे तब उसके अमीराना ठाट और मकानात के देखनेसे मालूम हुआ कि, कोई बडा धनी आदमीहै। उसने आपको एक सजी हुई कोठरीमें लेजाकर बैठाया फिर वह आपके परा पर गिरकर विनय पूर्वक कहने लगा कि, मैं

आपका मोल लिया हुआ दासहूँ सो यह सब वैभव आपकी सेवामें अर्पण करताहूँ, आप इसे स्वीकार कीजिये । आपने उसी समय उससे कहा कि, आजसे मैं तुझे दासत्त्व से स्वतंत्र करताहूं और यहसब माल असबाब भी तेरेही को देताहूं । इतना कहकर आप वहांसे उठकर जंगल में चले आये और साहिवसे प्रार्थना करने लगे "हे प्रभु ! मैं आजसे तेरे सिवाय दूसरा कुछ न चाहूंगा । तूतो टुकड़े रोटीके बदले संसार भरकी माया मेरे गले बांधना चाहता है" । कहते हैं कि, आपने मनका दण्ड देनेके लिये कई दिनों तक और भी भोजन नहीं किया ।

सद्गुरु ने सबसे अधिक मनके ऊपरही ध्यान रखने को बारंबार कहा ह । यथा–

साखी–मनके मते न चालिये, छाडि जीवकी बानि ।
कतवारीके सूतज्यों, अलटि अपूठा आन ॥
मनके मते न चालिये, मनका मता अनेक ।
जो मनपर असवारहै, सो साधू कोइ एक ॥
चिंता चित्त विसारिकै,फिरी न बूझिये आन ।
इन्द्री पसारा मेटिये,सहज मिले भगवान ॥
मनको मारो पटकिके, टूक टूक ह्वै जाय ।
टूटे पीछे फिर जुटै, बीच गांठ रहि जाय ॥

मनका विशेष वर्णन मनबोध ग्रन्थमें देखनेसे मालूम होगा ।

वार्त्ता १५ ।

सुलतान इब्राहीम अद्धमसाहबको निद्रा नहीं आतीथी । एकबार बहुतसे आदमियोंने मिलकर इस बातकी परीक्षा ली । आपसे पूछा कि, आपको निद्रा क्यों नहीं आती ? आपने उत्तर दिया जिस कालने बडे बडे ऋषि मुनि, पीर, पैगम्बर

और औलियाओंको साहिबसे विमुख करदिया । वह सदा जाग कर सत्यपथके जीवोंको भटकानेकी युक्ति रचता रहताहै, तब हमको सोनेकी फुरसत कैसे मिलसकतीहै ?

सचहै । साहबने कहाह ।

काल खडा शिर ऊपरे, जागु बिराने मीत ।
जाको घर है गैलमें, सोकस सोवै निचिंत ॥

वार्त्ता १६ ।

एकबार सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब एक टूटेहुए मकानमें ठहरे हुएथे । उसमें औरभी बहुतसे मुसाफिर उतरे थे । रातको ठंढी ठंढी हवा और साथही साथ पानीके छीटेंभी पड़नेलगीं । उस मकानका द्वार टूटाहुआथा । इससे मकानके अन्दर ठंढी हवा और पानी आकर मुसाफिरोंको कष्ट पहुचा रहेथे । आपसे उनका कष्ट देखा न गया।आप चुपचाप उठकर द्वारपर जाखड़े हुए । जिससे अन्दरके मुसाफिरोंको तो आराम हुआ किन्तु आप ठंढसे ठिठुरगये । सवेरा होनेपर लोगोंने देखकर पहचाना । और आगसे सेकनेपर जब आपको होश आया,तब लोगोंने पूछा किं, आपने ऐसा क्यों किया?तब आपने कहा कि, बहुतसी जानोंको बचानेके लिये एक का जान काममेंआवे और बहुतोंकी तकलीफ दूर करनेकेलिये एकको थोड़ी तकलीफ उठानी पड़े तो इससे बढकर अच्छा काम क्या होसकताहै । इसलिये मैं द्वार पर खडा होगया जिससे एक मेरी तकलीफ के बदले इतने मुसाफिरों को आराम होवे । सचहै

दया भाव जानै नहीं, ज्ञान कथे बेहद ।
तेनर नरकै जायँगे,सुनि सुनि साखी शब्द ॥

वार्त्ता १७ ।

सहलविन इब्राहीम नामक संतने काहहै कि, एकबार वो सुलतान इब्राहीमके साथ सफरमें थे, संयोगसे वो बीमार पड़गये। सुलतानके पास जोकुछ बस्त्रादिथा बेंचकर उनकी रक्षामें लगादिया। अन्तमें जब कोई सवारी भी नहीं रही तब सहलबिन इब्राहीने कहा "मैं बहुत कमजोर होगयाहूँ अब आगे कैसे जासकूंगा ?" आप उन्हे अपनी गर्दनपर बैठाकर तीन मंजिलतक लेगये, जबतक वो अच्छे भी होगये। ❀

वार्त्ता १८।

सुलतान इब्राहीम अद्धमके साथ जो कोई रहनेकी इच्छा प्रकट करताथा। आप उससे तीन बचन लेलेतेथे तब उसको अपने साथ रखतेथे।

१ पहला नियम उनका यह था कि, आप किसीसे सेवा नहीं कराकर सबकी सेवा आपही करते थे।

२ दूसरा नियम यह कि, भजन करनेके समय का सबको सूचना देना अपने ऊपर रक्खाथा।

३ नियम यह था कि, मण्डली का कोई आदमी भी सुकृति की कमाई से जो कुछ कमा के लाता था उसको मण्डली में समान उपयोगमें लगाते थे।

इन नियमों में से एक भी नियम जिसको अस्वीकृत होता था उसको अपनी मण्डली से बाहर करदेते थे।

---

* नोट–धन्यहै इस पर उपकारको। आजकलके साधुओंको ध्यान देकर इसबातको विचारना चाहिये क्योंकि, वर्तमान मे साधुओंकी यह नीती होगयी है कि, सफर तो सफर किसी विशेष स्थानपर भी कोई बीमार पडजाय तो उसे एक गिलास पानी तक देना बुरा समझते हैं। मैंने बहुतसे ऐसे दृष्टान्त देखेहैं और स्वयं भी उनके संग रहकर भोग लियाहै।

आज कलके महंतोंको इसबात पर ध्यान देना चाहिये क्यों कि, वर्तमान के महंत या मण्डली के मुखिया साथके साधुओं की पूजा और भेट को भी हड़प जाते हैं।

वार्त्ता १९।

एकबार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्धम साहबसे पूछा कि, आपका पेशा (धन्धा) क्या है? आपने उत्तर दिया "मैंने संसारको तो उसके चाहने वालोंपर छोड़ दिया है और परलोकको परलोकके चाहने वालों के लिये। किन्तु अपने लिये मैंने केवल साहबका भजन रखाहै। सच है साहबने कहा है।

साखी–माला जपूं न कर जपूं, मुखसे कहूं न राम।
मेरा हरी मोंको जपे, मैं पाऊं विश्राम॥

वार्त्ता २०।

एकबार किसीने सुलतान इब्राहीम अद्धमसे पूछा कि, आपने ऐसी अधीनता और दासापन कहाँसे सीखी। आपने उसे उत्तर दिया कि "एक बार मैं ने एक दासको मोल लिया। जब उसे साथ लेकर अपने स्थान पर आया तो उससे पूछा कि, तेरा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया कि, जिस नाम से आप पुकारें वही मेरा नाम है। फिर मैंने पूछा तू खाता क्या है? उसने कहा जो आप खिलावें। फिर मैंने पूछा कि, तू पहनता क्या है? उसने जबाब दिया जो आप पहनावें। फिर मैंने कहा तू करता क्याहै? उसने कहा जो आप हुक्म देवें। फिर मैंने कहा तू चाहता क्या है? उसने कहा जो दास ह उसको अपनी इच्छा कहां है? जिसको अपनी इच्छा है वह दासही नहीं है। आप फरमाते हैं कि, उस दास की बातों को सुनकर उसीदम उसको दासत्व से मोक्ष देदिया

और उसीदम से अपना सब कुछ साहब को सौंपदिया । फिर जैसा वह चाहता है करता है । मैं नतो आधीनता करता हूं न दासातन जो कुछ है साहब का है मेरा कुछ नहीं ।

नोट—वर्तमान काल के दास पदवी के अभिमानी कबीर पंथी साधुओंको उपर्युक्त सुलतान के दास के वचनों पर ध्यान देना चाहिये क्यों कि, यद्यपि आजकल के कबीरपंथी साधुओं के नामम दास शब्द अवश्य जुटा होता है और उनके मनमें भी दास शब्दका बड़ा भारी अभिमान रहता है यहां तक कि, यदि किसी कबीर पंथीके नाम में दास शब्द न जुटाहो अथवा किसिका नामही ऐसाहो कि, उसके नामके साथ दास शब्द का जोड़ न मिलता हो तो उस दास शब्द से हीन सच्चे दास-को भी वचनों और व्यंगों के मारे तंग करते रहतेहैं। और बल पूर्वक उसके सुन्दर प्रसिद्ध नामको बिगाडने का प्रयत्न करते हैं। और आप दास कहलाकर भी स्वामी पनेके ऐसे दम्भ और अहंकार में पडे रहतेहैं कि,अपने गुरु (जैसे माता पिता, दीक्षा गुरु आदि)से भी मान चाहते और उनसे अपना पग पुजवा-तेहैं । और सतगुरु के बचन का ध्यान भी नहीं रखते । क्यों कि, सतगुरु का वचन है ।

गुरुको नीचा करि जानई, गुरु से चाहे मान ।
सोनर नरके जायगा, जन्म जन्म होय स्वान ॥
दासातन तो हृदय नाहिं, नाम धरावै दास ।
पानीके पीये बिना, कैसे मिटे पियास ॥
नाम धरावै दास जो, दासातन हो लीन ।
कहै कबीर लौलीन बिनु,स्वान बुद्धि कहि दीन ॥
दासातन हृदय बसै, साधन सों आधीन ।

कहै कबीरा दास सो, दास लक्ष लौलीन ॥
स्वामी होना सोहरा, दोहरा होना दास।
गाड़र आनी ऊन को, बांधी चरै कपास।
निर्बन्धन बन्धा रहै, बन्धा निर्बंध होय।
कर्म करै कर्ता नहीं, दास कहावै सोय ॥

वार्ता २१।

एक ने आपसे एकदिन प्रार्थना की कि, आप मुझे उपदेश दीजिये। आपने उसको कहा कि, एक साहिब को याद रख और संसार को भूलजा। एक दूसरे ने भी आपसे उपदेश मांगा। आपने उसे कहा कि, बन्धे को खोल और खुलेको बांध। उस आदमीने कहा मैंने इसका अर्थ नहीं समझा। तब आपने उसको समझाया कि, थैली का मुहं खोल अर्थात् जोकुछ तेरे पासहै उससे परमार्थ कर और-जवान को बांध अर्थात् बहुत बोल ना छोडदे। सत्य है सत्य गुरुने कहाहै।

जिव्हाको दै बन्धनै, बहु बोलना निवार।
सो परखीसे संग करु, गुरुमुख शब्द विचार ॥

इसी प्रकार से सुलतान इब्राहीम अद्धम साहब के विषयमें हजारों वार्ता प्रसिद्धहैं। यहा ग्रन्थ बढजानेके भयसे मेरे पास जितनी वार्त्ताओंका संग्रह है उन सबोंको नहीं लिखसकते। आपकी जीवनीके साथ अधिक लिखने का प्रयत्न किया जायगा।

इति सुलतान इब्राहीम अद्धम साहबका संक्षिप्त
जीवन चरित्र समाप्तः।

इति बोधसागर पूर्वार्द्ध समाप्तमिदं।

